भाषा काव्य सङ्ग्रह।

जिस को

अवध देशीय और जानपदीय शालाओं के नागरी
विद्यार्थियों के उपकारार्थ
श्रीमत्पण्डित मण्डली मण्डन पाण्डित्याखण्ड चण्डिमोद्दण्ड
श्रीयुत कालिन् ब्रौनिङ्ग साहब प्राचीन डैरक्टर वीरेशने
शास्त्रीय निज अत्युद्गार से
रामनगर शालीय द्वितीयाध्यापक धनावली
पुरस्थ सरयूपारीण शुक्लोपनामक श्री पण्डित
महेश दत्त से अनेक कविराजों के ग्रन्थार्णव
मन्थन से सरल सञ्चय कराया

और

श्रीमद्विद्वद्वृन्द शिरोमणि कवीन्द्र कल्पद्रुम परम कारुणिक
श्रीयुत डैरक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन वीरेश
पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की आज्ञानुसार

तीसरी बार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में वाजपेयि
राम रत्न पण्डित के प्रबन्ध से छपा॥
नवम्बर सन् १८७९ ईसवी

सूचीपत्र॥

अङ्कसंख्या	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पङ्क्ति
१	महेशदत्त	प्रारम्भ पुस्तक और गणेश जी की वन्दना॥	२	४
२	तुलसीदास	मित्रता के विषय में॥	३	६
,,	,,	चतुरता और धृष्टता के विषय में॥	४	१६
३	मदनगोपाल	संसार की अनित्यता-का वर्णन॥	३३	२
४	नारायणदास	विद्या की प्रशंसा॥	३५	५
,,	,,	सहायता और श्रम का वर्णन॥	३८	३
२	तुलसी दास	सुसङ्ग की प्रशंसा॥	४६	२
,,	,,	दुर्ज्जनों की प्रकृति का वर्णन	४८	३
५	हुलासराम	स्त्री और पुरुष दोनों की दुष्टता॥	५४	५

२

सङ्ख्या	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
४५	सुन्दरकवि	साङ्ख्यशास्त्रवर्णन॥	२४०	५
४६	नरहरि	शिक्षा॥	२४७	२
४७	हरिनाथ	रीवां के राजा की प्रशंसा॥	२४७	५
४८	रसखानि	विराग॥	२४९	२
४९	गदाधर	तथा॥	२४८	५
१	महेश दत्त	अष्टादश पुराणों की सङ्ख्या॥	२४६	६
,,	,,	विष्णु के २५ अवतारों के नाम॥	२५०	७
,,	,,	बारह मासा॥	२५२	५
२	तुलसीदास	सर्व्व ग्रन्थों की कुछ २ कविता॥	२५५	१
५०	चन्द्रकवि	सेना देखकर परिमालिक का भागना॥	२५८	८

श्री अम्बिकानन्दमूर्त्तयेनमः ॥

काव्यसङ्ग्रह ॥

महेश दत्त कवि ॥

गणेश जी की वन्दना

दोहा ॥

गज मुख सुखकर दुख हरण तोहिं कहौं शिर नाय
कीजे यश लीजे विनय दीजे ग्रन्थ बनाय १

परमेश्वर का धन्यवाद

दोहा ॥

जगदीश्वर को धन्य जिन उपजायो संसार ॥
क्षिति जल नभ पावक पवन करि सृजन को विस्तार २
नृपहि दास दासहि नृपति गर्वित तृण तृणहि प्रधान
जलधि अल्पसर लघु सरहि उदधि करै क्षण मान ३

धनद रङ्क रङ्कहि धनद नीचहि करत महान ॥
क्षमहि महा नहिं नीच जो समरथ कृपा निधान ४
ता गुण गण जो कहि सकै क्षस को जग मति धीर
सृजत अवत अग हरत है विधि हरि रुद्र शरीर ५
वरु महिरज गिनती करै नभ तारे गिनि लेय ॥
विन्दु गिनै वरु वृष्टि के विभु गुण किमि कहि देय ६
प्रतिजन कोटिन मुख मिलै प्रति मुख रसना कोटि
प्रति रसना कोटिन बसैं शेष शारदा मोटि ७
निशि वासर वर्णन करैं जब लग चन्द्र पतङ्ग
पर ईश्वर गुण निकर को कहि न सकैं एक अङ्ग ८
यासों मैं नहिं कहि सकत कैसो है जगदीश ॥
है जैसो ताके चरण प्रणवौं धरि निज शीस ९

गृन्थारम्भ के मास तिथ्यादिका वर्णन ॥

घनाक्षरी ॥

व्योम राम नन्द चन्द्र १९३० सम्वत बलक्षपक्ष
शुचि शुचि मास तिथि सप्तै ७ बुधवार में ॥
भाषा काव्य सङ्ग्रह महेशदत्त विप्र करै ॥
अग्नि नग नाग प्राणी १८७३ ईसासन सार में ।

दूसरी जौलाई श्री कालिन बौनिङ्ग चीर ॥
करुणा शरीर को निदेश धे लिलार में ॥
यामें कवितार्ई न बडाई न छुटाई मोरि ॥
लिख्यो यथा लक्ष्य ग्रन्थ देख्यो जो प्रचार में १०

तुलसीदासजी॥

मित्रता के विषय में॥

चौपाई॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी
तिन्हैं बिलोकत पातक भारी।
निज दुख गिरि सम रज कै जाना
मित्र के दुख रज मेरु समाना ११
जिन के अस मति सहज न आई
ते शठ हठि कत करत मिताई।
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा
गुण प्रगटै अवगुणहिं दुरावा १२
देत लेत मन शङ्क न धरहीं॥
बल अनुमान सदा हित करहीं

विपति काल कर शत गुण नेहा
श्रुति कह सन्त मित्र गुण एहा १३
आगे कह मृदु वचन बनाई॥
पीछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहि गति सम भाई
अस कुमित्र परिहरे भलाई १४
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी॥
कपटी मित्र शूल सम चारी॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे
सब बिधि करब काज मैं तोरे १५

अङ्गद और रावण की बार्ता॥

चतुरता और धृष्टता के विषय में

चौपाई॥

यहाँ प्रात जागे रघुराई॥
पूछा मत सब सचिव बुलाई।
कहहु वेगि का करिय उपाई
जामवन्त कह पद शिर नाई १६

सुनु सर्बज्ञ सकल उर बासी॥
बुधि बल तेज धर्म्म गुण राशी
मन्त्र कहहु निज मति अनुसारा
दूत पठाइय बालि कुमारा १७॥
नीक मन्त्र सब के मन मामा॥
अङ्गद सन कह कृपानिधाना
बालि तनय बल बुधि गुण धामा
लङ्का जाहु तात मम कामा १८
बहुत बुझाय तुम्हें का कहऊँ
परम चतुर मैं जानत अहऊँ॥
काज हमार तासु हित होई॥
रिपु सन करब बत कही सोई १९

सोरठा॥

प्रभु आज्ञा धरि शीस चरण बन्दि अङ्गद कहउ
सोइ गुण सागर ईश राम कृपा जा पर करहु २०
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदर दयउ
अस बिचारि जुबराज तनु पुलकित हर्षित हिये २१

चौपाई॥

बन्दि चरण उर धरि प्रभुताई॥
अङ्गद चल्यउ सबहिं शिर नाई
प्रभु प्रताप उर सहज अशङ्का
रण बांकुरा बालि सुत बङ्का २२
पुर पैठत रावण कर बेटा ॥
खेलत रहा सो हैं गै भैंटा॥
बातहि बात कर्ष बढ़ि आई॥
युगल अतुल बल पुनि तरुणाई २३
त्यहिं अङ्गद कहँ लात उठाई
गहि पद पटक्यो भूमि भ्रमाई
निशिचर निकर देखि भट भारी
जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी २४
एक एक सन मर्म न कहहीं॥
समुझि तासु वध चुप ह्वै रहहीं
भयहु कोलाहल नगर मझारी
आवा कपि लङ्का ज्यें जारी २५

अबधौं काह करैं करतारा।
अति सभीत सब करैं विचारा।
बिन पूंछे मग देहिं बताई॥
जिहि चितवै सो जाय सुखाई २६

दोहा॥

गयो सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कञ्ज
सिंह ठवनि इत उत चितै धीर बीर बल पुञ्ज ३२

चौपाई॥

त्वरित निशाचर एक पठावा।
समाचार रावणहि जनावा।
सुनत वचन बोल्यो दशशीसा
आनहुं बोलि कहां कर कीशा २७
आयसु पाय दूत बहु धाये॥
कपि कुञ्जरहि बोलि लै आये
अङ्गद दीख दशानन बैसा
सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा २८
भुजा बिटप शिर शृङ्ग समाना
रोमावली लता तरु नाना॥

मुख नासिका नयन अरु कानी
गिरि कन्दरा खोह अनुमाना ३०
गयो सभा मन नेकु न मुरा॥
बालि तनय अति बल बांकुरा
उठे सभासद कपि कहं देखी।
रावण उर भा क्रोध विशेषी ३१

दोहा॥

यथा मत्त गज यूथ महं पञ्चानन चलिजाय
राम प्रताप संभारि उर बैठ सभहिं शिर नाय ३२

चौपाई॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर
मैं रघुबीर दूत दशकन्धर॥
मम जनकहि त्वहिं रही मिताई
तव हित कारण आयउं भाई ३३
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती।
शिव विरञ्चि पूज्यहु बहु भांती।
वर पायहु कीन्ह्यो सब काजा॥
जीत्यहु लोकपाल सुरराजा ३४

नृप अभिमान मोह बस किम्बा।
हरि आनेहु सीता जगदम्बा॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा।
सब अपराध क्षमहि प्रभु तोरा॥३५
दसन गहहु तृण कण्ठ कुठारी।
पुरजन सङ्ग सहित निज नारी।
सादर जनक सुता करि आगे॥
यहि विधि चलहु सकल भय त्यागे॥३६

दोहा॥

प्रणतपाल रघुवंश मणि त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनते आरत वचन प्रभु अभय करैंगो तोहिं॥३७

चौपाई॥

रे कपि पोच बोलु सम्भारी॥
मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी॥
कहु निज नाम जनक कर भाई।
केहि नाते मानिये मिताई॥३८
अङ्गद नाम बालि कर बेटा॥
तासों कबहुँ भई त्वहिं भेटा॥

अङ्गद वचन सुनत सकुचाना।
रहा बालि बानर मैं जाना ३९॥
अङ्गद तहीं बालि कर बालक
उपजेहु बंश अनल कुल घालक
गर्भन खस्यो व्यर्थ तुम जाये।
निज मुख तापस दूत कहाये ४०
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई
बिहँसि वचन अङ्गद अस कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई॥
पूछहु कुशल सखा उरलाई ४१
राम विरोध कुशल जस होई॥
सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई॥
सुनु शठ भेद होय उर ताके॥
श्री रघुवीर हृदय नहिं जाके ४२

दोहा॥

हम कुल घालक सत्य तुम कुल पालक दशशीस
अन्धउ बधिर न कहहिं अस श्रवण नयन तव बीस ४३

चौपाई॥

शिव विरञ्चि सुर मुनि समुदाई।
चाहत जासु चरण सेवकाई॥
तासु दूत हैं हम कुल बोरा॥
ऐसी मति उर विहरु न तोरा ४४
सुनि कठोर बाणी कपि केरी॥
कहत दशानन नयन तरेरी॥
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं
नीति धर्म सब जानत अहऊं ४५
कह कपि धर्म शीलता तेरी॥
हमहुं सुना कृत पर त्रियचोरी
देखहु नयन दूत रखवारी
बूड़ि न मरहु धर्म व्रतधारी ४६
नाक कान बिन भगिनिनिहारी
क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी
धर्म शीलता तव जग जागी।
पावा दर्श हमहुं बड़ भागी ४७

दोहा ॥

जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि शठ बिलोकु मम बाहु
लोकपाल बल बिपुल शशि ग्रसन हेतु जिमि राहु ४८
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन पर करि बास ॥
शोभित भयो मराल इव शम्भु सहित कैलास ४९

चौपाई ॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अङ्गद ।
मोसन भिरहि कौन योधा बद ॥
तव प्रभु नारि बिरह बल हीना ।
अनुज तासु दुख दुखित मलीना ५०
तुम सुग्रीव कूल द्रुम दोऊ ॥
अनुज हमार भीरु अति सोऊ
जाम्बवन्त मन्त्री अति बूढ़ा ॥
सो किमि होय समर आरूढ़ा ५१
शिल्प कर्म जानत नल नीला
है कपि एक महा बल शीला ॥
आवा प्रथम नगर ज्यहि जारा
सुनि हँसि बोल्यहु बालिकुमारा ५२

सत्य वचन कहु लिखि परनाहा
साँचहु कीन्ह जीवा धुर दाहा॥
रावरा नगार आल्प कोपे रहई।
सुनि रास वचन सत्य को कहई ५२
जो आनि सुभट सराहहु रावन।
सो सुग्रीव केर लघु धावन॥
चलै बहुत सो वीर न होई॥
पठवा खबरि लेन हम सोई ५४

दोहा॥

सत्य नगर कपि जारेउ बिन प्रभु आयसु पाय
फिरि न गयउ सुग्रीव पहँ त्यहि भय रहा लुकाय ५५
सत्य कहसि दशकंठ सब मोहिं न सुनि कछु कोहि
कोउ न हमरे कटक अस तुम सन लरत जो सोह ५६
प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति असि आहि
जो मृगपति बधे मेढुकहि भलो कहै को ताहि ५७
यद्यपि लघुता राम कहँ तोहिं बधे बड़ दोष॥
तदपि कठिन दशकंठ सुनु क्षत्रिजाति कर रोष॥५८

हँसि बोल्यो दशमौलि तब कपि कर बहु गुण एक
जो प्रति पालै तासु हित करै उपाय अनेक ५९

चौपाई।।

धन्य कीश जो निज प्रभु काजा
जहँ तहँ नाचहिं परि हरि लाजा
नाच कूद कर लोक रिझाई।।
पति हित करहिं धर्म निपुणाई ६०
अङ्गद स्वामि भक्त तव जानी।
प्रभु गुण कस न कहसि यहि भाँती
मैं गुण ग्राहक परम सुजाना।
तव कटु बचन करौं नहिं काना ६१
कह कपि तव गुण ग्राहक ताई
सत्य पवन सुत मोहिं सुनाई।।
बन विध्वंसि सुत बधि पुर जारा
तदपि न त्यहिं कछु कृत अपकारा ६२
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई
दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई।।

देखउँ आयजो कछु कपि भाषा
तुम्हरे लाज न रोष न माखा ॥३॥

दोहा॥

वक्र उक्ति धनु वचन शर हृदय दह्यो रिपु कीश।
प्रति उत्तर सन सिन्ह मनहु काढ़त भट दश शीस ॥४॥

चौपाई॥

जो असि मति पितु खायहु कीशा।
कहि अस वचन हंसा दश शीसा।
पितहि खाय अब खात्यों तोही
अब हीं समुझि परा कछु मोहीं ॥५॥
बालि विमल यश भाजन जानी॥
हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
कहु रावण रावण जग केते॥
मैं निज श्रवण सुने सुनु तेते ॥६॥
रावण एक महाबल गर्ब्बा॥
जीतन चल्यौ सुरासुर सर्ब्बा॥
सागर उतरि पार सो गयऊ॥
नारिवृन्द सो देखत भयऊ ॥७॥

तिन सन कहिसि पतिल पहँ जाहू॥
कहु सब आयहु निशिचर नाहू
तब हम तिन्है जीति सङ्ग्रामा॥
ले जैहौं तुम को निज धामा ६९
सुनत वचन सब उठि रिसानी।
धाय चरण गहि गगन उड़ानी।
गई दूरि धरि धरि भक झोरा।
डारिसि सिन्धु मध्य अति घोरा६९

दोहा॥

गयो अगाध अन्धेन हु मरे न बिप्र प्रसाद॥
सावधान उठि चल्यउ पुनि हिय न हर्ष विषाद ७०

चौपाई॥

सब रावण की कहिं कहानी॥
जीति चल्यो अपिहि अभिमानी
गयो निकट अति शील न मरेऊ
कपिल जात विकल अथ फिरेऊ७१
बलि जीतन सब गयो पताला॥
रावण बांधे शिशुन ह्य शाला॥

खेलहिं बालक मारहिं जाई॥
दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई ७२
एक बहोरि सहस भुज देखा॥
धाय धरा जन जन्तु विशेषा॥
कौतुक लागि भवन लै आवा
सो पुलस्त्य मुनि जाय छुड़ावा ७३
बहु प्रकार मुनि ताहि सिखावा
गया स्वपुर पर लाज न आवा।
अति निर्लज्ज मैं जानत ताही
तामस को अपमान लहाही ७४

दोहा॥

एक कहत मोहिं सकुच अति रह्यो बालिकी कांख
तिन महं रावण तै कवन सत्य कहेत जि माख ७५

चौपाई॥

सुनु शठ सोइ रावण बल शीला
हर गिरि जानु जासु भुज लीला

जानु उमापति जासु सुराई ॥
पूज्यो ज्यहि शिर सुमन चढ़ाई ७६
शिर सरोज निज करन उतारी ॥
पूज्यौं अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुज विक्रम जानहिं दिक पाला।
शठ अजहूं जिन के उर शाला ७७
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई॥
जब जब भिरउं जाय बरिआई
जिन के दशन करालन फूटे ॥
उर लागत मूलक इव टूटे ७८
जासु चलत डोलत इमि धरणी
चढ़त मत्त गज।जिमि लघु तरणी
सोइ रावण जग विदित प्रतापी।
सुने न श्रवण अलीक प्रलापी ७९

दोहा॥

त्यहि रावण कहं लघु कहसि नर कर करसि बखान
रे कपि बर्ब्बर खर्ब्ब खल अब न जान अब जान ८०

चौपाई॥

मुनि अङ्गद सकोप कह बानी।
बोलु सँभारि अधम अभिमानी।
सहस बाहु भुज गहन अपारा॥
दहन अनल कुल जासु कुठारा ८१
जासु परसु सागर खर धारा॥
बूड़े नृप अगणित बहु बारा॥
तासु गर्ब्ब ज्यहि देखत भागा।
सो नर किमि दश कण्ठ अभागा ८२
राम मनुज कसरे शठ बङ्गा॥
धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा॥
पशु सुर धेनु कल्प तरु रूखा।
अन्न दान अरु रस पीयूषा ८३
बैनतेय खग अहि सहसानन
चिन्तामणि की उपल दशानन
सुनु मतिमन्द लोक बैकुण्ठा॥
लाभ कि रघुपति भक्ति अकुण्ठा ८४

दोहा॥

सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुरजारि
कसरे शठ हनुमान कपि गयो जो तव सुत मारि ८५

चौपाई॥

सुनु रावण परि हरि चतुराई॥
भजसि न कृपासिन्धु रघुराई॥
जो खल भयसि राम कर द्रोही।
ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ८६
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला।
राम वैर होइहि अस हाला॥
तव शिर निकर कपिन के आगे
परिहैं धरणि राम शर लागे ८७
ते तव शिर कन्दुक इव नाना
खेलहिं भालु कीश चौगाना।
जबहि समर कोपहिं रघुनायक
छूटहिं अति कराल बहु शायक ८८
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा
अस विचारि भज राम उदारा॥

सुनत बचन रावण फिर जरा ॥
जरत महानल मह्नं घृत परा ८९

दोहा ॥

कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्ध शक्रारि
मम बल श्रवण सुन्यहि शठ जित्यों चराचर भारि ९०

चौपाई ॥

शठ शाखा मृग जोरि सहाई
बांध्यो सिन्धु यहै प्रभुताई ॥
लांघहिं खग अनेक बारीशा
शूर न होहिं सो सुनु शठ कीशा ९१
मम भुज सागर जल बल पूरा
जहं बूडे सुर नर बहु शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा।
को अस बीर जो पावै पारा ९२
दिक पालन पै नीर भरावा ॥
भूप सुयश खल मोहिं सुनावा

जो पै समर सुभट तव नाथा।
पुनि पुनि कहसि जासु गुण गाथा ९३
तो बसीठ पठवा केहि काजा॥
रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा।
हर गिरि मथन निरखि मम बाहू
पुनि कपि धारु निज प्रभुहि सराहू ९४

दोहा॥

सूर कवन रावण सरिस स्वकर काटि निज शीस
हुंत अनल महं बार बहु हर्षित साखि गिरीश ९५

चौपाई॥

जरत विलोक्यउं जबहिं कपाला
विधि के लिखे अंक निज भाला
नर के कर आपन बध बांची॥
हंस्यौं जानि विधि गिरा असांची ९६
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे
लिखा विरंचि जरठ मति भोरे।

आन वीर बल शठ मम आगे॥
पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे ९७
कह अङ्गद सलज्ज जग माँहीं
रावण तोहिं समान कोउ नाहीं
लाज वन्त तव सहज स्वभाऊ
निज गुण निज मुख कहै न काऊ ९८
शिर अरु शैल कथा चित रही।
ताते बार बीस तें कही॥ ॥
सो भुज बल राख्यो उर घाली
जीत्यो सहस बाहु बलि बाली ९९
सुनु मति मन्द देह अब पूरा॥
काटे शीस न होइ हि शूरा॥
इन्द्र जालि कहँ कहिय न वीरा
काटै निज कर सकल शरीरा १००

दोहा॥

जरहिं पतङ्ग मोह वश भार बहैं खर वृन्द
ते नहिं शूर कहा वहीं समुझि देखु मतिमन्द १०१

चौपाई॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करई
सुनु मम वचन मान परिहरई।
दशमुख मैं न बसीठी आयो
अस विचारि रघुबीर पठायो १०२
बार बार अस कह्यो कृपाला
नहिं गजारि यश बधे शृगाला
मन महँ समुझि वचन प्रभु केरे
सह्यो कठोर वचन शठ तेरे १०३
नहिं तो करि मुख भञ्जन तोरा
लै जात्यौं सीतहि बर जोरा॥
जाना तव बल अधम सुरारी।
सूने हरि आनी परनारी १०४
तैं निशिचर पति गर्व्व बहूता।
मैं रघुपति सेवक कर दूता॥
जो न राम अपमानहि डरऊँ।
त्वहि देखत अस कौतुक करऊँ १०५

दोहा॥

तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ।
तव युवतीन्ह समेत शठ जनक सुतै लै जाउँ॥१०६॥

चौपाई॥

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई।
मुये बधे नहिं कछु मनुसाई॥
कौल काम बश कृपण विमूढ़ा।
अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा॥१०७॥
सदा रोगबश सन्तत क्रोधी॥
विष्णु विमुख श्रुति सन्त विरोधी
तनु पोषक निन्दक अघ खानी।
जीवत शव सम चौदह प्रानी॥१०८॥
अस विचारि खल बधौं न तोही
अब जनि रिस उपजावसि मोही।
सुनि सकोप कह निशि चर नाथा।
अधर दशन डसि मींजत हाथा॥१०९॥
रे कपि अधम मरण अब चहसी
छोटे बदन बात बड़ि कहसी॥

कटु जल्पसि शठ बुधि बल जाके
बल प्रताप बुधि तेज न ताके ११०

दोहा॥

अगुण अमानि विचारि त्यहि पिता दीन्ह बनवास
सो दुख अरु युवती विरह पुनि निशि दिन ममत्रास १११
जिन के बल कर गर्व्व खाहिं ऐसे मनुज अनेक
खाहिं निशाचर दिवस निशि मूढ़ समुझ तजि टेक ११२

चौपाई॥

जब त्यैं कीन राम के निन्दा॥
क्रोधवन्त तब भयो कपिन्दा॥
हरि हर निन्दा सुनैं जे काना।
होय पाप गो घात समाना ११३
कट कटाय कपि कुञ्जर भारी॥
दो भुज दण्ड तमकि महि मारी
डोलत धरणि सभा सद खसे॥
चले भागि भय मारुत ग्रसे ११४
गिरत दशानन उठ्यो संभारी
भूतल परे मुकुट घट चारी॥

कछु त्यैं लै निज शिरन समारे ॥
कछु अङ्गद प्रभु पास पवारे ११५
आवत मुकुट देखि कपि भागे
दिन हीं लूक परन किधि लागे ॥
की रावण करि कोप चलाये ॥
कुलिश चारि आवत अति धाये ११६
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू ।
लूकन अशनि केतु नहिं राहू ॥
ये किरीट दशकन्धर केरे ॥ ॥
आवत बालि तनय के प्रेरे ११७ ॥

दोहा ॥

तदपि पवन सुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास ॥
कौतुक देखहिं भालु कपि दिन कर सरिस प्रकाश ११८
वहाँ सुकोपि दशानन सब सन कहत रिसाय ॥
धरहु कपिहि धरि मारहू सुनि अङ्गद गुतु काय ११९

चौपाई ॥

कहा कोपि दशकन्ध रिसाई ॥
धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥

एहि विधि वेगि सुभट सब धावहु
खाउ भालु कपि जहँ तहँ पावहु १२०
मर्कट हीन करहु महि जाई॥
जिअत धरहु तपसी द्वौ भाई॥
पुनि सकोप बोल्यो युवराजा॥
गाल बजावत तोहिं न लाजा १२१
मरु गल काटि निलज्ज कुल घाती
बल विलोकि बिदरत नहिं छाती
रे त्रिय चोर कुमारग गामी॥॥
खल मलराशि मन्दमति कामी १२२
सन्निपात जल्पसि दुर्व्वादा॥
भयसि कालवश खल मनुजादा
याको फल पावहुगे आगे॥
बानर भालु चपेटन लागे १२३॥
राम मनुज बोलत अस बानी।
गिरे न तव रसना अभिमानी।
गिरिहै रसना संशय नाहीं॥
शिरन समेत समर महिं माहीं १२४

सोरठा ॥

सो नर क्यों दशकन्ध बालि बध्यो जिन एक शर
बीसहु लोचन अन्धधिक तव जन्म कुजाति जड़ १२५
तव शोणित की प्यास तृषित राम शायक निकर ॥
तज्यों तोहिं त्यहि त्रास कटु जल्पसि निश्चर अधम १२६

चौपाई ॥

मैं तव दशन तोरवे लायक ॥
आयसु मोहिं न दीन रघुनायक
असरिस होत दशों मुख तोरौं ।
लङ्का गहि समुद्र महँ बोरौं १२७
गूलर फल समान तव लङ्का ॥
बसहिं मध्य जनु जन्तु अशङ्का ॥
मैं बानर फल खात न बारा ॥
आयसु दीन न राम उदारा १२८
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ॥
मूढ़ सिखे कहँ बहुत झुठाई ॥

चालि कबहुं अस गाल न मारा॥
मिलि तपस्विनते भयसि लवारा१२९
सांचो मैं लवार भुज बीहा॥
जो न उपारौं तव दश जीहा॥
राम प्रताप समुझि कपि कोपा॥
सभा मांझ प्रण करि पद रोपा१३०
जो मम चरण सकहु शठ टारी।
फिरहिं राम सीता मैं हारी॥
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा॥
पद गहि धरणि पछारहु कीशा१३१
इन्द्रजीत आदिक बलवाना॥
हर्षि उठे जहं तहं भट नाना॥
झपटहिं बलु करि विपुल उपाई
पद न टरै बैठें शिर नाई १३२
पुनि उठि झपटैं सुर आराती॥
टरै न कीश चरण यहि भांती।
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी॥
मोह विटप नहिं सकहिं उपारी १३३

दोहा॥

भूमि न छांड़त कपि चरण देखत रिपु मद भाग।
कोटि विघ्न जिमि सन्त कहँ तदपि नीति नहिं त्याग॥३४

चौपाई॥

कपि बल देखि सकल हिय हारे
उठा आप युवराज प्रचारे॥
गहत चरण कह बालि कुमारा
मम पद गहे न तोर उबारा॥३५॥
गहसि न राम चरण शठ जाई॥
सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयउ तेज हत श्री सब गई॥
मध्य दिवस जिमि शशि सोहई॥३६
सिंहासन बैठा शिर नाई॥
मानहुँ सम्पति सकल गँवाई॥
जगदाधार प्रणत पति रामा॥
तासु विमुख किमि लहै विश्रामा॥३७
उमा राम कर भृकुटि विलासा॥
होय विश्व पुनि पावै नाशा॥

तृणते कुलिश कुलिश तृण करहीं
तासु दूत प्रण कहु किमि टरहीं १३८
पुनि कपि कहा नीति विधि नाना
मानत नाहिं काल नियराना ॥
रिपु मद मथि प्रभु सुयश सुनाया
यह कपि चला बालि नृप जाया १३९
अबहीं सुख का करौं बड़ाई ॥
हतिहौं खेत खेलाय खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा ।
सो सुनि रावण भयो दुखारा १४०
यातुधान अङ्गद बल देखी ॥
भय व्याकुल सब हृदय विशेषी
कहहिं विचारि सकल मन माहीं
रावण कोन कार्य्य भल नाहीं १४१

दोहा ॥

रिपु बल धर्षि हर्षि हिय बालि तनय बल पुञ्ज ॥
सजल नयन तनु पुलक अति गहे राम पदकञ्ज १४२

मदन गोपाल कवि

संसार की अनित्यता का वर्णन॥

दोहा॥

नृपतिय शोक विनाश हित कह्यो ऋषभ वैराग
सुने जाहिके नरन को मोह जनम सब भाग २

ऋषभ वाक्य॥

चामर छन्द॥

कौटि भर्त्य कौन हेतु रोय आँख फोरई॥
आदि कौन भो कहाँ मरो सु कौन जोरई।
जन्म काल ज्वान वृद्ध मृत्यु देह धर्मई।
तोय फेन तुल्य नन्नु जानि मोह कर्मई २
विष्णु मायते भये गुणो जु सत्व आदि ज्वै।
सृष्टि सर्व्व है रची तिन्हों जु लोक लोक है।
सत्व भूत देवता रजो मनुष्य मानिये॥
जौन गाय पक्षि कीट नाम मादि जानिये ३

वासना अधीन जीव जाति सर्व संङ्गहे ॥
पुण्य पाप कर्म्म ते सुखौ दुखौ सबै लहे ॥
काल्यमान आयु जासु तौन देव नापई ॥
सर्व दोष रूह देह को मनुष्य राखई ४
देह जन्म देखि हर्ष मृत्यु में न रोइये ॥
है न आदि नाश जाय फेन तुल्य जोइये
गर्भनाश होत कोय बाल ज्वान बूढ़कै
पूर्व कर्म्म जासु जौन तौन भोग गूढ़कै ५
कर्म्म है सलङ्गने अनित्य देह सर्वदा ॥
याहि ते न शोचु मातु शोचु है न पुत्रदा ॥
नित्य स्वप्न कौन को जु इन्द्र जाल नसही ।
देहयोग मेह छाँह झूठ जानु वैसही । ६॥
आपने गये जु जन्म कोटि कोटि के तबै ।
कौन माय कौन तात कन्यका नु कौन कै ।
तौन पूत तौन बाप है कहाँ कहाँ सबै ॥
याहि जानि पुत्र शोक छोडु मोह को अबै ७
भूमि तेज तोय वायु व्योम भूत पाँच को ॥
चर्म्म रक्त मांस मेद अस्थि मज्ज वीजज्यों

हैं शरीर में सबै मलादि मूत्र विष्ठ ज्यों।
रानि शोक मोह छोडु जानि पुत्र वादि त्यों ८
मन्त्र तन्त्र औषधादि मृत्यु जीत होत कै
तौ सबै सुजान लोग लोक तेन जात रवै
मृत्यु एक की तु आजु और मृत्यु आन की
यो विचार चित्त में कह्यो शिवा शिवान की ९
शम्भु की कथा सुधा पियै जो चित्त शोधिकै
लोक भोग मद्य छोड़ि होय शम्भु बोधिकै।
राज पत्नि यत्न छोडु शोक जो कुतर्क तें॥
गौरि नाथ तें सनाथ होहु भाजि नर्क तें १०

दोहा॥

यहि विधि योगी नृपतियहि समुभायो कहि ज्ञान
बोली सो तब ताहि सों पद छ्वै जानि महान ११

नारायण दास कवि॥

विद्या की प्रशंसा॥

दोहा॥

अजर अमर की भांति है विद्या धनहिं बढ़ाव॥
मनहुं मीचु चोंटी गहे देत विलम्ब न लाव १॥

विद्याधन सब धनन से सन्त कहत सरदार ॥
मोल बड़ो नहिं घटत घर दिन दिन होत उदार २
विद्या देत विनीत करि विनय बड़ाई देत ॥
पहुंचत जात धन पाइये दान भोग सुख हेत ३
दारुण नृपति समुद्र सों विद्या नदी समान ॥
ले पहुंचावे नीच हू लाभ भाग्य परमान ४
विद्या नदी नरीश नृप निचहु मिलावे हाल
दारुण दानि दया करै होय जो भाग्य कपाल ५
जासों सब संशय मिटे ज्ञान देखा सो देखु ॥
पढ़िबो पोढ़ो आंखि है अपढ़ अन्धकारि लेखु ६
सोई भो जाके भये ऊंच होय निज गोत ॥
जनन मरण संसार में मुये कोन फिरि होत ७
एके साधु पढ़ा भलो पूत सिंह सरदार ॥ ॥
कुल उजियारो चन्द्र ज्यों करे धरे शिर भार ८
गुणी गनत जाको नहीं लीक अर्द्ध अगलोनि
पुत्रवती सुत ताहि से होत सो बन्ध्या कोनि ९
दान तपस्या शूरता विद्या लाभ बखानि ॥
भयो न जाके पूत सो मातु मूत के जानि ॥ १०

अति दुख करि लघ जिन कियो तीरथ राज प्रयाग
ताको सुन धन धर्म्मसों सदा रहै बड़ भाग ११

चौपाई ॥

अर्ज्जन करत आप अल माई
ताको सम्पति रहो न जाई ॥ ॥
पूर्व जन्म कीन्हों जो धर्म्मा ॥
सोई भाग्य कहावे कर्म्मा ॥१२
ताते भाग्य चही अनुकूला ॥ ॥
यत्न करी पुरुषारथ मूला ॥
ज्यों माटी करता कर लेई ॥
कीन्हें चहै सोई कारि देई १३
यह उपखान लोग सब गावे
जैसा करै सो तैसा पावे ॥
यासों विद्या पढ़िये भाई ॥
बिन श्रम श्रम फल कहूँ किन पाई १४

दोहा ॥

पुरुष सिंह जो उद्यमी लक्ष्मी ताकी चेरि ॥
भाग्य भरोसे जे रहैं कुपुरुष भाषैं टेरि १५

भाग्य भरोसे मन्द करि करु पौरुष तजि रोष॥
यत्न करे जो ना मिलै तउ करै निर्दोष २६
काक ताल के न्याय सों निधि आगे जो होय
भाग्य भरोसे क्यों रहै हाथ पसारो लोय २७
मात पिता वैरी भये जिन न पढ़ाये बाल।
हंस समाज गये कहो वक के कौन हवाल २८
काञ्चन सङ्गति काँच ज्यों मरकत मणि द्युति होय
त्योंही सज्जन साथ तें मूरख पण्डित होइ २९
नीच साथ बुधि नीच है सम सों रहै समान॥
बड़े साथ दिन दिन बढ़ै पण्डित कहत प्रमान ३०
काव्य शास्त्र के अर्थ में पण्डित बितवत काल
व्यसन नींद अरु कलह में मूरख रहै बिहाल ३१
पण्डित सुखसों करत हैं दान धर्म के भोग॥
प्रति दिन मूरख लहत हैं सहस शोक भय रोग ३२
यज्ञ दान तप अध्ययन सत्य क्षमा धृति सोय॥
अरु अलोभ गनि धर्म ये आठ भाँति ते होय ३३
अंत होत जल विन्दु घट क्रम क्रम सुनहु सुजान
विद्या औ धन धर्म की उपमा यहै निदान॥ ३४

बालहु ते सिखि लीजिये युक्ति कहत जो होय
रवि को जहां प्रकाश नहिं दीप प्रकाशत लोय २५

महायत्न और श्रम का वर्णन

दोहा॥

शत्रु पक्ष जाने बिना देह निदरि मति झारि
एक टिटिहिरी समुद्र को व्याकुल कीन्हो मारि २६

चौपाई॥

पूंछी सिंह कथा है कैसी॥
दमनक कही सुनो है जैसी॥
समुद्र निकट टिटिहीरी जोरी॥
बसे बसैं यद्यपि बहुतेरी॥ २७
आव निकट वर्षा को काला॥
पति सों कह्यो टिटिहिरि हाला॥
वर्षा योग्य देखु कहुं ठौरा॥॥
नीको लागे जहं कहुं औरा २८
टिटिहा कही जाउ ले कहां॥
यहि ते नीक और है जहां॥

कह्यो टिटिह्हरी सुनिये नाथा
बार बार घर बूडैं पाथा २८
सो पुनि निज नारी सों कही ॥
अपनी शक्ति जनावा चही ॥
भामिनि सुनु अपने घर रहऊ
हौं काहू सों कछु नहिं कहऊं २७
करे सिन्धु विग्रह बिन काजा ॥
तो फिरि हम हूं करब इलाजा ।
बिहंसि बिहंसि सो पति सो कही
नाथ बात नहिं ऐसी चही ३१
सागर सों तुम सों है केतो ॥
अन्तर तुम जानत हो तेतो ॥
यद्यपि अन्तर बहु है प्यारी ॥
खगपति करहिं सहाय हमारी ३२
तब विश्वास वचन मन दीन्हें
वाही ठौर परस्यो कीन्हें ॥
तब समुद्र अण्डा हरि लीन्हें ।
देखौं शक्ति यहै मन कीन्हें ३३

तब दुख मानि टिटिहिरी रोई
नाथ जलधि सम्पति सब खोई
कस पंरा तब हीं मैं कही ॥
तुम फिरि बात न राखी सही ३४
टिटिहा कह्यो तु जनि डरु प्यारी
यह कहि आपुहि बात विचारी
सब पक्षिन कर मेला कीन्ह्यो
गरुड़हि की सेवा मन दीन्ह्यो ३५
गरुड़ गयो अपने प्रभु पास।
जोन करे वरुणालय वासा ॥
प्रलय सृष्टि अति पालन हेता
बांधी धर्म्म कर्म्म सों सेता ३६
नारायण करुणा मय जोना।
ताहि छुड़ा दूसरा कौना ॥
कुम्भज ऋषि कहं आयसु दीना
ऋषितब गमन उदधि पहं कीना ३७
देखा टिटिहि टिटिहिरी आई।
चोंचें भरि भरि पानी लाई॥

चोंचन सों बालू ले जाई॥
डारैं समुद्र मध्य तब आई ३८

दोहा॥

ऋषि पूंछी तब टिटिहिरीहि कहा कलतुम रोय
कही टिटिहिरी हरि लियो अण्ड हमारे सोय ३९

चौपाई॥

तातें क्रोधहि कियो अपारा॥
समुद्रहि पाटि करब हम क्षारा।
जब आइहि यह समुद्र मुरवाई
तब हमरे जिय अनंद बधाई ४०
कुम्भज कही जलधि गहि राई
कब लगि याको पटिहौ धाई
सुनु ऋषि हमरे जिय की बाता
जो २ जन्म धरब हम ताता ४१
कौनिउँ योनि म जन्म हमारा।
पाटब समुद्र न और विचारा॥
और न काज करब हम छांटब
जन्महिं भये समुद्रहि पाटब ४२

समुद्र केर जब होइहि नाशा।
तब हमरे जिय होय सु पासा।
ये हमरे सब बालक खोये॥
बहु अपराध किये दुख बोये ४३
जब याको जर राखब नाहीं,
तब हम सुख होइहि मन माहीं
कुम्भज ऋषि तब कियो विचारा
पक्षिन को दुख बड़ो अपारा ४४
तब कुम्भज ऋषि आचमन कीना
सबै समुद्र शोषि तब लीना॥
सागर व्याकुलता अति भयऊ
सागर जीव सबै अकुलयऊ ४५
तब समुद्र आइा सब आना।
पीड़ित मच्छ कच्छ अकुलाना।
जलधि आय पावक ले दीन्ह्यो,
टिटिह टिटिहिरी आदा लीन्ह्यो ४६
सुखित भये मुनि अस्तुति कीन्ह्यो
नाथ हमें बहुतै दुख दीन्ह्यो॥

तब कुम्भज ऋषि पूंछी लीना॥
क्रोध तुम्हार गयो की पीना ४७
महाराज अब सब सुख भेंटा॥
जन्म जन्म कर दुख सब मेंटा॥
इतना सुनि कुम्भज ऋषि बोले
बचन सुधा सम अतिहि अमोले ४८

दोहा॥

अब तुम जाय यहाँ ते दूरि करौ कहुं बास॥
जहां न यह जल पहुंचे तहां तुम्हार सुपास ४९

चौपाई।

टिटिहि टिटिहिरिहि अस्तुति कीन्हीं,
जय अगस्त मुनि आज्ञा लीन्हीं
नमस्कार करि दूनो चले॥
शावक अपने कर धरि भले ५०
जायु दूर तिन्ह कीन्हों बासा।
जहां सुखहि कर अहै निवासा

पुनि सागर तब अस्तुति कीन्ही।
विजय भूमि पश्चिम कहँ दीन्ही ५१
जय कुम्भज ऋषि मुख के दाता।
अब जल छोडि देहु तुम ताता
नाक जरा अब व्याकुल मरता॥
दीन दयालु अनुग्रह करता ५२
सुनि अस्तुति तब छोड्यो पानी।
कुम्भज दीन दयालु सु ज्ञानी
भरेउ समुद्र सुखित सब भयऊ
जीवन केर दुःख सब गयऊ ५३
जलचर तब सब करहिं कलोला।
एक एक करि जय जय बोला॥
तब कुम्भज ऋषि गमनत भयऊ
दुःख समुद्र केर सब गयऊ ५४

दोहा॥

याही ते हौं कहत हौं अपनी अङ्ग विचार॥
तेजहि सों नहिं कीजिये निर्बलहू सों मार ५५

तुलसी दास जी ॥
सुसङ्ग की प्रशंसा॥
चौपाई॥

सुजन समाज सकल गुण खानी
करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥
साधु चरित शुभ सरिस कपासू
निरस बिशद गुण मय फल जासू १
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा॥
बन्दनीय ज्यहि जग यश पावा
मुद मङ्गल मय सन्त समाजू॥
ज्यों जग जङ्गम तीरथ राजू २
राम भक्ति जहँ सुर सरि धारा॥
सरसति ब्रह्म विचार प्रचारा॥
बिधि निषेध मय कलि मल हरणी
कर्म कथा रबि नन्दिनि बरणी ३
हरि हर कथा बिराज त्रिबेनी॥
सुनत सकल मुद मङ्गल देनी॥
बट बिश्वास अचल निज कर्म्म

तीरथ राज समाज सुधर्म्मा ४
सबहि सुफल सब दिन सब देशा।
सेवत सादर शमन कलेशा॥
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ
देय सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ५

दोहा॥

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ६

चौपाई॥

मज्जन फल देखिय ततकाला।
काक होहिं पिक बकहु मराला॥
सुनि आश्चर्य करै जनि कोई॥
सत सङ्गति महिमा नहिं गोई ७
बालमीकि नारद घट योनी॥
निज निज मुखन कही निज होनी
जलचर थलचर नभचर नाना।
जे जड़ चेतन जीव जहाना ८॥
मति कीरति गति भूति भलाई

जब ज्यहि यत्न जहाँ जिन पाई॥
सो जानब सत सङ्ग प्रभाऊ॥
लोकहु वेद न आन उपाऊ ६
बिन सतसङ्ग विवेक न होई॥
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥
सत सङ्गति मुद मङ्गल मूला॥
सोइ फल सिधि सब साधन फूला १०
शठ सुधरहिं सत सङ्गति पाई॥
पारस परशि कुधातु सुहाई॥
विधि वश सुजन कुसङ्गति परहीं।
फणिमणि सम निज गुण अनुसरहीं ११
विधि हरि हर कवि कोविद बानी
कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मोसन कहि जात न कैसे॥
शाक बणिक मणि गुण गण जैसे १२

दोहा॥

बन्दों सन्त समान चित हित अनहित नहिं कोय॥
अञ्जलिगत शुभ सुमन जिमि सम सुगन्ध कर दोय ३

सन्त सरल चित जगत हित जानिस्वभाव सनेहु
बाल विनय सुनि करि कृपा राम चरण रति देहु ४

दुर्ज्जनों की प्रकृति का वर्णन॥

चौपाई॥

बहुरि बन्दि खल गण सति भाये
जो विन कार्य्य दाहिने बांये॥
परहित हानि लाभ जिन केरे
उजरे हर्ष विषाद बसेरे ५
हरि हर यश राकेश राहु से॥
पर अकार्य्य भट सहस बाहु से
जे पर दोष लखहिं शत साखी
परहित घृत जिनके मन माखी ६
तेज कृशानु रोष महिषेशा॥
अघ अवगुण धन धनिक धनेशा॥
उदय केतु सम हित सब ही के॥
कुम्भकर्ण सम सोवत नीके ७
पर अकार्य्य लगि तनु परिहरहीं

जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं
बन्दौं खल जस शेष सरोषा॥
सहस बदन बरणैं पर दोषा १८
पुनि प्रणवौं पृथु राज समाना॥
पर अघ सुनै सहस दश काना॥
बहुरि शक्र सन विनवौं तेहीं॥
सन्तत सुरा नीक हित जेही १९
वचन बज्र जेहि सदा पियारा
सहस नयन पर दोष निहारा॥
पर अकार्य्य लगि तनु परिहरहीं
पर सम्पति लखि मनु भरि जरहीं २०

दोहा॥

उदासीन अरि मित्र सब सुनत जरैं खल रीति
जानि पाणि युग जोरि करि विनती करौं सप्रीति २१

चौपाई॥

मैं अपनी दिशि कीन्ह निहोरा
तिन निज ओर न लाउब भोरा

बायस पालिय अति अनुरागा।
होय निरामिष कबहुं कि कागा २२
बन्दौं सन्त असज्जन चरणा॥
दुखप्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं॥
मिलत एक दारुण दुख देहीं २३
उपजहिं एक सङ्ग जल माहीं।
जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू॥
जनक एक जग जलधि अगाधू २४
भल अनभल निज निज करतूती
लहत सुयश अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू॥
गरल अनल कलि मल सरि ब्याधू २५
गुण अवगुण जानत सब कोई।
जो ज्यहि भाव नीक त्यहि सोई
सुधहि बड़ी गुण ग्राहकताई
नीजपर अवगुण अरु कुटिलाई २६

सोरठा॥

भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच॥
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच २७

चौपाई॥

खल गह अगुण सन्त गुण गाहा
उभय अपार उदधि अवगाहा।
त्यहि ते कछु गुण दोष बखाने
संग्रह त्याग न बिन पहिचाने २८
भले पोच सब विधि उपजाये
गनि गुण दोष वेद बिलगाये।
कहहिं वेद इतिहास पुराना।
विधि प्रपञ्च गुण अवगुण साना २९
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती।
साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊंच औ नीचू॥
अमिय सजीवन माहुर मीचू ३०
माया ब्रह्म जीव जग दीशा॥

लक्ष्म अलक्ष रङ्क अवनीशा।
काशि मगह सुरसरि कर्म्मनाशा
मरु मारव महिदेव गवासा ३१
स्वर्ग नरक अनुराग विरागा।
निगमागम गुण दोष विभागा
कहँ लग बरणौं विधि करतूती
गुण अवगुण हैं जाहि विभूती ३२

दोहा॥

जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन्ह करतार॥
सन्त हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार ३३

चौपाई॥

अस विवेक जो देहिं विधाता
तब तजि दोष गुणहिं मन राता
काल स्वभाव कर्म्म बरिआई
भल्यउ प्रकृतिवश चुक भलाई ३४
सो सुधारि हरि जन जिमि लेहीं
दलि दुख दोष विमल यश देहीं

खलहू करैं भल पाय सुसङ्गू।
मिटहिं न मलिन स्वभाव अभङ्गू ३५
करि सुवेष जग वञ्चक जेऊ।
वेष प्रताप पूजियत तेऊ॥
उघरहिं अन्त न होय निबाहू।
कालनेमि जिमि रावण राहू ३६
किये सुवेष साधु सनमानू।
जिमि जग जाम्बवन्त हनुमानू।
हानि कुसङ्ग सुसङ्गति लाहू॥
लोकहु वेद विदित सब काहू ३७
गगन चढ़ै रज पवन प्रसङ्गा।
कीचहिं मिलै नीच जल सङ्गा॥
साधु असाधु सदन शुक सारी
सुमिरहिं राम देहिं गुणि गारी ३८
धूम कुसङ्गति कारिख होई॥
लिखिय पुराण मञ्जु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिल सङ्घाता।
होइ जलद जगजीवन दाता ३९

दोहा॥

ग्रह भेषज जल पवन पट पाय कुयोग सुयोग॥
होय कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षण लोग ५०

हुल्लास राम कवि॥

स्त्री और पुरुष दोनों की दुष्टता।

दोहा॥

रूपसेन नृप सदन महं शुक शारिका निवास॥
करैं प्रीति तिन की बड़ी ताकर सुनुहु प्रकाश १

चौपाई॥

शुक शारिका रहैं एक ठाईं॥
प्रीति भई कुछ वरणि न जाई॥
दुनौं कहैं विविध कृति हासा॥
सुनि राजा मन परम हुलासा १
यहि विधि बीति गये दिन भाई
एक दिवस विचित्र कथ नाई॥

एक दिन शुक शारिका बुलाई।
देखौ बिन्नसार प्रिय आई ॥ ३॥
तब शारिका गई तत काला॥
बिन्नसार देख्यो एक बाला॥
भूषण षोड़श भाँति बनाये॥
पर पुरुष सों ध्यान लगाये ४
वृद्ध मरो तब कहो विचारी॥
युवती पाप सुनि अधिकारी॥
तब शारिका स्वरूप निहारी॥
आगे पुरुष एक विचारी ५
नारि से औरि अभूषण ल्यावे।
वेश्या को श्रृङ्गार करावे ॥ ॥
कह्यो शारिका सुआ सुजानी।
यह स्वरूप देखहु ढिग आनी ६
पुरुष अहै पाप से भारी॥ ॥
नारि हीन अति हीन विचारी॥
परतुम किमि मानहु गे भाई।
कहत वही जो तुम्हहिं सुहाई ७

दोहा॥

सुक शारिका परस्पर दोनों करैं विवाद॥
जागि नृपति बोल्यो तबै काह अहै संवाद ८

चौपाई॥

चूड़ामणि तब नृपसों कही।
राजा सुनो उभय बत कही॥
नारि पापिनी सब जग जाना॥
तीन शारिका करै न काना ९
यह सुनि कह्यो शारिका ज्ञानी
महाराज सुनिये मम बानी॥
पुरुष पाप मूर्ति अधिकाई॥
चूड़ामणि के चित्त न आई १०
तब राजा बोल्यो हरषाई॥
उभय भेद बरणौं चित लाई॥
सुनत शारिका नृपहि जुहारी।
महाराज यह तत्त्व विचारी ११

रुमल्ल शील एक नगर कनाऊं॥
सेठि [illegible] जय बसै तहाऊं॥
ताके पुत्र भयो रूपकारी॥
नाम धनञ्जय कहे पुकारी १२
ताको व्याह भयो उत्साहू॥
पुण्य वढ़ है नगर क नाहू॥
दुहिता उभय सेठि की जानी॥
लीन धनञ्जय व्याहि सयानी १३
सेठि विदा के दीन कुमारी॥
श्वशुर सासु अत्यन्त पियारी॥
सेठि महाजय कछु दिन गये।
भई मृत्यु सुरलोकी भये १४
द्यूत धनञ्जय खेलन लागे॥
हारि द्रव्य ससुरारिहि भागे॥
नारि सहित पहुंचे तहं जाई॥
देखि श्वशुर पुर गये मुरझाई १५
फिरिउन भूषण वसन बनावा
प्रीति सनेह उभय पहिरावा॥

आनँद बैठि करैं ससुरारी ॥
कर्म्म रेख नहिं मिटै मिटारी २६
दोहा॥
एक दिन स्त्री सों कह्यो चलिये प्रिय निज धाम
श्वशुर वास नीको नहीं यहां धरैं सब नाम २७

चौपाई॥

पति अनुशासन कीन न दूरी॥
साथ चली बाला सुख पूरी॥
मात पिता को कहा भलाई
स्वामी साथ चली हरषाई २८
पन्थ बीच में सेठि विचारी॥
दीजै भूषण वसन निकारी।
छीनि लेइ कोउ निर्ब्बल जानी
सुनि सब दीन निकारि सयानी २९
तब आगे एक कूप देखाई॥
तिहिनि गिराय चले हरषाई।
कूप परी रोवै तहँ बाला ॥॥

कमल श्रील एक नगर कनाउं॥
सेठि   जय बसै तहाऊं॥
ताके पुत्र भयो रूपकारी॥
नाम धनञ्जय कहे पुकारी १२
ताको ब्याह भयो उत्साहू॥
पुराय दई हे नगर क नाहू॥
दुहिता उभय सेठि की जानी॥
लीन धनञ्जय व्याहि सयानी१३
सेठि विरा के दीन कुमारी॥
श्वशुर सासु अत्यन्त पियारी॥
सेठि महा जय कछु दिन गये।
भई मृत्यु सुरलोकौ भये १४
द्यूत धनञ्जय खेलन लागे॥
हारि द्रव्य ससुरारिहि भागे॥
नारि सहित पहुंचे तहं जाई॥
देखि श्वशुर पुर गये सुखाई१५
फिरिउन भूषण वसन बनावा
प्रीति सनेह उभय पहिरावा॥

आनंद बैठि कीरें ससुरारी ॥
कर्म्म रेख नहिं मिटै मिटारी २६
दोहा॥
एक दिन स्त्री सों कह्यो चलिये प्रिय निज धाम
श्वशुर वास नीको नहीं यहां धरैं सब नाम २७

चौपाई॥

पति अनुशासन कीन न दूरी॥
साथ चली बाला सुख पूरी॥
मात पिता को कह्यो भलाई
स्वामी साथ चली हरषाई २८
पन्थ बीच में सेठि विचारी॥
दीजै भूषण वसन निकारी।
योनि लइ कोउ निर्व्वल जानी
सुनि सब दीन निकारि सयानी २६
तब आगे एक कूप देखाई॥
दिहिनि गिराय चले हरषाई।
कूप परी रोवे तहं बाला ॥॥

पथिक एक आयो त्यहि काला २०
तिहिसि निकासि पूंछि कुशलाई ॥
तात चोर मोहि दीन गिराई ॥
भूषण वसन काढ़ि सब लीन्हा
स्वामिहि मारि काह दहुकीन्हा २१
पथिक कह्यो चलिये चित लाई
जहां कहौ तहं देहुं पठाई ॥
पुष्य तई एक नगर अपारा ॥
उभय सेठि है पिता हमारा २२
पथिक साथ तब लीन लिवाई
उभय सेठि के घर पहुंचाई ॥
मात पिता तहं रहे निहारी ॥
पुत्री का गति भई निहारी २३
कन्या कह्यौ सुनो हो ताता ॥
घेरिनि चोर आय मग जाता ॥
भूषण लै मोहिं कूप गिराई
पति की गति जानैं रघुराई २४
यह सुनि मात पिता उर लाई

पुत्री हाय महा दुख पाई ॥
उभय सेठि सुनि दूत बुलाई ॥
सेठि धनञ्जय हेतु पठाई २५

दोहा॥

वहाँ धन ञ्जय नगर निज हारि गये सब दाम
फिरि आये ससुरारि मह देखा बैठी बाम २६

चौपाई॥

सासु श्वशुर पूँछे कुशलाई ॥
सेठि शोच सुख बात न आई ॥
उभय सेठि की सुता सयानी ॥
बोली आय हर्ष युत बानी २७
नाथ देह सब भरम भुलाई ॥
सासु श्वशुर तुम्हरी सुख दाई
ताते बसिये यहाँ बिचारी ॥
मैं प्रभु दासी आउ तुम्हारी २८
नारि कहे मन भर्म भुलावा ॥
रहे श्वशुरपुर अति सुख पावा

यहि विधि बीति गये बहु काला
अब मुनिये कृतहू भूपाला २९
एक दिन सोवत नारि विचारी
लीन्हों भूषण वसन निकारी
सेठि नगर निज पन्थ लगावा
भाग्यो भक्ति भाव नहिं भावा ३०

दोहा ॥

यह प्रत्यक्ष देख्यौ नृपति कुरुप पाप वरवान
चूड़ामणि मानत नहीं कहा करौं बलवान ३१

चौपाई ॥

तब चूड़ामणि कह्यो रिसाई ॥
झूठ कहे तैं नारि बनाई ॥
नारि पाप मूरति मैं जानी ॥
ताको मिथ्या कहो सयानी ३२
इतना सुनि राजा मुसुकाई ॥
चूड़ामणि सों कह्यो बुझाई
नारी पाप कवनि विधि आई
सो वृत्तान्त सुनावहु भाई ३३

सुनि चूड़ामणि करै बखाना॥
काञ्चन पुर एक नगर सुजाना
सागरदत्त सेठि विख्याता॥
सो श्री दत्त कहूँ सुत ताता ३४
ताको व्याह भयो अति भारी
शुभ श्री नगर में सेठि सुखारी
नाम समुद्रदत्त अस काहई॥
सुता नाम चन्द्रावति अहई ३५
ताहि बिआहि घरै लै आवा॥
श्वशुर लोग संग फेरि पठावा
श्रीदत्त मन माहँ विचारा॥
बैठे कहा करी व्यापारा ३६
गये समुद्र पार पर चीना॥
लादि जहाज माल सब लीना
यहां नारि ऋतु यौवन पाई
चढ़ी महल निरखे मनलाई ३७
तहवां आय नृपति असवारी
पुरुष एक लख्यो सुकुमारी

वैश्य तरुण अति रूप सुहावा
मानहुं काम आप बनि आवा ३८
ताको देखि मोह भै बाला ॥
सखी सो बोलि कह्यो ततकाला
तरुण पुरुष जो पाछे आई॥
ताको अब ही लाउ लिवाई ३९
तुरतै सखी चली सुनि बाता॥
पुरुष से आय कह्यो सुनु ताता।
सेठि समुद्रदत्त व्यापारी ॥ ॥
ताकी सुता बुलावै प्यारी ४०
तब पूरुष बोल्यो हरषाई॥
आउब निशा कहो सब गाई
निशा पाय आइहैं तुम पासा
बाला करिये भोग विलासा ४१
कल्प समान याम युग बीता॥
निशा पायआयो नर चीता ॥ ॥
सो चन्द्रावलि लिहिसि लिवाई
बट तर जाय सहेट बनाई ४२

आउब यहाँ उचित हम नाहीं ।
पुरुष जानि सब लखैं पछाहीं
तब चन्द्रावति कह्यो सुहेला ॥
बटतर भला सहेट अकेला ४३
निशा पाय दोनों जन जाई ॥
बटतर करैं केलि अधिकाई ॥
लादि तहाँ श्री दत्त जहाजा ॥
आये श्वशुर सेठि के राजा ४४
खबरि कह्यो पुर बासिन जाई ॥
सेठि समुद्र दत्त से आई ॥ ॥
तब श्री दत्त गयो त्यहि द्वारे ॥
सेठि श्वशुर को जाय जुहारे ४५
आनँद से सब रूप निहारी ॥
हर्षित भये सकल नर नारी ॥
भोजन विविध प्रकार बनावा ।
भली भाँति महिमान ज्यवांवा ४६
चित्रशाल महँ पलँग बिछाई ॥
चंद्रावती तहाँ चलि आई ॥

वे मन बैठि रही पर्य्यङ्का ॥
तब श्री दत्त लीन्ह भरि अङ्का ४७
बहु प्रकार रस रीति देखावा ॥
बाल के एक मनै नहिं आवा ॥
निशा बढ़ी तब सोयो साहू ॥
चली सहेट महा बल माहू ४८
देखिलि चोर एक है नारी ॥
जानि अकेलि निशा अँधियारी
आपुस में तब कहैं बनाई ॥
निश्चय काम स्वैरिणी आई ४९
याको हेरौ चलौ तमाशा ॥
कहाँ जाय त्रिय कौने प्रकाशा ॥
जान निशा कछु संशय नाहीं
मारि हरिब महा बल चाहीं ५०
यह कहि चोर लिये पिछवाई।
कामातुर त्रिय जानि न पाई॥
वहाँ कि सुनो कथा मन लाई
पूरुष बदतर नारि न पाई ५१

बैठि गयो विरवातर जाई ॥
काट्यो सर्प्प मुयो अकुलाई
ताही समय गई वह नारी ॥
बैठो दूत उत जाय निहारी ५२

दोहा॥

नारि जाय उर लाय के कह्यो उठो महाराज
ज्यहि कारण निशिघरतज्यो सो कीजे अब काज ५३

चौपाई॥

मरा पुरुष नहि जगै जगाये॥
कामातुर त्रिय भेद न पाये॥
चन्द्र एक वह ऊपर आनी॥
मृतक शरीर पैठ गहि पानी ५४
नारिहि दीन तुरत पौढाई॥
काम केलि कीन्ह्यो चित लाई।
शिथिल भयो तो नासा काटी।
आप शरीर से गयो उपाटी ५५
फिरि देखै तो मृतक शरीरा ॥
नाक से रुधिर बह्यो भै पीरा

नारि आगि रहह गई विशेषी॥
यह वृत्तान्त चोर सब देखी ५६
चोरन मन में कीन विचारा॥
नारि प्रबल जाने संसारा॥
आय सेठि के पास अभागी
पकरि पाहिका रोवन लागी ५७
परिजन आय गये त्यहि पासा
चन्द्रावति बैठी बिन नासा॥
देखि सकल मन रहे सुखाई।
पुत्री नासा कहां कटाई ५८
तब बोली चन्द्रावति रोई॥
पापी पुरुष लागि मैं खोई॥
देर भई नहिं आयउ भाई॥
नैहर भाव कह्यो सुकुचाई ५९
दिह्यो जगाय लिह्यो उर लाई
नाक काटि मोहिं पलंग गिराई।
ऊपर से फिरि लातन मारी॥
सोये आप भूमि माहिं डारी ६०

दोहा॥

सुनि परिजन रिसियाय के सेठिहि दीन जगाइ
राज द्वार को लै चले लीन्हों मुसुक चढ़ाइ ६१

चौपाई॥

नगर में भयो कोलाहल भारी।
सेठि दमाद बड़ा अपकारी॥
यह सुनि राजा निकट बुलावा।
देखि महाजन अति दुख पावा ६२
नृपति कहा का किह्यो अयानी
सेठि कहा हम कछु नहिं जानी
तब परिजन सब करैं गोहारी
महाराज यहि दण्ड बिचारी ६३

दोहा॥

राजा अस मजुम करो करिये दण्ड बिचार-
चोर समय बोलतु भये श्री महराज जुहार ६४

चौपाई॥

यह हवाल सकल हम देखा
नारि चरित्र सत्य करि लेखा।

सुनि बोल्यो नृप कस यह भाई
तब चोरन सब कथा सुनाई ६५
राजै अंगुली दांत दबाई॥
सेठहि छोड़ि दीन उर लाई
सुनत सेठ गिलानि में आये
तुरतहि सुरपुर प्राण पठाये ६६
सेठहि हरि चोर तनु त्यागी॥
राजै मार्यो पकरि अभागी॥
मुण्ड मुड़ाय श्याम मुख लाई
गर्दभ धरि सब नगर फिराई ६७
फिरि दक्षिण दिशि दिल्लिनि निकारी
निश्चय जानि नारि अपकारी॥
राजहिं शुक शारिका सुनाई।
नारि पुरुष केये फल भाई ६८
कह बैताल सुनौ बलवाना॥
यामैं पापी को अधिकाना॥
तब विक्रम बोल्यो सुनि बानी
पाप समान दुहुन कर जानी ६९

नारि चरित्र सेवाय विचारी॥
ताते नारि पाप अधिकारी॥
मति अनुसार कहा हम भाई।
तुमहुं विचारि लेहु चितलाई ७०
दोहा॥
यह सुनि पुनि बैताल तब उड़ि सिरसा तरुडाल
धरि विक्रम फिरि लै चलो तब बोल्यो बलवान ७१
सहसराम कवि॥
गर्भवासादि दुःखों का वर्णन॥
चौपाई॥
दैत्य हिरण्य कशिपु बलवाना।
सुत प्रह्लाद जासु जग जाना॥
षण्डामर्का कुल गुरु जाये॥
कनक कशिपु सो तुरत बुलाये १
सुत प्रह्लाद प्राण प्रिय मोरे॥
सौंपहु तुमहिं कहौं कर जोरे॥
कीजे इन्हैं पढ़ाय सचेता॥
स्वल्प पढ़ाउब लाइ समेता २

नृपनि देश मुनि राम कुमारा ॥
गये लिवाय जहाँ चट शारा ॥
उठे सकल बालक कर जोरी ॥
करत प्रणाम बहोरि बहोरी ३
कहि प्रिय वचन विप्र अनुरागे।
प्रणव पुनीत पढ़ावन लागे ॥
वर्ण विचित्र दीनि लिखि पाटी।
देव प्रसाद दीन पुनि बाँटी ४ ॥

दोहा ॥

दीन धराय सो लीन कर बाँचहु राज कुमार ॥
करि प्रणाम बोले वचन अति पुनीत श्रुति सार ५
राम भजन को कौन फल विद्या को फल कौन।
घाटा नफा विचारि के विप्र पढ़ो मैं तौन ॥ ६ ॥

चौपाई।

सुनहु तात विद्या अति पावन ॥
सन्तन सुखद सुजन मन भावन
सुभग सकल सम्भव बलवाना
बन्धु विपुल धन धनद समाना ७

विद्या बिना न सोहै कैसे ॥
बिन सुगन्ध किंशुक छवि जैसे ॥
बालक सत्य कहौं त्वहि पाहीं ।
विद्याधन प्रधान जग माहीं ॥
हरै नरेश न चोर चुरावै ॥
देश विदेश महा सुख पावै ॥
ते पितु माता शत्रु समाना ॥
जे न पढावैं सुत अज्ञाना ९
सभा मध्य नहिं सोहैं कैसे ॥
विपुल मराल मध्य बक जैसे
विप्र वचन सुनि राज कुमारा ।
बोल्यो वचन विहँसि श्रुति सारा १०

दोहा ॥

वर्णत वेद पुराण बुध शिव विरञ्चि सनकादि
के साधक हरि भक्ति के विद्या बिन बनितादि ११

चौपाई ॥

सिखौं न सो विद्या लिखि पाटी
विषयक मन खग बांधन टाटी ।

विद्या सो जो भजै भगवाना॥
लहै सुधर्म्म देह अवसाना १२
बिन हरि भजन भूरि भवसागर
तरै न कोटि यत्न नर नागर॥
देह ते कर्म्म कर्म्म ते देहा॥॥
मिटैन बिनहरि चरण सनेहा १३
तृण जलौक चलै तृण आधारा
ऐसे जीव कर्म्म अनु सारा॥
करै कर्म्म वश गर्भ्भ निवासू॥
बरणि न जाय दुसह दुख तासू१४
वर नितम्ब नीचे पद बांधे॥
बहु पुरीष पल अन्त्रन बांधे।
काटहिं कीट लेट तनु लागा॥
नहिं अवकाश अधो मुख टांगा१५
परायांनि सङ्कट मह सोई॥
जन्म अनेक करि सुधि होई।
हाय कीन मैं भजन न कबहू॥
यासों सहौं दुसह दुख सबहू१६

दोहा॥

खाय मातु मोदक कटुक परै दहल बिच आइ

जठर अग्नि की ज्वाल से जीव विकल है जाइ २७

चौपाई॥

सञ्चित परारब्ध किय पाना॥
कर्म्म विवश सहै सङ्कट नाना॥
जगजीवन लखि जीव दुखारी॥
प्रकटे हरि सायुध भुजचारी २८
कौस्तुभ कण्ठ वक्ष बनमाला।
रत्न किरीट प्रकाश विशाला॥
अस हरि रूप अनूप निहारी॥
करि प्रणाम अस्तुति अनुसारी २९
जय भगवन्त सन्त सुख दायक॥
कृपासिन्धु सचराचर नायक॥
जीव चराचर पशु पशुपाला॥
अति कृपालु तुम दीन दयाला ३०
तुम्हरे हाथ नाथ जल चारा॥
बन्ध मोक्ष प्रभु विगत बिकारा

अबकि बार अगणित रत बन्धू ॥
जपि तव नाम तरौं भवसिन्धू २२

दोहा॥

विकल जीव जननी जठर हरिसौं करत पुकार
अब की बार तुम्हार गुण गाय तरौं भवपार २३

चौपाई॥

पूरण मास भये यहि भाँती ॥
महा वपुष किय प्रकट तहाँती
भयो अधीर पीर तनु माहीं ॥
क्षण मूर्छित पुनि रुदन कराहीं २३
कहाँ कहाँ करि रोवन लागे ॥
रूप चतुर्भुज दीख न आगे ॥
कीन्हों जबहिं पयोधर पाना ॥
भूली सुमति मोह लपटाना २४
गावहिं मङ्गल गीत बधूटी ॥
नेगी करहिं वसन धन लूटी ॥
काटैं कृमि बहु व्याधि सतावैं ॥
रहैं रोय मुख वचन न आवैं २५

जननी उबटन तेल लगावै॥
पालि पोषि सुत देह बढ़ावै ॥
पगन चलत कह तोतरि बतिया
सुनि पितु मातु लगावैं छतिया २६

दोहा॥

क्रीड़ा बहु विधि करत अलि गयो बालपन बीति
भजै न सीता राम पद करैं अनेक अनीति २७

चौपाई॥

तरुण भये तरुणी मन मोहैं।
चलैं बाम पुनि पुनि मग जोहैं
जो कदाचि धन धाम बिलोका
तृण समान मानै त्रैलोका २८
जो धन हीन दीन मुख बाये॥
जहं तहं याचक पेट खलाये॥
कछु दिन बहुत बढ़ावत जाहीं
कछु विरोध कछु रोदन माहीं २९
कछु सोचत कछु उदास धावै

राम भजन बिन जन्म गँवावै।
करै सुधा सन्तोष न पावा॥
मृग जल विषय विलास भुलाना ३०
गर्भवास श्रीपति उपदेशा॥
माया विवश न सुधि लव लेशा॥
तजि हरि भजन भोग मन लावा।
यह वह करत जरापन आवा ३१

दोहा॥

अन इच्छित आई जरा सहज राम सित केश॥
मनहु विधि रव सित पुङ्ख के छेद काल नरेश॥३२

चौपाई॥

तनु बलि अबलि वदन रद हीना
तृष्णा तरुण होय तनु छीना॥
थके चरण तनु कम्पन लागे॥
प्रिय बालक जल देहिं न मांगे ३३
खाँसि खाँसि थूकहिं मरिह माही
सुत सुत बधू देखि अपल माहीं॥

प्रिय परिवार सुहृद सुत नाती॥
मरण मनावहिं दिन अरु राती ३४
जब कछु सुतन सिखावन देही॥
सुत कहैं जल्पि जल्पि जिव लेही
भवन द्वार गरवा रखवारी॥
श्याम सिंह जनु भूंक भिखारी ३५
मरती बार कण्ठ कफ लागा॥
तबहूं मोह वश भेषज मांगा॥
तनु तजि गहिसि नरक के बाटा॥
मोसन सहि न जाय यह घाटा ३६

दोहा॥

कण्ठ पाश असि पत्र वन दण्ड पाणि अति घोर
चले घसीटत शामन गण यमपुर पन्थ कठोर ३७

चौपाई॥

प्रथमहिं चढे मातु पितु गोदा॥
पुनि स्यन्दन सुखपाल समोदा।
पुनि गज बाजि साज पट झीने॥
सुख करि विविध भांति परवीने ३८

चढ़े पर्य्यङ्क शय्य पट बांधे ॥
सो चढ़ि चले चारि के कांधे ॥
भूंठ सांच काहि जहं तहं वच्ची॥
बहु विधि धेरे धाम धन सञ्ची ३९
सो धन धाम धरा रहै भूपर ॥
कछु भांड़ा गाड़ा कछु ऊपर ॥
पशु शाला कछु बन कछु गोशाला
रही निकेत द्वार वर बाला ॥ ४०
चिता चढ़ाय परोसिन त्यागा ॥
यमपुर चले अकेल अभागा ॥
करि विलाप सुत सर्व्वस कीन्हा॥
पावक जारि फूंकि मुख दीना ४१
दोहा॥
सुनहुं तात पितु मातु सुत वनिता बन्धु अनेक
यमपुर भी पनि भजन विनु करै सहाय न एक ४२
चौपाई॥
जिहि तनु उबटन तेल लगाये
पहिरे भूषण बसन सुहाये ॥

सो नरदेह खेह ह्वै जाई ॥ ॥
जहँ तहँ पवन प्रसङ्ग उड़ाई ४३
यह संसार स्वप्न सम जानों ॥
तजें भजें मुनि शारँग पानी ॥
जाहि भजे बिन नाहिं निबाहू ।
रङ्क धनी वरु क्षितिपति शाहू ४४

भगवती दास कवि ॥

नरकों का वर्णन ॥

चौपाई ॥

बहुरि दक्षिण दिशि देखा आई
अद्भुत रूप को वर्णौं भाई ॥
क्रोधी क्रोध जे करहिं अपारा ॥
दुष्टी दुष्ट करहिँ अपकारा १
गुरु द्वेषी विवेक नहिँ माना ॥
साधुन की निन्दा भल जाना ॥
मात पिता की सेव न जानहिं ॥
पर नारी सों अनुचित मानहिं २

मुख सेवी चित मैल रहाहीं ॥
दक्षिण दिशि सो अति बिललाहीं
औरो हैं जे विप्र संघाती ॥ ॥
बिन अपकारक मारहिं जाती ३
गर्भ छेद जे करहिं विकारा ॥
त्रिया तजहिं बिन दोष विचारा
गाय विप्र कर धन भल मानहिं
निशि दिन दुष्ट कर्म भल जानहिं ४
लेहिं द्रव्य नर देहिं न फेरी ॥
अग्नि देहिं विश्वास अहेरी ॥
बाट घाट चोरी व्यवहारा ॥
मित्र द्रोह जे करहिं विचारा ५
औरो जे पातकी कहाये ॥
ते सब दक्षिण द्वारे आये ॥
अन्धकार सूझै नहिं आगे ॥
मारग देखि न परै अभागे ६
गिरत परत तिनहीं भय होई ॥
महा त्रास व्यापक नर सोई ॥

अज्ञान गहन मारग गिनि जोवहिं
तिन के त्रास घातकी रोवहिं ७
अन्धकार एक कूप अपारा ॥
तिहिमा कृमि बहु परैं असारा।
तिहि महँ परत त्रास अति होई
ताहि ताहि गोहरावत सोई ८
ऋक्ष व्याघ्र औ सर्प्प अपारा
वृश्चिक बार बार तनु मारा॥
कुम्भि नरक जो कहे भयावन॥
तिहि मारग पुनि आवन जावन ९
बार बार पुनि त्रास दिखावहिं
अनुशासना देत तिहि आवहिं
माता पिता दुखित जे होहीं ॥
और दुराचारी जो सोहीं ॥ १०
वेद शास्त्र की निन्दा करहीं॥
पर नारी कहँ चिन्ता धरहीं॥
दक्षिण द्वारे रहें निराशा ॥
ते यम सन पावहिं अनुशासा ११

पापी वृक्ष एक है जाता ॥
मांस चर्म्म को जो करै घाता ॥
ब्रह्मघात गोधन जहं देखे ॥
गोत्रघात की बहुत विशेषे १२
देव गुरू निन्दक जो होई ॥
माता पिता ग्वाल दुख सोई ॥
गर्भ घात की मित्र विश्वासी ॥
बालक घात करैं त्रिय त्रासी १३
बिन अपराध त्रिया जे मारहिं ॥
बन महं अग्नि जाय जे जारहिं ॥
सहजहिं जानि करैं ब्रत भङ्गा।
निन्दहिं तीरथ सहजहिं गङ्गा१४
दानहिं देत निवारहिं कोई ॥
और अतिथि निन्दक पुनि सोई
वैष्णव को निन्दहिं सन जानी।
शुचि समेत जे रहैं न मानी १५
जीवघात परसङ्गहिं देखे ॥
नरक पातकी बहुत विशेषे ॥

जे निज धर्म्म त्यागि परधर्म्महिं
गहहिं प्रशंसहिं परमत भर्म्महिं १६

दोहा॥

एते कर्म्म पातकी देखे हम यमद्वार॥
तिन कहँ त्रासि दिखावहिं पूँछहिं बारहिं बार॥१७

चौपाई॥

ताही समय सनहु मुनि राऊ
जो देखा सो तुमहिं सुनाऊ॥
एक महापापी तब आवा॥
ओरे नरक में आनि ढहावा १८
पापी महा कीन आधर्म्मा॥
युवती गौ बध किये कुकर्म्मा॥
गर्भ्भघात की लीन्हे आवहु॥
तेली कोल्हू घालि पेरावहिं १९
स्वामी घातक तुरतहि आवा॥
धारि हस्तर आनि रहावा॥
टूटहिं पात परहिं स्वासि देही॥
मांस चर्म्म सो पोछन लेही २०

औरौ पापी रहैं अपारा ॥
जिन काहू को हरी है दारा ॥
सौंस पराव लेहिं विश्वासी ॥
पन्थ चलाय गरे दें फांसी २१
खेत पराव लेहिं करि डोलू ॥
तिन कहँ धरि पेरवावहिं कोल्हू ।
मात पिता का दुखवै कोऊ ॥
अग्नि नरक महँ डारैं सोऊ २२
लोह जंजीर बाँधि लै आवहिं ।
ओ किङ्कर त्यहि त्रास दिखावहिं
काहुक वस्तर लेहिं चुराई ॥
सोन रूप जे धरहिं दुराई २३
काँस ताँब जे हरहिं परावा ॥
कन्या दान देत हर कावा ॥
यात्रा तीर्थ करहिं मन भङ्गा ।
अधरम केरे करहिं प्रसङ्गा २४
विप्रहि दान देत जे बर्ज्जहिं ॥
गुरुजन माता त्रास न लर्ज्जहिं

पक्षिन कहँ आज्ञा तब दीन्हीं।
तुरतहि आँखि काढ़ि तिन लीन्ही २५
आन रहू जो नोचहिं ठाढ़े॥
आज्ञा ले तिन कर जी काढ़े।
देखा और नृपति एक आवा
मृत्युलोक कर राव कहावा २६
इन भल नीक न्याय नहिं कीना
करि अन्याय द्रव्य हरि लीना
बाल घातकी औरो आवा॥
विष दै मनुजहि देह नशावा २७
गाय विप्र कहँ दुखवै कोई॥
कृमी कूप महँ डारैं सोई॥
अन देखे जो करहिं चुनारवा
बिना सुने उर आनहिं सारवा २८
नाक कान काटी पुनि ताही॥
चित्रगुप्त न्यावहिं करि जाही॥
औरै करैं भ्रष्ट तनु भोजन॥
ब्राह्मण है कै करैं न शोचन २९

वेद शास्त्र कर मारहिं माना॥
विष्टा कूप में परहिं निदाना॥
कहँ लगु वरणौं नरक अपारा
राम भजन बिन नाहिं उबारा ३०

दोहा॥

द्विज है सन्ध्या नहिं करैं अरु अन्नाय दिन खाहिं
तिनके शिर आरा चलिहि यहि महँ संशय नाहिं ३

रत्न कवि॥

ब्रज की प्रशंसा॥

चौपाई॥

एक प्रात अष्ट प्रिया पटभाषी
सोरह सहस महल अरु राखी
सो सकलन में सरस पियारी।
श्री रुकुमिनि की बातें न्यारी १.
तिनसों हरि अन्तर नहिं राखें
क्षण क्षण की निज मन की भाखैं

एक दिन चली प्रेम की गाथा
हा ब्रज कहि रोयो यदुनाथा २
तब रुकुमिनि प्रभु सों कर जोरी
बोली मधुर वचन रस बोरी ॥
पुरी द्वारका सम नहिं कोऊ ॥
अमरावति पटतर नहिं सोऊ ३
पितु वसुदेव देवकी माता ॥
ऋद्धि सिद्धि नव निधि विख्याता
षटदश सहस आठ पटरानी
सो सब मनि प्रभु मन नहिं मानी ४
पुनि पुनि सुमिरत गोकुल ग्रामा
उरसों नहिं बिसरत सो धामा ॥
तिनकी प्रीति कहो समुझाई
जिन में तव मन रहत लोभाई ५
सुनि रुकुमिनि के वचन सुहाये
परम पुलकि लोचन जल छाये
तब बोले यों राजिव नयना ॥
तुम जो कहत सो सांची अयना ६

पितु वसुदेव देवकी माई॥
तिनहूं करत छोह अधिकाई
पै न मोहि बिसरत ब्रज बाता॥
नन्द बबा अरु यशुमति माता७
तिनकी प्रीति बरणि नहिं जाई
जिहि विधि मैं उनसों सुख पाई
छण छण मुख लखि लेत बलैया
कोउ सप्रेम अद कहत कन्हैया ८
वह सत माखन मैया कर के ॥
मथि राखत मेरे हित धरके॥
ब्रज सुख नहिं बिसरत बिसराये
जिहि विधि सुर मुनिमन ललचाये ९

दोहा॥

वह वृन्दावन सुख सघन कुञ्ज कदम्ब कि छाँहि
कनक मयी यह द्वारका ताकी रजसम नाहिं १०
नृपति सभा सिंहासन जिहि लखि लजत अनङ्ग
नहिं बिसरत वह सखन को गाय चरावन सङ्ग ११

राजसाज साजे सकल तिमि नहिं नेकु सुहाहिं ॥
गुञ्जमाल वनचित्र जिमि मोरमुकुटमणि माहिं १२
रानी सोरह सहस तुम करत रहत अति प्रीति ॥
श्री राधा छवि प्रेम की कछु है न्यारी रीति १३
गोपी सोरह सहस सब लोक लाज पति त्यागि
गई निशाहिं रस रास करि मम हित ते रसपागि १४
बिछुरत तिनसों सकुचि मन कह्यो मिलव पुनि आय
उनसों अनृण भयो नहिं रह्यो द्वारका छाय १५
बहुरि जाय ब्रज भेंटिये नटवर वेष बनाय ॥
ब्रजवासिन सुख दीजिये मुरली मधुर बजाय १६
निशदिन मेरे हिय रहत ब्रजवासिन में ध्यान
करत बनत सब बात मोहिं उनहीं की मन मान १७

चौपाई ॥

भक्ताधीन विरद प्रभु केरे ॥
गावत वाणी वेद घनेरे ॥ १ ॥
सन्तत रहत भक्त के पासा ॥
पुरवत हैं प्रभु तिन की आसा १८

जे सप्रेम हरि सों मन लावैं ॥
तिन को कबहुं नहीं बिसरावैं
ग्राह ग्रसत गज जाय छोड़ाये ॥
गरुड़ छोड़ि तहं आतुर धाये १९
पुनि प्रभु पाण्डव जरत बचाये।
द्रुपद सुता के बसन बढ़ाये॥
अजामील सम ते प्रभु कीन्हों
भजन प्रभाव ध्रुवहि बर दीन्हों २०
जन प्रह्लाद अभय करि थाप्यो॥
ताको बार न बांरहू व्याप्यो॥
जो जन मन ते ध्यावे जैसे॥
ता कहं प्रकट होत प्रभु तैसे २१
खग जग सकल विश्व के स्वामी
सर्वमयो सब अन्तर्यामी।
प्रेम युक्त भज जन हरि ध्यायो
ताते प्रेम हृदय हरि छायो २२
प्रभु के मन यह रहत सदाहीं॥
ब्रजबासिन को भेदयो नाहीं।

यासों धनि ब्रज अरु ब्रजवासी
जहि में बस्यो हरि अविनाशी ४३

ब्रजवासी दास कवि ॥

माखन चोरी लीला ॥

दोहा ॥

विश्व भरण पोषण करन कल्पतरो वर नाम
सो प्रभु दधि चोरी करत प्रेम विवश भग धाम १

सोरठा ॥

नित उठि करत विहार ब्रज में घर घर सांचरो ।
ब्रज जन प्राण अधार माखन चोरी व्याज करि २

चौपाई ॥

श्याम एक ग्वालिनि घर आये
चोरी करत पकरि तिन पाये ॥
कहत करी तुम बहुत ढिठाई
अब लौ घात परे हौ आई १
निश वासर मोहिं बहुत खिझायो
दधि माखन सब मेरो खायो ॥

हो भुज पकरि कह्यो कित जैहो
दधि माखन दै छूटन पैहो ४
ताके मुख तन चिते कन्हाई ॥
बोले वचन मधुर मुसुकाई ॥
तेरी सों मैं छुयो न राई ॥ ॥
सखा खाय सब गये पराई ५
चारु चितौन चितै उर आन्यो
उर ते रोष जात नहिं जान्यो॥
सुनत मनोहर हरि की बतियां ॥
लिये लगाय ग्वालिनी छतियां ६
बैठो श्याम जाउं बलिहारी ॥
मैं ल्याऊं दधि खाउ बिहारी॥
हरि को लेन चली दधि गोरी ॥
हरि हंसि निकरि गये अजखोरी ७
रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी ॥
मन लै गयो सांवरो चोरी ॥ ॥
हरि गे और ग्वालिनी के घर
देख्यो जाय न कोऊ भीतर ८

दोहा॥

माखन काढ़ि निशङ्क ह्वै लागे खान कन्हाय।
ग्वालिनि आवत जानि घर तब उठि रहे छिपाय ९

सोरठा॥

ग्वालिनि घर में आय मथनी ढिग ठाढ़ी भई॥
भाजन रीतो पाय चकित विलोकत चहूंदिशि १०

चौपाई॥

अबहीं गई आय इन पावन॥
आयो माखन कौन चुरावन॥
भीतर गई तहां हरि पाये॥ ॥
पकरी भुजा भये मन भाये ११
तब हरि कहि निज नाम लजाये
नयन सरोज कछुक भरि आये
देखि बदन छबि आनंद ही के
दीन्हें जान भावते जी के॥ १२
भयो ग्वालि मन परम हुलासा
कहन चली यशुमति के पासा

जो तुम सुनहुं यशोमति माई॥
हंसि हौ सुनि हरि की लरिकाई १३
आजु गये हरि मोघर चोरी॥
देखी माखन भरी कमोरी॥
मैं घर आय अचानक जबहीं
रहे छिपाय सकुचि कै तबहीं १४
जब मैं कह्यो भवन में को री॥
तब मोहिं कह्यो निज नाम बिहारी
सो लेन लोचन भरि आंसू॥
तब मैं कान्ह तेरी सासु १५
सुनत वाम सब रहि गई कनियां
सकुचत हंसत मन्दमुख कनियां
ग्वालि बिहंसि हरि लै उर लायो
माखन चोर पकरि मैं पायो १६

चौपाई॥

करौं नेव की दामरी बांधौं अपने धाम॥
लाय लिये उर रोहिणी बांधि सके को श्याम १७

सोरठा॥

यशुमति उर आनन्द बालचरित सुनि श्यामके
कहत सुनौं नंद नन्द ऐसो काम न करहु सुत १८

चौपाई॥

पुनि इक गृह गये नन्द दुलारे।
देखि फिरे तहँ ग्वाल दुआरे॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई॥
फांदि परे पिछवारे जाई १९॥
सूनो भवन कहूँ कोउ नाहीं॥
मानहुँ इन को राज सदाही॥
भांडे मूँदत धरत उतारत॥
दधि अरु माखन दूध निहारत २०
रैन जमायो गोरस पायो॥॥
लगे खान मनु आप जमायो।
आहट सुनि युवती घर आई॥
झलकत देख्यो कुँअर कुन्हाई २१
अंधियारे घर श्याम गये दुरि॥
दधि मटुकी ढिक श्याम गये मुरि

सकल जीव उर अन्तर बासी ॥
तहाँ कछूक चटक परकाशी २२
ग्वालिनि हरि को इत उत हेरे॥
पावत नाहीं धाम अंधेरे ॥ ॥
कहत अब हिं देख्यो नंदनंदन
कितहि गयो पछितात मनहिंमन २३
परिगये दीठ ओट मथनी के॥
सुन्दर श्याम प्राण गथनी के॥
तबहीं ग्वालिनि भुज गहि लीन्हों
कहत तुम्हैं अबतो मैं चीन्ह्यों २४

दोहा॥

कहो कहा चाहत फिरत धाम अँधेरे माहिं॥
बूझे बदन दुरावते सूधे चितवत नाहिं २५

सोरठा॥

दधि मथनी में हाथ अब का उतर बनाव हो।
सखा नहीं कोउ साथ कहिये अब कैसी बने २६

चौपाई॥

मैं जान्यों यह घर है मेरो॥
ता धोखे तुत है गयो फेरो॥
दृष्टि परी च्यूँटी दधि माहीं॥
काढ़न लग्यो तिन्हैं यहि ठाहीं २७
सुनि मृदु वचन ग्वालि मुसुकानी
तुम हो रति नागर हम जानी॥
उर लगाय मुख चुम्बन कीनो
विधिहि मनाय बिदा करि दीनो २८
हरि दर्शन विन क्षण न सुहाई
घर हन मिस यशुमति पहँ आई
सुनहु महरि निज सुत की करणी
करै अचकरी जात न वरणी २९
प्रति दिन करत दूध दधि हानी।
कहँ लगि कहौं कान नँद रानी॥
मैं अपने मन्दिर अँधियारे।
माखन धरयो दुराय सवारे ३०
सोई ढूँढि लियो हरि जाई॥

अति निशङ्क नहिँ नेकु डराई।
बूझे उत्तर तुरत बनावै ॥
च्यूँटी काढन को कर नावै ३१
सुनि ग्वालिनि के वचन सयानी
हँसि के बोध कियो नंदरानी ॥
यशुमति कहत श्याम सों प्यारे
पर घर काहे जात लला रे ३२

दोहा ॥

मम लोचन आगे सदा खेलहु सखन बुलाय
तुम्हरे बाल विनोद लखि मेरो हियो सिराय ३३

सोरठा ॥

मोपै लीजे श्याम दधि माखन मेवा मधुर।
सब कछु तेरे धाम पर घर जाय बलाय तुव ३४

सबल सिंह चौहान ॥

भीष्म पितामह और अर्जुन का युद्ध ॥

चौपाई ॥

भीषम देव कहन असलागे
सारथि रथहि चला वहु आगे

अर्ज्जुन वीर कृष्ण सों सारथ
तिन ते रण कीजे पुरुषारथ १
यह कहि के हांको रथ जब हीं
अशकुन भये बहुत विधि तब हीं
बोलत काक भयङ्कर बानी॥
बिना मेघ वर्षत है पानी २
गृद्ध सबै रथ ऊपर छाये॥
जम्बुक अपनो भाव दिखाये
उगिलि खड्ग छांड़ि के ख्यापे॥
रथ के रक्ष सैन्य बिन कांपे ३
यह अशकुन देख्यो सब सेनहिं
कुरु दल कहन लागि सब बैनहिं
नव दिन युद्ध भयानक पेखो
यहि विधि ते कबहूं नहिं देखो ४
सारथि कह गङ्गा सुत आगे
मो कहं यह अचरज करि लागे
हंसि भीषम तब कहि यह बानी
अहो मूढ़ यह बात न जानी ५

दोहा ॥

पारथ के सारथि भये निरखहु श्री भगवान
अर्जुन नहिं कुछ करि सकै सन्मुख हू श्यामसुजान

चौपाई ॥

यह कहि भीषम रथहि चलायो
सिंहनाद के हांक सुनायो ॥
डोली धरणि शेष शिर नाये
मनो घटा चल में घहराये ७
क्रोधित ह्वै शारंग शर गह्यऊ
नमित वचन नरहरि ने कह्यऊ
सावधान ह्वै जोतो गहिये ॥
पारथ की रक्षा मों रहिये ॥ ८
यह कहि सहस बाण फटकारे
अर्जुन के उर ऊपर मारे ॥
श्याम शरीर हन्यौं दश बानहिं ।
बीस बाण मारे हनुमानहिं ९
चारि बाण औरो गुण जोरे ॥
घायल नन्दि घोष के घोरे ॥

तब अर्ज्जुन लीनो शारँग धार
होय लागि अलि मारु परस्पर १०
दोउ बीर लरैं मैदानहिं ॥
क्रोधित लगे चलावन बानहिं।
दोउ महाबल अरु रण धीरा॥
मनहुं युद्ध कर धरे शरीरा ११॥

दोहा॥

यहि विधि ते अर्ज्जुन जुरे भीषम सों मैदान॥
जल थल भारत भूमि महं छाये शर असमान१२

चौपाई॥

बाण तेज हैं यह व्यव हारहि॥
जिमि जल धर वर्षत जलधारहि
सहस्र बाण अर्ज्जुन गुण जोरे॥
हांक देत हांकत हरि घोरे १३
तीक्ष्ण बाण पाण्डु सुत मारे॥
भीषम अन्तरिक्ष हनि डारे॥

अपर अष्टि अर कार्मुक धारे ॥
ते शर अहिफण के तन मारे २४
लागि असी शर कपि के तन महिं
सत्तरि शर यदु नन्दन तन माहिं ।
श्याम अङ्ग शोणित छवि छाजत
पीत वसन रंग अरुण विराजत २५
जोती गह्यो धन्य अति चापल ॥
वर्षत शर श्रावण जिमि घन जल ।
यहि विधि ते शर वर्षा कियऊ ।
शर के छांह भानु छपि गयऊ २६
नन्दिघोष रथ माधव सारथ ॥
वाण वृष्टि ने छायो भारथ ॥
भीषम यहि प्रकार बल कीन्ह्यों
तब अर्ज्जुन दृढ़ धनु कर लीन्ह्यों २७
श्री हरि कह्यो सुनहु हो पारथ ॥
सहि न जाय भीषम को भारथ
तुम से महावली यह वीरा ॥
जानत हौ जस है रण धीरा २८

दोहा॥

हाँकेपगनाहिँचलत हय शर छाये सब अङ्ग।
भीषम के सङ्ग्राम ते रण महँअचल तुरङ्ग॥१९

चौपाई॥

अर्ज्जुन जिय विस्मय करिमानो
महा क्रोध कै निज धनु तानो
देव अस्त्र पारथ धनु छाँटे।
गङ्गा सुत बीचहिँ शर काटे २०
अपर विशिख तीक्षण करधारे
ते शर पारथ के शिर मारे
अर्ज्जुन सहित भयो घायलहारे
तुरँग थकेन चलत लघुगतिकारे २१
वर्षत बाण बरणि को कहई।
पाण्डवदल लक्षन मृतिलहई
श्री पति कह्यो सुनो हो पारथ
स्यो उपाय तजो पुरुषारथ २२
यह कहि कै हरि शङ्ख बजाये
सुनि कै नाम शिखण्डी आये

अर्ज्जुन सों हरि कहने लागे ॥
रण में करहु शिखण्डी आगे २३
पाछे ह्वै शारँग कर धरिये ॥
यहि विधि ते भीषम बध करिये
अर्ज्जुन कहा सुनहु जग तारण
कपट युद्ध करिये किहि कारण २४
श्री हरि कह्यो गहरु जनि लावहु
गङ्गा सुत कहँ मारि गिरावहु ॥
जबहि शिखण्डी आगे आये
भीषम धनुष डारि शिर नाये २५

दोहा ॥

बिना अस्त्र लज्जित बदन नीचे हेरत नैन।
अस्थिर ह्वै रथ पास मे कह्यो कृष्ण ते बैन २६

चौपाई ॥

दीन बन्धु पाण्डव हित कारण
कपट युद्ध करि चाहहु मारण

अर्ज्जुन कियो शिखण्डी ओटहि
भीषम हृदय कियो शर चोटहि २७
पारथ बाण वज्र सम छूटहिं॥
भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटहिं।
गङ्गासुत यहि विधि ते कहई।
ये शर नाहिं शिखण्डी गहई २८
शर मारत अर्ज्जुन मेरे हिय॥
यहै विचार कियो अपने जिय
घाव लगे तनु कम्पै कैसे॥
शिशिर काल महँ गोधन जैसे २९
तब पारथ कीन्ह्यो सन्धानहिं
हृदय ताकि मारो सो बानहिं
चरण कमल कीन्ह्यों तब घावहि
रसना रटत निरन्तर रामहि ३०
रोम रोम यहि विधि शर मारा।
बहै प्रवाह रक्त की धारा॥
तीक्ष्ण बाण और कर लीन्हों
ते शर चोट शीस पर कीन्हों ३१

दोहा॥
भीषम को बल थकित भो मारत अर्ज्जुन तीर
तिल भरि देह न देखिये झाँझर भयो शरीर ३२

चौपाई॥
रथ ते गिरे गङ्ग-सुत धरणी॥
जग में रही सदा यह करणी॥
देखत सब कौरव दल धाये॥
हाहा शब्द घात सुनाये ३३
द्रोण कर्ण दुश्शासन अत्री॥
धनुष डारि रोवहिं सब क्षत्री
करुणा करत कहत सब बैनहिं
अहो पितामह राखो सैनहिं ३४
कुरुपति तब छांड्यो निजस्यन्दन
आयो जहं गङ्गा के नन्दन॥
सेनापति है मुकुट बँधायो॥
आप कृष्ण कर अस्त्र गहायो ३५
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्हों
दोऊ बन्धु व्याह कै दीन्हों।

परशुराम ते युद्ध बिचारो ॥
उठि के धनुष वाण कर डारो ३६
रोदन के याहि भाँति बखानत
विधि चरित्र कोऊ नहिं जानत
मेरे जिय यह बड़ो अँदेशो ३७
पाण्डव सहित जीति हौ केशो ३७
तुम पायो क्षत्रिय के धर्म्महिं ॥
यह सब दोष हमारे कर्म्महिं
तुम्हरे बल मैं कीन्ह लड़ाई ॥
यासों नहिं कछु मोहिं सुहाई ३८

दोहा ॥

भीषम घेरे खेत महँ रोवत सबै नरेश ॥
सबलसिंह चौहान कहि देखन चले नरेश ३९

चौपाई ॥

धर्म्मराज माधव संग लीन्हें ॥
रथतें उतरि गमन तब कीन्हें

अर्ज्जुन भीम और सब राजन
चले पितामह देखन काजन ४०
यहि अन्तर गङ्गासुत बोले ॥
सुन्दर अधर मनोहर डोले ॥
शर शय्या सब अङ्ग बिराजत ॥
लटकत शीस भूमि पर राजत ४१
कुरुपति कहो हमारो कीजे ॥
उत्तम भाँति शिरहनो दीजे ॥
कोमल तूल पितास्बर भरे ॥
आनि त्वरित शिर हाने धरे ४२
तब भीषम भाष्यो यह बानी ।
दुर्योधन यह बात न जानी ॥
अर्ज्जुन समय विचारा मन में
उचित सहित शिरहानो रन में ४३
सुनि अर्ज्जुन शारंग कर लीन्हें
तीनि बाण सन्धारण कीन्हें ॥
सम्मुख ह्वै ललाट मह मारे ॥
भेदि शीस शर निकसे पारे ४४

दोहा॥

कांक ओर शर पारहिं गड़े भूमि बहु वान॥
यहि विधि ते शर शय्य दिय भारत के मैदान ४५

चौपाई॥

धर्म्मराज रोदन बहु कीन्हों॥
भीषम सों कछु कहवे लीन्हों।
केवल दुर्य्योधन के पापहिं॥
परशु राम दीन्हों निज शापहि४६
ताते भयो मृत्यु को कारण॥
सम्मुख दरश करो जग तारण
हंसि भीषम यह बात बखानी
साधु नरेश परम सज्ञानी ४७
दक्षिणायन रवि नाशक कहिये
ताते शर शय्या में रहिये॥
उतरायण रवि होइहि जब हीं
करिहौं देह त्याग निज तब हीं ४८

नरोत्तमदास॥

दीनता का वर्णन

विप्र सुदामा बसत है सदा आपने धाम॥
भिक्षा करि भोजन करै हिये जपै हरिनाम १
ताकी घरनीपतिव्रता गहे वेद की रीति॥
सुबुधि सुशील सलज्ज अति पति सेवा सों प्रीति २
कह्यो सुदामा एक दिन कृष्ण हमारे मित्र॥
करत रहे उपदेश प्रिय ऐसो परम विचित्र ३
महारानि जिन के हितू यदुकुल कौरव चन्द।
सो दारिद सन्ताप को सहे रोज उठि दन्द ४
कह्यो सुदामा वाम सुनु और वृथा सब भोग।
सत्य भजन भगवान को सहित धर्म्मजपयोग ५

घनाक्षरी॥

लोचनकमल दुख मोचन तिलक भाल॥
मणिमय कुण्डल मुकुट बाँधे माथ हैं॥

ओढ़े पीत बसन गरेमों वैजयन्ती माल ॥ ॥
शङ्ख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ हैं ॥
नरोत्तम कहै सुभग रूप सान्दीपिन के ॥
तुम्हीं कहो हम वे पढ़ैया एक साथ हैं ॥
द्वारका के गये दूर दारिद करेंगे पिया ॥
द्वारका के नाथ वे अनाथन के नाथ हैं ६

सवैया॥

शिक्षक हौं सिगरे जगको गुरु
ता कहँ तू अब देत है शिक्षा
जे तप कै पर लोक सुधारत
सम्पति की तिन के नहिं इच्छा
मेरे हिये हरि के पद पङ्कज।
बार हजार लै देखु परीक्षा
औरन को धन चाहिये बावरि
ब्राह्मण को धन केवल भिक्षा७
कोदौ सवाँ जुरतो भरि पेट तो
चाहती ना दधि दूध मठौती।

शीत व्यतीत भयो सिसियात ही
हौं हठती न तुम्हैं न हठौती ॥
जो सुनती न हितू हरि सों तुम्हैं
काहेकू द्वार कै पेलि पठौती
या घरते न गयो कबहूं पिय।
टूटो तवा अरु फूटी कठौती ८
छाड़ि सबै तक तोहिं लगी बक
आठहू याम यही बक ठानी।
जातहिं देहैं लदाय लढा भरि
लैहौं लिये तू यही जिय जानी
पावें कहां ते अटारी अटा जिन
कोहै लिखी विधि टाट पुछानी
जो पै दरिद्र ललाट लिखो कहु
को त्यहि मेटि सकै री अयानी ६
नीति में चूक नहीं उन के कछु
मोको मिलैं हरि कारठलगायकै
हार गये कछु देहैं पै देहैं वे ॥
द्वारका नायके हैं सब लायकै

बातन बीति गये प्रग है अब
तो पहुँचो बिरधापन आय के
जीवन केतुक जाके लिये हरि
के अब होउ कना पड़ो जाय के १०
हूजे कनोड़े बार अपार हितू
जो पै दीन दयालु सों पाइये॥
तीनिहुं लोक के नायक हैं तिन
के दरबार न जात लजाइये॥
मेरी कहो मन में धरिये प्रभु
भूलि न और प्रसङ्ग चलाइये।
और के द्वार ते काज्र्य नहीं अब
द्वारका नाथ के द्वार को जाइये ११
द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू
आठहु याम यहे बक तेरे
जोम कहो करिये तो बड़ो दुख
जावें कहां अपनी गति हेरे
द्वार खड़े छोड़िया प्रभु के जहं
भूपति जान न पावत नेरे॥

पाँच सुपारी विचारु तू देखि कै
भेंट को चारि न अक्षत मेरे १२

दोहा॥

यह सुनि कै तिय हर्ष सो गई एक तिय पास॥
पाव सेर चावर लिये आई सहित हुल्लास १३
सिद्धि करी गण पति सुमिरि बाँधि दुपटिया खूंट
मागत खात गये चले मारग वाली बूंट १४
भाल तिलक घसि कै दियो लियो सुमिरनी हाथ
देखि दिव्य द्वारावती कियो अनाथ सनाथ १५

घनाक्षरी॥

हरि चक चौंधि गई सब सुवरणमयी
एक ते सरस एक द्वारका के भौन हैं॥
पूछे बिन कोऊ कहूँ काहू से न करै बात
देवता से साधि सब बैठे करि मौन हैं॥
देखत सुदामा जू को पुर जन धाय गहे
धाय विप्र रूपा के कहाँ को कीन्ह्यो गौन है
धीरय अधीर के हरन पर पीर के॥
बताओ बलवीर केरे धाम यहाँ कौन हैं १६

दोहा॥
दीन जानि काहू पुरुष कर गहि लीनो धाय॥
दीन द्वार ठाढ़ो कियो दीन बन्धु के जाय २७
सिंह पंवर पग धरत ही रोकि रह्यो प्रति हार
को हौ विप्र चले कहाँ कहु निज चित्त बिचार २८

घनाक्षरी॥

एक ग्राम वासी सदा रहत एकही सङ्ग
काहू याम जुदे न रहत एक मन के॥
एक ही गुरु के पढ़े विद्या वलवीसुत
एक सङ्ग खेलत न छूटे एक छन के
बीते कछु काल आये द्वारका को दीनबंधु
जात द्विजराज भेंटे चले श्याम घन के
दीजे मोहिं जाय है सुदामा मेरो नाम सुनो
हम औ कृपा निधान मीत बालापन के २९

दोहा॥
दीन बन्धु के बन्धु गुरु जानि परी मन माहिं॥
द्वार राखि प्रभु पहँ गयो द्वारपाल प्रभु पाहिं ३०

सवैया ॥

शीस पगा न झंगा तन मैं ॥
प्रभु जाने को आहि बसै कहि ग्रामा
धोती फटीसी लटी दुपटी अरु
पाय उपानह की नहिं सामा ॥
द्वार खड़े द्विज दुर्बल एक रह्यो।
चकि सो बसुधा अभिरामा ॥
पूछत दीन दयाल को धाम ॥
बतावत आपनो नाम सुदामा २१

घनाक्षरी ॥

बोल्यो द्वारपाल सो सुदामा नाम पांडे सुनि
छांड्यो राज काज ऐसी जीकी गति जानै को
द्वार का के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाय
भेटे लपटाय ऐसे और सुख मानै को।
नयन प्रेम जल भरे पूछत कुशल हरि
विप्र बोल्यो विपदा में मोहिं पहिचानै को
जैसी तुम करी तैसी करैको दया के सिन्धु
ऐसी भांति दीन बन्धु दीनन सों मानै को २२

दोहा॥

ऐसे भली विधि विप्र को कर गहि त्रिभुवनराय
अन्तःपुर को लै गये जहँ दूसर नहिं जाय २३
मणि मण्डित चौकी कनक ता ऊपर बैठाय॥
पानी धरो परात में पग धोवन को आय २४
राज रमणि सोरह सहस सब सेवकनि समेत
आठो पटरानी रहीं चकित चितै यह हेत २५
जिन के चरणन को सलिल हरत सकल सन्तापु
पाँय सुदामा विप्र के धोवत सो हरि आपु २६

सवैया॥

कैसे बिहाल ब्यवाइन सों भये
कण्टक जाल गरो पग जोये॥
हाय महा दुरव पायो सखा तुम॥
आये इते न किते दिन खोये
देखि सुदामा कि दीन दशा॥
करुणा करिके करुणा निधि रोये
पानी परात को हाथ छुयो नहि
नैनन के जलसे पग धोये २७

दोहा॥

धोय चरण पट पीत सों पोंछ्यो श्री यदुराय॥
सत्य भामा सों कह्यो प्रभु करो रसोई जाय २८
तण्डुल तिय दीन्ह्यों हुते आगे धरियो जाय
निरखि राज सम्पति सुखद दे नहिं सकत लजाय
अन्तरयामी आप हरि जानि भक्त की रीति
हृदय सुदामा मित्र को प्रकट जनाई प्रीति ३०
कछु भाभी हम को दियो सो तुम काहे न देत
चापि गाठरी काँख में रह्यो कहो क्यहि हेत ३१

सवैया॥

आगे चना गुरु मातु दये ते॥
लये तुम चाबि हमें नहिं दीने।
श्याम कह्यो मुसुकाय सुदामा सों
चोरी की बान कहो जो प्रवीने॥
गाँठरी काँख में चापि रहे अब
खोलत क्यों न सुधा रस भीने॥
पाछिली बानि अजों न गई तुम
वैसे ही भाभी के तण्डुल कीने ३२

दोहा ॥

सकुचत छोरत गाँठि को हरि हेरत त्यहि ओर
जीरण पट छोरत फटो बिथरि परे त्यहि ठौर ३३
एक मूठी हरि भरि लई दई स्वमुख में डारि
चबन चवाव लगो करन चतुरानन त्रिपुरारि ३४

सवैया ॥

काँपि उठी कमला जिय शोचत
मोको कहा हरि को मन रोंको ॥
सिद्धि छिपैं नव निद्धि छिपैं हरि
अराद्धि छिपैं यह ब्राह्मण धौं को
शोर परो सुर लोकहु में जब ॥
दूसरी बार लियो भरि झोंको
मेरु डरैं बरवशैं जनि मोहिं
कुबेर चबावैं चावर चौंको ३५

दोहा ॥

मूठी तीसरि लेतही रुक्मिणि पकरी बाह ॥
तुम्हें कहा ऐसी भई सम्पति की अनचाह ३६

कह्यो रुक्मिणी कान्ह सों यह धों कौन मिलाप
करत सुदामा आप सम होत सुदामा आप ३७
याही कौतुक के समय कही सेवकिनि आस
अहै रसोई सिद्ध प्रभु भोजन करिये जाय ३८
विप्र सहित अस्नान करि धोती पहिरि वनाय
सन्ध्या करि मध्याह्न की चौका बैठे जाय ३९

घनाक्षरी॥

रूपे के रुचिर थार पायस सहित घृत
जीती जन शोभा सब शरद के चन्द की
दूसरे पहिति भात सोंधो सुरभी को घृत
फूले फूल कान फल फूल द्युति मन्द की
पापर सुंगारी बरी वेसन अनेक भांति
देवता बिलोकि रहे देवकी के नन्द की
या विधि सुदामा जी को अच्छे के ज्यवांय प्रभु
पाछे के पछावरि परोसी आय कन्द की ४०

दोहा॥

सात दिवस यहि विधि रहे प्रति दिन आदर भाव
चित्त चलो गृह चलन को ताको सुनहु बनाव ४१

देवे हुते सो दे चुके विप्र न जानै गाथ ॥
चलती वार गोपाल जू कछु न दीन्हो हाथ ४२
रहिबो आवत जात इत कहत न आई लाज
ऐसे आवन जानसों हो आयो सब बाज ४३
हों कत इत आवत हुतो वाही पठयो पेलि ॥
कहिहों धन सों जाय के अब धन धरहु सकेलि ४४
और कहा कहिये जहाँ कान्ह नहीं के धाम ॥
निपट कठिन हरि को हियो मोको दियो न दाम ४५
इन शोचन शोचत झुरत आयो निजपुर तीर
दीठि परी एक बारही हय गजेन्द्र की भीर ४६

सवैया ॥

देखत ही राज समाज वनो गजराज
घने मन सम्भ्रम छाये
कैसेहू कान्हन के सब धाम है
द्वार के माहि मनो फिरि आये ॥
भौन विलोकि चको मन शोचत
सोचत ही सब गाँव मझाये

फूलत पैज परी सब सों अब॥
झोंपड़ी को कहूं खोज न पाये ४७

दोहा॥

पहुंचि रहे निज भवन बहु दिवस लीन्ह सुख भोग॥
अन्त गये हरि पुर सहित निज नगरी के लोग ४८

नवल दास कवि॥

भक्तों की प्रशंसा॥

दोहा॥

भक्त एक ते एक जग जनि कोउ करै गुमान॥
कोउ प्रकट कोउ गुप्त है जानि रहे भगवान १

चौपाई॥

सुनहुं उमा हरि प्रिय दुख माना।
गयो त्वरित सुनि कृपा निधाना।
रुक्मिणि वचन कहा कछु ऐसे
दीन सुमन सत्य भामहिं कैसे २
वहि ते सरस फूल जो होई॥
तौ मेरे घर आवै कोई॥

फिरहु तुम्हार अरथ सब पावा।
जाहु जहां बैठी सत्य भावा ३
प्रभु सुनि त्वरित फिरे वहि पाये
आय निकट अर्ज्जुनहिं बुलाये
तासों कहि अति वचन यथारथ
कदली बनहिं जाहु चलि पारथ ४
फूल सुगन्ध राज लै आवहु।
धावहु त्वरित गहर नहिं लावहु
कसा निरवङ्ग धनुष सम्भारी
सौं भाहि गमन कीन्ह धनुधारी ५
पहुंचे मात तुही बन माहीं॥
पारिजात जहँ बहुत बसाहीं
जग मगात जैसी फुलवारी॥
मानहुं रवि शशि किरण पसारी ६
विटप अनेक गगन लहि बाढ़े
फूलि फूलि नव पल्लव काढ़े॥
पवन छाय रहे अस माना॥
सकुच रङ्ग जनु गगन लहाना ७

नाविच फूल नरवत सम सोहा ॥
चारि जात रवि शशि मन मोहा ।
उदय प्रकाश नाम युत जोती
बकुल नषत जनु मणिगण मोती ८
फूल अनेक गिरहिं नजि डारा ॥
मनहुं गगन घन टूटहिं तारा ॥
सुमन अनेक जाति फल काहीं
दूसर गगन मनहुं कोउ नाहीं ९

दोहा ॥

कोउ शुक्र कोउ वृहस्पति कोउ मङ्गल की भाँति
कोउ कच राँचे चन्द्र उदय घन सुमन अनेकन जाति १०

चौपाई ॥

यह छवि देखि छकित भये पारथ
सुमन लेन लाग्यो हरि स्वारथ
वानर चारि रहहिं रखवारा ॥
हनूमान के चौकीदारा ११
दूरत देखि शारव मृग धाये।

हनुमानहिं यह खबरि जनाये
मानुष एक धनुष शर ताने ॥
तोरत फूल मनैं नहिं माने १२
यह सुनि पवन कुमार रिसाना
क्रोधवन्त आया बलवाना।
आय कह्यो कपि अति रिसपागी
यमपुर जावो चहत अभागी १३
देखत कुटिल अन्यायी चोरा॥
कहु वाके बल फूलन तोरा॥
तुरत फूल जानि सुनि पाऊं॥
ताहि त्वरित यमपन्थ पठाऊं १४
मै रघुबर पूजा के कारन॥
तोरत मैं जानत संसारन॥
दूसर और कौन अस आयो।
देखो रखाल सुने जिमि पायो१५
हनूमान या बिधि कहि बोले।
पारथ क्रोधवन्त रव खोले॥
डार डार में कुदत डोलत॥

मर्कट मूढ़ समुझि नहिं बोलत ९६
फल भक्षक रक्षक निज काया
महा भटन मन वाद लगाया॥
कहत अनेक कहे बिन लाजा
वीरन सों कहुं पर्यो न काजा ९७
जो रघुबर निज दूत सुनायो॥
सो तिनकी महिमा हम पायो
यहि विधि कहत बहुत दुर्व्वादा
पुनि पुनि वर्णत सहित विखादा ९८

दोहा॥

बड़े धनुर्द्धर तोर प्रभु पार को सरा न बाँध
गिरि ढोवत मर्कट मुये कहु कौने अपराध ९९

चौपाई॥

तब हनुमत रघुबरहि बखाना
रे खल चोर मर्म्म नहिं जाना॥
दीन बन्धु रघु बीर कृपाला॥
कहु त्यहि सम को दीन दयाला २०
कह्यो साथ वेर दश रावन॥

तब शिव सेतु दीन मन भावन
जबहि निर्भीषण प्रभु पद चीन्हा
सहजे सकुचि राम त्यहि सीन्हा २१
अरिहि मारि सुत लक्ष्मण समेता।
सो परिवार कौन कहै नेता॥
एकहि बाण बालि जिन्ह मारा
सुग्रीवहि शिर तिलक निकारा २२
करै राम सरितेश्वा जो चहई॥
बल बल भार बाण नहिं सहई
ताते आनि पयानन राखे॥
हनूमान या विधि कहि भाखे २३
कह पारथ निज तेज सँभारौं॥
मैं शर पर संसार उतारौं॥
कह कपि राखु सबै संसारा॥
मोहि चढाय उतारु न पारा २४
मोहि चढन करु पोढ़ बनाई॥
मानहुँ सैन्य उतारि सब आई॥
तब दोउ जने सिन्धु पहँ आये

हनूमान् अस वचन सुनाये २५
बांध बांधि के मोहिं देखावो॥
तो निज प्राण दान करि पावो
तब पारथ कीन्ह्यों धनुधारी॥
शर समूह सो सके बिचारी २६
कोटिन अर्ब्ब खर्ब्ब शर छाँटे।
शत योजन बाणन सों पाटे॥
बाण बाँध निरखत हनुमाना।
अपने जिय अन्तरज के जाना २७

दोहा॥

यह कोउ योधा महा बल मोहिं परा नहिं जानि
कपट रूप मोसन रह्यो देरिद बाँध भयमानि २५

चौपाई॥

ताहि प्रबोधि तहाँ बैठाये॥॥
तब हनुमान उत्तर दिशि धाये।
पहुँचे जिहि बन बिबिधि प्रकारा
योजन सहस देह बिस्तारा २८

अयुत कोटि पर्वत हनु लीन्हों
रोम रोम सब बन्धन कीन्हों ।
कर कांधे लघु मेरु स्वहाये ॥
धवला गिरि हि शीश धै लाये ३०
याविधि रूप भयङ्कर कीन्हा ॥
भूमि अकाश जात नहिं चीन्हा
चारि हजार कोश लहि काया
पैलि देह सब जगत देखाया ३१
बाढ़ि माथ रवि मण्डल लागा
देखत सबै देव गण भागा ॥
रवि छपि गयो भई अँधियारी
मलय होन चाहत जनु भारी ३२
गर्जि तर्जि तड़ष्यो विकराला
धायो क्रोधवन्त जनु काला ॥
गर्भ स्रवहिं तिय नृप सुखानी
रहिगा सिन्धु अकेलहि पानी ३३
अर्जुन अन्धकार जब देखो ॥
मन महँ अति अचरज करि लेखो

मन महं सोचु करत अस भाषै
याके चढ़त बांध को राखै ३४
राम भक्त हनु परम सयानो॥
नारुक में आसन अरुभानो॥
अब तो राम रखावहु मोही।
मैं जानत प्रभु सकै तोही ३५
बाना तोर मोर नहिं कोई॥
यह अपमान तोर प्रभु होई॥
मन ही मन अर्जुन अस भाषे
रत्न बांध आहिं नाहिं राखे ३६
अबे नाही प्रभु मोर उबारा॥
जस बूझै तस करहु विचारा॥
जब कछु पवन दास कहं गाढ़ा
तबहीं होत राम तुम ठाढ़ा ३७

दोहा॥

पारथ भे अति विकल तन देखि भयकुं रखोय
उर अन्तर सुमिरत खड़े तुम राखहु जग तोय ३८

चौपाई॥

तब श्री पति अपने मन जाने।
दूनों परम भक्त अरु भाने॥
कमठ पीठ महि भार न सहई
बाण बांध कौनी बिधि रहई ३९
जो हनुमान घात कै पावे॥
पारथ को यमलोक पठावे॥
मैं अति युक्ति करों अब कोई
काहू कर अपमान न होई ४०
भक्त मोर दूनों अति प्यारे॥
यह कहि श्री जगनाथ सिधारे
गुप्त रूप अति रची उपाई॥
आबिधि रहे दुवौ सर साई ४१
कमठ रूप जल भीतर कीन्हों
धार के हेठ पीठि प्रभु दीन्हों॥
या बिधि प्रभु आये जल माहीं
हनु पारथ जानत कोउ नाहीं ४२

पवन तनय अर्जुनहिं पुकारी।
धरत पाव शर बांध संभारी॥
पुनि पारथ सहमा करि भाषो
जाहु निषङ्ग बांधु हम राखो ४३
यह सुनि क्रोध हनो मन कीन्हों
आय पाय शर ऊपर दीन्हों॥
पीठि दबी सहि सको न भारा।
मुख ते छूटि रुधिर की धारा ४४
रक्त वर्ण सागर सब देखा॥
पवन कुमार अचम्भव लेखा
है शर तर कोउ जीव लुकाना
जानित कचारि भयो गड़आना ४५
लागो ध्यान करन यहि ठाईं॥
देखा शर तर बैठि गोसाईं॥
आयो लघहि लखित हनुमाना
कहि यहि मैं भेद न जाना ४६
मैं पशु बुद्ध काह यह कीन्हा॥
हरि के शिर ऊपर पगु दीन्हा

जानि पाद नहिं धर्यो कृपाला।
तुम जानत सब के उर हाला ४७

दोहा॥

त्राहि त्राहि अब त्राहि मोहिं दीन बन्धु भगवान्
मैं मतिमन्द न जान्यऊ भयो मोहिं अभिमान ४८

चौपाई॥

भक्त तुम्हार एक ते एका ॥
प्रगट गुप्त बहु भांति अनेका।
जो कोउ भक्त गुमान धरावै॥
सो प्रभु को सपन्यहु नहिं पावै ४९
कमठ रूप छोड़ा बन चारी॥
आये निकसि पिताम्बर धारी।
चरणन लोटि गये हनुमाना॥
धन्य धन्य प्रभु कृपानिधाना ५०
मैं मति मन्द अधम अपराधी॥
तुम प्रभु दीना नाथ अगाधी।
चूक मोरि कथहि खोरि लगाऊं
अब कथहि भांति माफ करि पाऊं ५१

साफ़ साफ़ नारायण भाषा॥
दूनो कर दूनो शिर राखा॥
नारायण ऋपन्यह्निं मुख भाषे
दूनो भक्त बराबर राखे ५ २
तातै पार बती सुनु ऐसा ॥॥
हनु ऋर्ज्जुनह्निं सो ऋन्तर कैसा
बार बार सुनि मगन भवानी
कह्न मृदु बचन जोरि युग पानी ५ ३

हरिगीति का॥

तुम धन्य धन्य पुरारि जाहि मुरारि सर ह्रत ऋापह्नी
प्रभु तरण तारण जग उधारण मोदि सब सन्ता पह्नी
संसार तारण कार्य्य कारण चारु कीरति गाइये
पुनि भक्त ह्नीके चरित सुन्दर ऋोर माहि सुनाइये

लल्लू जी लाल कवि॥

दृष्टान्त॥

दोहा॥

भाव सरस समुझत सबै भले लगे यहि भाय
जैसे ऋव सर की कही वाणी सुनत सुहाय १

नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात॥
जैसे बरनत युद्ध में रस शृंगार न सुहात २
फीकी पै नीकी लगै कहिये समय बिचारि
सब के मन हर्षित करै ज्यौं बिवाह में गारि ३
जाही से कछु पाइये करिये ताकी आस॥
रीते सर वर पर गये कैसे बुझत पियास ४
भले बुरे सब एक से जौलौ बोलत नाहिं
जानि परत है काक पिक ऋतु बसन्त के माहिं ५
मधुर वचन ते जात मिटि उत्तम जन अभिमान
तनिक शीत जल सों मिटत जैसे दूध उफान ६
सबै सहायक सबल के होइ न निबल सहाय
पवन जगावत आगि को दीपहि देत बुझाय ७
प्रकृति मिले ते मिलत है अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है कांजी ते फटि जाय ८
पर घर कबहूं न जाइये गये घटत है ज्योति
रविमण्डल में जात शशि क्षीण कला छवि होति
मूरख गुण समुझै नहीं तो न गुणी में चूक।
कहा भयो दिन को विभव देख्यो जो न उलूक

मूरख तहाँ हीं मानिये जहाँ न पण्डित होय॥
दीपक को रवि को उदय बात न पूछत कोय ११
निपट अबुध समुझै कहाँ बुध जन वचन बिलास
कबहूँ भेक न जानहीं अमल कमल की बास१२
क्यों कीजे ऐसे यतन जासों कार्य्य न होय॥
पर्वत पर खोदे कुवाँ कैसे निकसे तोय १३
सहज रसीलो होय जो करै अहित पर हेत॥
जैसे पीड़ित कीजिये ईष तहूं रस देत १४
कबहूं कुसङ्ग न कीजिये किय प्रकृति की हानि
गूंगे को समुझायबो गूंगे की गति जानि १५
कहा करे कोऊ यतन प्रकृति और की और
विष मारे ज्यावे सुधा उपजे एकाहि ठौर १६
धन बाढ़े मन बढ़ि गयो नाहिन मन घट होय
ज्यों जल सङ्ग बढ़े जलज जल घटि घटै न सोय१७
सब से लघु है माँगिबो यामें फेर न सार ॥
बलि पै या चतही भयो बामन तन करतार१८
होत सुसङ्गति सहज सुख दुख कुसङ्ग के थान
गन्धी और लोहार की देखो बैठि दुकान१९

ठौर छुटे से मीतहू है अमीत सतरात ॥
रविजल ऊपर कमल को जारलगारत जात २०
गुण वालो सम्पति लहै लहै न गुण बिन कोय
काढ़े नीर पताल ते जो गुण युत घट होय २१
अरि छोटो गनिये नहीं जाते होत बिगार ॥
तृण समूह को छिनक में जारत तनक अंगार २२
पण्डित जन को श्रम मरम जानत जे मतिधीर।
कबहूं बांझ न जान ही तनुप्रसूत की पीर २३
गाहक सबे सपूत के सारे काम सुपूत ॥ ॥
सब को द्यापन होत है जैसे बन को सूत २४
करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात के शिल पर परत निशान २५
कहू रस में कहू रोस में अरि सों जनि पतियाय।
जैसे शीतल तप्त जल डारत अग्नि बुझाय २६
सुख सज्जन के मिलन को दुर्ज्जन मिले जनाय
जाने ऊख मिठास को जब मुख नीब चबाय २७
जाहि मिले सुख होत है ताहि बिछुरे दुख होय।
सूर उदय फूलै कमल ता बिन सकुचै सोय २८

खाय न खरचै सूम धन चोर सबल लै जाय
पीछे ज्यों मधु माखिका हाथ मलै पछिताय २९
उत्तम विद्या लीजिये जदपि नीच पै होय॥
परे अपावन ठौर में काञ्चन तजे न कोय ३०
अरि के कर में दीजिये अवसर को अधिकार
ज्यों ज्यों द्रव्य लुटाइ है त्यों त्यों यश विस्तार ३१
जाहि बड़ाई चाहिये तजे न उत्तम साथ॥
ज्यों पलाश सँग पान के पहुँचै राजा हाथ ३२
बदन श्रवण अरु नासिका सबही के एक ठौर
कहबो सुनबो देखबो चतुरन को कछु और ३३

गिरिधर राय कवि॥

सामयिक वार्ता॥

कुण्डलिका

बैरी बंधुआ बानियाँ ज्वारी चोर लबार॥
व्यभिचारी रोगी ऋणी नगरनारि कौयार

नगर नारि को यार भूलि पर तीति न कीजै
सौ सौगन्दै खाय भूलि कै चित्त न दीजै
कहि गिरिधर कविराय घरै आवै अनगैरी
मुखसों कहै बनाय चित्त में पूरो बैरी १
बिना बिचारे जो करे सो पीछे पछिताय ॥
काम बिगारै आपनो जग में होत हँसाय
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै
खान पान सम्मान राग रंग मनहिं न भावै
कहि गिरिधर कविराय दुःख कछु टरै न टारे
खटकत है दिन रात किये जो बिना विचारे २
साईं ये न विरोधिये गुरु पण्डित कवि यार
बेटा बनिता पवँरिया यज्ञ करावनहार
यज्ञ करावनहार राजमन्त्री जो होई
विप्र परोसी वैद्य आप को तपै रसोई ।
कहि गिरिधर कविराय चतुर की यहु चतुराई
इन तेरह ते तरह दिये बनि आवै साँई ३
साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये कोय
तब लगु मन में राखिये जब लगु काम न होय

जबलगु काम न होय भूलि कबहूं नहिं कहिये
दुर्ज्जन नातो होय आप मेरे ह्वै रहिये
कहि गिरिधर कविराय बात चतुरन की नाईं
करतूतिन कहि देत आप नहिं कहिये साईं ४
चिन्ता ज्वाल शरीर बन दव लागे न बुझाय
प्रकट धुआं नहिं देखिये उर अन्तर धुंधुवाय
उर अन्तर धुंधुवाय जरे जस काच की भट्टी
जरिगो लोहू मांस रहीगे हाड़ की ठट्टी
कहि गिरिधर कविराय सुनो हो मेरे मिन्ता
वे नर कैसे जियें जाहि तन व्यापे चिन्ता ५
राजा के दरबार में जैये समया पाय ॥
जाय वहां नहिं बैठिये जहं कोउ देय उठाय
जहं कोउ देय उठाय बहुत अन बोलन रहिये
हंसिये नाहिं हहाय बात पूछे पर कहिये
कहि गिरिधर कविराय समय को करिये काजा
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहैं राजा ६
साईं अपने भाइ को कबहुं न दीजे त्रास
पलक दूरि नहिं कीजिये सदा राखिये पास

सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं दीजै ॥
त्रास दियो लङ्केश तासु की गति सुनि लीजै
कहि गिरिधर कविराय राम सों मिलिगो जाई
पाय विभीषण राज्य लङ्कपति बाजो साई ७
साई बेटा बाप सों बिगरे होत अकाज
हिरण्यकशिपु अरु कंस को गयो दुहुन को राज
गयो दुहुन को राज बाप बेटे सों बिगरी
दुशमन दावा गीर हँसे सब मण्डल नगरी।
कहि गिरिधर कविराय उन्हें काहून बताई
पिता पुत्र के बैर कहो सुख कैसे साँई ८

बिहारीलाल कवि॥

सामयिक॥

दोहा॥

कैसे छोटे नरन ते सरत बड़न के काम॥
मढ़े दमामे जात क्यों कहु चूहे के चाम १
दुसह दुराज प्रजान को क्यों न बढ़े अति दन्द
अधिक अँधेरो जग करत मिलि पावस रविचंद

बसै बुराई जासु तन ताही को सम्मान ।।
भलो भलो कहि छाँड़िये खोटे ग्रह जप दान ३
गुणी गुणी सब कोउ कहत निगुणी गुणी न होत
सुन्यो कहूं तरु अर्क को अर्क समान उदोत ४
सङ्गति सुमति न पावही परे कुमति के धन्ध।
राखहु मेलि कपूर में हींग न होत सुगन्ध ५
सोहत सङ्ग समान सों यहै कहै सब लोग ।।
पान पीक ओठन बनी काजर नयनन योग ६
को कहि सकै बड़े न सों लखे बड़े यों भूल ।।
दीन्हों दई गुलाब को इन डारन वै फूल ।। ७
शीतल नाइ सुबास की घटै न महिमा मूर ।।
पीन सवारे डारि दिय सोरा जानि कपूर ।। ८
नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोइ
जेतो नीचो ह्वै चलै तेतो ऊंचो होइ ।। ९ ।।
बढ़त बढ़त सम्पति सलिल मन सरोज बढ़ि जाइ
घटत घटत पुनि नहिं घटै बरु समूल कुम्हिलाइ १०

अनन्य दास कवि ॥

ग्रहस्थ और राजाओं का योग

पज्झटिका ॥

का होत मुड़ाये मूड़ बार ॥
का होत रखाये जटा भार ॥
का होत भामिनी तजे भोग ॥
जौलों न चित्त थिर जुरै योग १
थिर चित्त करै सुमिरन मँझार
ऊपर साधै सब लोक चार ॥
यह राज योग सुख को निधान
कोइ ज्ञान वन्त जानत सुजान २
अर्ज्जुन रु जनक पृथु आदिलोग
राजन साध्यो सब राज योग ॥
सुख राज कियो और योग सिद्ध
को अतिथि भयो इन सम प्रसिद्ध ३
यह अतिथिनहूं ते आति अनूप ॥

सुनु राज योग सिद्धान्त भूप।
सुख मारग यह पृथ्वि चन्द्रराज
यहि सम न आन तम है इलाज ४
यह राज योग है भक्ति ज्ञान
मनसा सुमिरन धुनि रूप ध्यान
जो यह न सधे धुनि ज्ञान गूढ़
तो अजपा साधन श्वास रूढ़ ५
जो यह न सधे अजपा उचार
तो इष्ट देव धरि ध्यान मार
जो ध्यान न आवे बिना देख
तो प्रतिमा थापै इष्ट वेष ६
नित प्रतिमा पूजन दरश नित्त
सोइ मूरति राखे ध्यान चित्त
यहि भाँति ध्यान उर बसे आनि
यह ध्यान राह नर नाह जानि ७
जो ध्यान न सधे न लगे चित्त।
तो नेम सहित जप मन्त्र नित्त
जो मन्त्र न विधि सों सधे राउ

तो पावन प्रभु को लेय नाउ ८
तनु शुद्ध होय मुख शुद्ध वानि
मन शुद्ध होय सर्व्वस्त जानि
मन को स्वभाव भ्रमिवो अकथ्य
तिहि सुमिरन साधन ज्ञान गत्थ ९
मुख को स्वभाव बकिवो नरेश
तिहि नाम भजन चरचा सुदेश
करि भक्ति भजन सुमिरन सुबुद्धि
मेटहिँ मनको भ्रमना कुबुद्धि १०
जित जित मनसा भरमे अनन्त
तित तित सुमिरन साधन करन्त।
कछु दिन साधन करनै उपाय
परि जात बहुरि मनसा स्वभाय ११
मनसा सुमिरन धुनि सहज लीन
यह राजयोग जानहु प्रवीन।
जो राज योग यह सधै राज।
तो मन बाञ्छित सब होहिँ काज १२
अरु कर्म्म लिप्त कबहूँ न होत।

जग जीवन मुक्ति सदा उदोत।
यह ज्ञान भेद अरु वेद साखि
अक्षर अनन्य सिद्धान्त भाषि १३

दोहा॥

राज योग सिद्धान्त मत जानि राज दृढ़ि चन्द
यहि सम मत नहिं दूसरो खोजि शास्त्र बहु छन्द १४
जो चाहो संसार सुख अरु सिद्धान्त प्रकाश
तो साधो सर्व्वज्ञ यह योग सदा अन यास १५

रघुनाथ दास कवि॥

राम नाम की प्रशंसा

दोहा॥

राम नाम की वन्दना करौं प्रथम शिरनाय
जासु कृपा से सिद्ध सब भये सुखद समुदाय १

कुण्डलिका ॥

राम सनेही साधु सोइ करे राम से नेह ॥
वेद मते रघुनाथ भनि पन्थ पुरातम एह ॥
पन्थ पुरातम एह खेह ताके मुख परई ॥
राम नाम के बीच नीच जो संशय करई ॥
करे न वचन प्रमाण कहै जो जनक विदेही
कलि में तुलसी दास भये पुनि राम सनेही ॥ २

घनाक्षरी ॥

राम नाम जपत महेश शेस औ गणेश
नाम जपि उमा आवागवन मिटाव है
राम नाम जपत अनन्त सन्त सनकादि
नाम जपि ध्रुव धाम अचल सो पाव है
राम नाम जपि मुनि बालमीकि ब्रह्म भये
बड़ोई प्रभाव वेद नेति कहि गाव है
कहै रघुनाथ सोई राम नाम भल मध्य
नाहि जो विदूषे सो तो मूढ़न को रावहै ३
राज की चर्लान कहा जाने खर कूकर औ

भोगी कहा जानै योग रङ्क सुरराव को गोमल्ल को जीव कहा जानै बास पङ्कजको को लखत दासी पतिव्रता केरे भाव को कूप केरे दादुर ते जानै कहा सागर को नर की सो रङ्क काक हंस के स्वभाव को कहै रघुनाथ ऐसे कूर नर मूढ जौन तौन कहा जानै राम नाम के प्रभाव को ४

सवैया ॥

राम के नाम के अक्षर है महिमा
कहि शेष सकै न करोरी
जासु प्रसाद सुरासुर में हर
हर्षि हलाहल पान करोरी
जन रघुनाथ के माथ खई जो
सजीवनसार सुधारस कोरी
रकार श्रीराज कुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ५
सत्य रकार रहै जो सदा अरु
चित्त अकार सचेतन जोरी।

आनन्द रूप मकार मिदं हरि
नाम सच्चिदानन्द कह्योरी।
जन रघुनाथ के साथ स्वद्ध
शिव वाक्य महा रामायण कोरी
रकार श्री राजकुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेशकिशोरी ६
नाम प्रभाव गुनै न सुनै फुर
फेरि न देखिये ना मुख ओरी
ओर विलोकत खोरि लगै दुसि
ब्रह्म पुराण के माहिं लखोरी
जन रघुनाथ के साथ स्वई जो
करै प्रण शीघ्र सु लम्पट कोरी
रकार श्री राजकुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ७
ब्रह्म में रेफ रमी पुनि धर्म्म में
कर्म्म में रेफ प्रसिद्ध न चोरी
राधा के नाम में आदि रकार
नारायण मध्य रकार लसोरी

जन रघुनाथ के माथ रवई
सब नाम न को कृत पूरण जोरी
रकार श्री राजकुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेशकिशोरी ८
सप्त ऋषय उपदेश से वेस दई
कवि कोकिल त्यागि ठगोरी।
नाम मरा विपरीत पुकारि
भये निस पाप ऋषय शिरमोरी
जन रघुनाथ के माथ रवई
ज्यहि हेतु चरित्र बनो पातकोरी
रकार श्री राजकुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ९
राम चरित्र लगे शिव बांटन
बांटे जु तैंतिश २ कोरी
तैंतिश लाख सहस्र तथा परि
तैंतिश तैंतिश वर्ण दशोरी
जन रघुनाथ के माथ रवई
युग अङ्क बचे लिये आपनिहोरी

रकार श्री राजकुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी १०

दोहा॥

सिफ़त करै जो खाँड की धरै न मुख अभिराम
लहै स्वाद रघुनाथ किमि तिमि सुमिरन बिन नाम ११
सङ्केतन परिहास युत अस्तोभन हेलन
जपै नाम रघुनाथ सोउ दलै पाप असितन्न १२
सब ज्ञानी ध्यानी सबै दाना शूर सुजान
अति पवित्र रघुनाथ सब जो सुमिरै भगवान १३
शठ अशिष्य विषपाट को तिन्है न कहिये एह
राम उपासक सों कही जो सुनि उरधरि लेह १४

मलूक दास कवि॥

हरि गुण वर्णन॥

चौपाई॥

वामन ह्वै गये बलि के द्वारे
दीन बचन हरि जाय पुकारे

मांगु मांगु बलि राजा बोले।
मने कीन्ह गुरु वचन अगोले १
साढ़े तीनि पैग भुइं मांगी॥
राजा कह तुम बड़ अभागी
तुम कछु दक्षिणा मांग न जानी।
मैं देत्यों आधी रजधानी २
तब वहिं कहा कर्म कर हीना।
नापि लेहु मैं यह वर दीना।
बढ़े कृष्ण तव लागि अकाशा।
चकित भये बलि देखि तमाशा ३
तीन लोक तीन्हें पग कीना।
बलि छलि राज्य इन्द्र कहं दीना।
आधे पग को पृष्ठ न पाई
तब रीझे गोविन्द राई ४
तब हरि कह्यो मांगु वर राजा।
सब विधि पुरवों तोरे काजा
तब बलि कह हरि इतना कीजे
सदा आप मोहिं दर्शन दीजे ५

ऐसे राम वचन के गाढ़े
राजा बलिके द्वारे ठाढ़े
जहँ जहँ परे दास को गाढ़ा
मानहु राम काल्हि ते ठाढ़ा ६

मोती लाल कवि ॥

शुक्राचार्य्य के जन्म की कथा

चौपाई ॥

एक समय गिरिवर कैलासा
सहित शिवा शिव करैं विलासा
करि कछु काल राम गुण गाना
महादेव उठि गये अन्हाना॥
बैठीं गिरिजा सदन सुहाये॥
ताही समय देव ऋषि आये॥
लखिके उमा विनय बहु कीन्हा
पाद्यार्घ दै आसन दीन्हा १
बैठे नारद अति सुख पाई।

तबहिं उमा मृदु वचन सुनाई
धन्य भाग्य मुनि आज हमारे॥
कृपा कीन्ह इहवाँ पगु धारे ३
कवहि कारण आगमन तुम्हारे
कहु ऋषि सो अब करी बिचारे
यह सुनि नारद वचन उचारे
चित दै सुनिये हाल हमारे ४

दोहा॥

बहु दिन बीते ब्रह्मपुर मन महं भयों उदास
शिव दर्शन के कारण चलि आयों कैलास ५

चौपाई॥

शम्भु कहाँ गये शैल कुमारी।
सो हम सों तुम कहो बिचारी
बोली वचन उमा हित कारी
मज्जन करन गये त्रिपुरारी ६
पुनि नारद कह वचन बखानी
सुनहुं एक आश्चर्य्य भवानी
नर शिर माल शम्भु उरजेऊ

तुम जानहुं कछु तिन कर भेऊ ७
उमा कहा मुनि मैं नहिं जानउं
मिथ्या तुम मन काह बखानउं
तब नारद कह वचन रसाला।
तुम्हरे शिर की है वह माला ८
तुम ते कछु शिव अन्तर राखा
जो यह बात कबहुं नहिं भाषा
जब आवैं शिव करि अस्नाना
तब तुम पूछहु सकल बिधाना ९

दोहा॥

यह कहि नारद नाय शिर भवन गये सुख पाय
तब मुनिवर के वचन सुनि उमा बैठि दिल लाय १०

चौपाई॥

यहि अन्तर शङ्कर चलि आये
देखी उमहिं विषाद बढ़ाये॥
तबहि शम्भु बोले मृदु बानी
कयहि कारण दुख कीन भवानी ११
तबहि उमा कह पद शिरनाई

संशय एक सुनहुँ मम साईं
तुम्हरे हृदय मुराड की माला
सो किहि के शिर कहहु कृपाला १२
तब शङ्कर बोले मुसु काई॥
को तुम्हारि यह मति भरमाई
मुराड माल मम हृदय भवानी
कथा ताहि की सुनहुँ सयानी १३
जब जब जन्म तुम्हारो होई॥
राम कृपा ते व्याही सोई॥
समय पाय जब त्यागहु देही
तब तब शिर को माल करेही १४

दोहा॥

जेते जन्म तुम्हारि भे देह तजे कारि भोग॥
तेते शिर की माल किय प्रिया तुम्हारे शोग १५

चौपाई॥

यह सुनि गिरिजा गिरा उचारी
सुनहुँ वचन मम नाथ पुरारी

तव अवतार भयो प्रभु एका।
किहि कारण मम जन्म अनेका १६
मोरे मन प्रभु भयो अँदेशा।
सो समुझाय कहहु विश्वेशा
तब शिव बोले गिरा सुहाई॥
हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई १७
बीज मन्त्र रघु नायक केरो॥
सो मम हिय किये सदा बसेरो
ताते मोर होइ नहिं नाशा॥
डरै काल तम मन्त्र प्रकाशा १८
बीज मन्त्र तुम जानत नाहीं।
ताते जन्म धरहु बिपुलाहीं।
तब गिरिजा बोलीं कर जोरी
विश्वनाथ सुनु विनती मोरी १९
दासी जानि कृपा अब कीजै।
बीज मन्त्र हम को प्रभु दीजै॥
प्रेम सहित हम सुनब कृपाला
यासों कहिये दीन दयाला २०

दोहा॥

शङ्कर बोले वचन तब सुनहु प्रिया मम बानि।
विपुलजीव सब शैल पर किहि विधि कहौं बखानि॥

चौपाई॥

जो यह मन्त्र सुनै कोइ पावै॥
ताके काल निकट नहिं आवै।
अजर अमर सो होइ भवानी
ताते किहि विधि कहौं बखानी २२
तब गिरिजा कह वचन सुहाई
जीव सकल प्रभु देहु भगाई॥
तब शङ्कर चितयो करि क्रोधा।
भागे जीव विकल चहुं कोधा २३
आदि पिपील जीव जहं ताई
सो चट पट सब गये पराई॥
जीव रहित गिरि देखि कृपाला
बैठि बिछाय नाग रिपु छाला २४
ढिग बैठीं गिरिजा अनुरागे॥
तब शिव बीज सुनावन लागे॥

जिहि तरु तर बैठे गिरि नाहा
तहं एक नीड़ कीर कर राहा २५

दोहा ॥

तिहि मन्दिर मों अण्ड एक धरि खग गयो उड़ाय
जो भावी सो ना मिटै सुनहु युधिष्ठिर राय ॥ २६

चौपाई ॥

अण्डा जीव सुनै मन लाई ॥
बीज मन्त्र शिव उमहिं सुनाई ॥
कहत सुनत उपजत सुख नयऊ
बारह वर्ष बीति तब गयऊ २७
जो २ मन्त्र उमहिं शिव दीन्हा
अण्ड फूटि सो सब सुनि लीन्हा
द्वादश वर्ष बीति जब गयऊ
निद्रा वश गिरिजा तब भयऊ २८
सोवत जानि गिरीश कुमारी ।
तब तें कीर दई हुङ्कारी ॥
एहि अन्तर कहि कथा सिरानी
शिव देखा गई सोय भवानी २९

उमहिं जगाय कहा शिववानी
कहँ लगि सुन्यों सो चीज सयानी
जहँ लग सुना कहा सब गाई
अन्तर लखि शिव कह अन खाई ३०
कथा पुराण में कहा बखानी
ऊङ्कारी को दीन भवानी॥
उमा कहा प्रभु मैं गइ सोई
देखहु नाथ जीव कोउ होई ३१
तब शङ्कर देख्यो करि ध्याना
सुन्यो बीज खग कीर सुजाना।
कर त्रिशूल ले उठे रिसाई
देखि कीर उड़ि चल्यो पराई ३२

दोहा॥

पाछे शिव धावत फिरे किये क्रोध सुखमूल
भावी बश नृप कठिन है छूट न शम्भु त्रिशूल ३३

चौपाई॥

जहाँ जहाँ खग शरणहिं भाषी
शिव तस्कर लखि सके न राखी

भाग्यो खग व्याकुल अति शोका
भ्रमत फिर्यो सारे त्रैलोका ३४
जब अति विकलकीर मनभयऊ
उड़त उड़त व्यासा श्रम गयऊ
व्यास नारि त्यहि समय सुआरा
मज्जन करि तब रविहि निहारा ३५
नाहि तबै आई जंभु आई॥
वदन पन्थ खग जठर समाई
पाछे शम्भु पहूँचे आई॥
शम्भु देखि त्रिय माथ नवाई ३६
बोले शिव सुनु ऋषि की नारी
चोर हमार तु देहु निकारी॥
सुनि त्रिय कहा नाथ नहिं जानौं
यहां चोर को मर्म बखानौं ३७
तब तिय सों कह शम्भु सुजाना
जठर तुम्हारे चोर समाना॥
ताही को हम ढूंढत अहई॥
मृषा न बात सत्य हम कहई ३८

दोहा ॥

हे त्रिपुरारि रिपु मोरहै करहु वचन विश्वास।
नाहिं तो अबही मुनिप्रिया करो तुम्हारो नाश॥

चौपाई ॥

यहि अन्तरहि व्यास मुनि आये
देखि शिवहि पद शीस नवाये
समाचार सुनि कहा मुनीशा।
वचन हमार सुनो जग ईशा ४०
त्रिया जाति प्रभु बधना कीजै।
बालक होइ तुम्हहूं सो लीजै
मुनि के वचन सुने अति हेतू।
भये प्रसन्न तबै वृषकेतू ४१
पुनि मुनिसों तब कह्यो महेशा
दिह्यो पुत्र त्यहिं तजो अंदेशा
पारिशा जोरि मुनि विनती कीन्हा
है प्रसन्न तब शिव वर दीन्हा
होइहि पुत्र महा विज्ञानी॥
तासु चरित्र तिहूं पुर जानी

वर दै शम्भु गये कैलाशा
मुनिहिं पुत्र की उपजी आशा॥४३

दोहा॥

पूरण दिन बालक भयो शुक ते सुनहु अगारि
शुकाचार्य्य अस नाम तिहि राखा व्यास विचारि

कृपाराम कवि॥

क्षमा सहन शीलता और मनो बन्धनता
का वर्णन॥

चौपाई॥

सुनि उद्धव के मृदु शुभ वचना
जनु पियूष सानें बहु रचना।
अति कृपालु सन्तन सुखदायक
बोले गिरा मधुर यदु नायक१
हे उद्धव ऐसो नहिं कोई॥
दुर्ज्जन वचन क्षुभित नहिं होई

मर्म बाण लगि असदुख नाहीं
दुष्ट बचन जस घाव पिराहीं २
दुर्जन बचन सहै जो साधू॥
उन को यश गुण शील अगाधू
सहन शील बिन साधु न होई
है अति कठिन सहै जन कोई ३
परमैं तोहिं उपाय बताई॥
सहन शीलता उर ठहराई॥
सोसों सुनहु एक इतिहासा॥
जा सुनि होय हिये परकासा ४
भिक्षुक एक ज्ञानमय भाखी।
ताको तोहिं सुनावों साखी॥
दुष्टन कियो बहुत अपमाना
ताडन मारि दीहि बिधिनाना ५
तिन भिक्षुक गाथा एक गाई
कुमति आपनो धोय बहाई।
सो अब सुनो सुचित ह्वै मोसे
निज जग जानि कहत हौं तोसों ६

दोहा॥

मालव देश सु वेश अति भूसुर एक धनवन्त
कृषी वणिज मन्नन करै कामी कृपण असन्त

चौपाई॥

अति लोभी क्रोधी यश हीना
घनो द्रव्य रह सदा मलीना
जो नर होइ बहुत धनवन्ता॥
सुख जासों पुनि लहै न सन्ता ८
निज तनु को पीड़ा पुनि देई॥
सुत दार हित करै न तेई॥९॥
देव पितर गण सन्त न पोषै
भगिनिहिं भूलि कबहूं नहिं तोषै ८
सो कदर्य जाके गुण ऐसो॥
यहि ते पाप रूप कहु कैसो।
वह कदर्य्यो भूसुर अति भयऊ
सब जग में अति अपयश लयऊ १०
बन्धु ज्ञाति भिक्षुक निज तनहू
इनहू हेतु धन खर्चै न कबहू॥

सुत आदि कल पै बहु भाँती
साति भृत्य दुख सहैं दिनराती ११
कन्या अरु कलत्र कुल सारा
जे सम्बन्ध सगे संसारा ॥
ते सब द्रोह निरन्तर करहीं
ताको प्रिय नहिं कोऊ धरहीं १२
ऐसो पाप देखि अति ताको
यम समान चित्त है जाको ॥
धर्म्म काम ते सब विधि हीना
दुहू लोक के सुख करि छीना १३
जिन हित पञ्च यज्ञ जन करहीं
गेही सकल दण्ड नित भरहीं
सकल देव तासों करि कोपा ॥
तिन करि भयो विप्र धन लोपा १४

दोहा ॥

कछु धन चोरी ते गयो कछु ज्ञातिन हरि लीन
कछु धन पावक ते जरयो भयो काल तन छीन १५

सोरठा ॥

विप्र भयो अति दीन राज दण्ड बहु धन गयो
यहि बिधि सब धन छीन भयो तासु अपमान बहु १६

चौपाई ॥

बहुत कष्ट करि धन उपराजा
दियो न खायो मो बिन काजा
तब त्यहि उपजी चिन्ता भारी ॥
निशि दिन धन हित भयो दुखारी १७
महा ताप तापित सो भयऊ ॥
नयन प्रबाह शोग उर छ्यऊ ॥
ऐसी बिधि उपजा बैरागा ॥
होइ जासु करि जग दुख त्यागा १८
तब सो द्विज बोला अकुलाई
धिक २ अधम न मोसम कोई
अहो वृथा मैं बहु श्रम कीन्हा
आप आप को दुख बहु दीन्हा १९
मैं धन हीन्ह बहुत श्रम पाई ॥
सो भा जस सपने सुख जाई ॥

मैं खायो नहिं दियो न काहू।
केवल अपयश भा यहि लाहू २०
इत सुख लहै न उत सुख होई
उभय लोक निज कर तिन खोई
बहुत झूंठ कहि जिन धन जोरा
तिन कहं यम पुर विपति कठोरा २१
परम यशस्वी बहु गुण वन्ता
पण्डित अरु जे बड़ कुल वन्ता
सकल शिरोमणि [illegible] सबजाना
अति कमनीय रूप जग माना २२

दोहा॥

ऐसे नर जो जगत में जो यद्यपि कछु लोभ॥
तो सब गुण अवगुण भये त्याहि पुनि कछु अनशोभ॥

चौपाई॥

जैसे रूपवन्त नर होई॥ ॥
कौन्यहुं अङ्ग विघ्न नहिं कोई
होत कुष्ट रक्तक भा जाही॥
सकल रूप शृङ्गार बनाही २३

ऐसहि थोरे भाग्यहि लोभा
मिटै सकल गुण रूप न शोभा
जब ते धन हित उद्यम करई॥
बहुत न होत सुख सब धरिहूई २५
तब ते शोक त्रास भय पावे॥
चिन्ता पावक नितहि दहावे॥
सिद्ध भये अरु रक्षन हेतू॥
पुनि ते सहैं कष्ट अघ केतू २६
भोग न करै नाश जब होई॥
तब पुनि बहु दुख पावे सोई
हिंसा दम्भ मृषा अरु चोरी॥
काम क्रोध मद गर्व्व बहोरी २७
वैर भेद अरु गत विश्वासा॥
बहुत सपर्द्धा है हरि दासा॥
पुनि तिय सङ्ग द्यूत मदपाना॥
पन्द्रह महा अनर्थ बखाना २८
षट हिंसादि प्रथम धन हेतू॥
होहिं अनर्थ महा धन केतू

अथे अर्थ नद अनरथ होई
मदले आदि कहे सब जोई २९
जो चाहे कोउ निज हित कीन्हा
इनहिं दूर करि देय प्रवीना
अर्थ नाम सुनि भूलहिं लोका
बिन विचार पावैं दुख शोका ३०
भ्राता पिता पुत्र अरु दारा॥
स्वजन सुहृद जे निजपरिवारा
कौड़ी दीस लागि अज्ञानी
बैर करहिं सुखतजि अभिमानी ३१

दोहा॥

आप आप में बैर करि युद्ध करैं नर मूढ़॥
तिहि मारैं आपन मरैं समझैं अर्थ न गूढ़ ३२

सोरठा॥

धन हित निज प्रिय प्रान तजाहिं नाहित्तणसदृशाते
अनिअघ दोष निदानजाहिं मूढ़पुनि अधमगति ३३

चौपाई॥

जा तन को याँचहिं नित देवा
मिलै न सो लावहिं नित सेवा
सो नर तन तामैं द्विज जाती॥
सो तनु पाय बहुरि दिन राती ३४
भज्यो न कृपा सिन्धु सुख धामहिं
खोवै मूढ़ रत्न बिन कामहिं॥
निज हित करै न नर तनु पाई
दुख बहु सहै अधोगति जाई ३५
यह नर देह मुक्ति कर द्वारा॥
ताहि पाय कस भूलु गंवारा॥
जो अनर्थ नामहं मन लावा
मूढ़ जन्म तिन व्यर्थ गंवावा ३६
देव पितर ऋषि भूत सहाया॥
पुत्र मित्र गुरु स्वजन रु जाया
घर धन होइ तोपि नहिं इनहीं
जाहिं अधोगति बड़ दुख तिनहीं ३७

सो तनु धन में व्यर्थ गवांयो ॥
भव दुख ते नहिं आप बचायो
अब जप तप करि अङ्ग सुखाई
भजों सु हरि पद मन चित लाई ३८
दोहा ॥
अनुमोदन जो करहिं सुर तो मम कारज होइ
यद्यपि मैं अति दुष्ट हौं हरिपद दूरन कोइ ३९
चौपाई ॥
नृप खट्वाङ्ग घरी द्वै माहीं ॥
प्रभु पद गयो न जहँ जग जाहीं
प्रभु सम को कृपालु जग माहीं
जन को प्रकट होत पल माहीं ४०
मन वच काय भजौं अब ताहीं
दीन बन्धु श्रुति कह नित जाहीं
निश्चय करि ममता तजि भूरी
भिक्षुक भयो बुद्धि अब रूरी ४१
क्षिति विचरै मन गहि एकाकी
इन्द्रिय युत निग्रह अति जाकी

भिक्षा हेतु जाय सब ठामा।
फिरै अलक्षित पुर गृह ग्रामा ४२
भिक्षुक विप्र वृद्ध को जानी
दुष्टन तिरस्कार बहु ठानी॥
कोऊ दण्ड छीनि लै तासू
काहि दुर्व्वचन देय कोउ त्रासू ४३
पात्र कमण्डलु कोउ लै छीनी
मारग रोंकि मारि बहु दीनी
कोउ कन्था को करि परिहारू
हरहिं चीर कोउ बिनहिं विचारू ४४
हरिगीतिका॥
कोउ देत मारि सुकारि बहु बिधि कहहिं मंद अचेत हैं
कोउ देत बासन बसन फेरि सु लेत बहु दुख देत हैं
कोउ भजत भिक्षा अन्न लै तिहि मांऊ कोउ थूकै घना
कोउ मूति शिर पर धूरि डारैं तरजि बांधि परा मनो ४५
दोहा॥
कहहिं मूक तें बोलु रे जड वह मौनी होइ॥
नहिं बोलै तो माहि सब मारहिं नर पशु सोइ ४६

सोरठा॥
एक नारिहि कहि ताहि चोरचोर यह मन्द है
कोउ डारें पुनि वाहि एक कहैं यहशठमहा४७
चौपाई॥
भयो सकल धन हीन अभागा
तब यहि शठ कहँ भयो विरागा
सकल कुटुम्ब त्यागि यहि दीना
उदरनिमित्त वेष धरि लीना ४८
देखो यह कैसा है मोटो॥
महा प्रबल अन्तर को खोटो
देखो हम पनि सगरे हारे॥
यहि के मन न भयो दुख भारे४९
धीरजवन्त अचल यह कैसो
पवन प्रचण्ड मेरु गिरि जैसो।
भाँति कादि दुख भाषे जैसे
तिन बहु भाँति रहे सब तैसे ५०
वर्षा शीत उष्ण दुख झेले॥
ये दैविक दुख जानहु तेते॥

ज्वर अरु ताप उदर बहु रोगा
शिर अरु चरण बहु देहि कशोगा ५१
ऐसे बहु विधि दुख तिन पावा
सुख नहिं कबहूं तिहि ढिग आवा
पर तिन कछु न मन में आने
अपने करे कर्म्म तिन माने ५२
तब तिन भाषी गाथा नीकी ॥
पावन परम सुखद सब जीकी
सुख दुख देन हार को नाहीं
यह नर आप आपनो द्रोही ५३
नहिं दुख देन हार ये लोगा
नहिं यह देह न ग्रह सय्योगा
नहिं सुर कर्म्म न हीं कोउ काला
ये सुख दुख सब मन जञ्जाला ५४
जगत चक्र में मन ले डारे ॥
दुख सुख मन पुनि आप विचारे
मन सब करै विषय नित भोगा
नाहित होइ कर्म्म सय्योगा ५५

पुनि सत रज तम बहु विस्तारा
तातें योनि विविधि परकारा।
देह योग ते बहु दुख होई॥
मन बिन तन दुख देह न कोई ५६
दुखदायक यह मन निरधारा।
कहें सन्त श्रुति विविध प्रकारा।
मन के हारे हारहिं लोका॥
मन जीते सो जन होहिं विशोका ५७

दोहा॥

अव्यय अविकारी सदा ईश्वर रहित प्रकाश
विद्या युत यह आतमा मन करि भव दुख दास ५८

चौपाई॥

मन सों बंध्यो अविद्या माहीं।
निज बन्धन सुधि अहै न ताहीं
विषया विष सम लखै न सोई
खाय सुधा सम पुनि दुख होई ५९
ब्रह्म सखा यह जीव कहावै
मन के सङ्ग घनो दुख पावै॥

मन विषयन कर जब परिहारू
तब हि शुद्ध है ब्रह्म विचारू ६०
जिन अपनो मन बश करि लीना
नहिं करनो कछु नाहि प्रवीना
जिन अपनो मन वश नहिं कीना
तिन करि कर्म कहा फल लीना ६१
षोडश महा दान जो देई ॥
एकादशी कोटि करि लेई ॥
अरु निज धर्म करै बहु भाँती
यम अरु नियम करै दिन राती ६२
श्रुति पुराण बहु भाँति निरूपा
और सकल धर्म अनुरूपा
किये सकल साधन युत नेमा।
मन वश बिना वृथा सब प्रेमा ६३
मन बश करण हेतु सब वेदा
साधन विविध कहैं तजि खेदा
मन निग्रह ते सब फल पाई
बिन मन निग्रह सकल नशाई ६४

दोहा॥

मन वश भयो सुजाहि को विधि कछु ताको नाहिं
जाको मन वश है नहीं विधि सब ही वहि नाहिं ६४

क्षेमकरण चावि ॥

भोजन प्रकार वर्णन॥

नरिन्द छन्द॥

भे ज्यवनार तयार तरह ते रघुवर [illegible] विचारी
अनुज समेत मनुज पति मन्दिर सुर नर मुनि मन हारी
बैठि वरासन आसन पासन चामन को अधिकारी
गेडुआ थार कटोर कटोरी पञ्च पात्र अरु झारी १
तिन महँ भोजन वस्तु प्रकाशित शीतल सरयू वारी
मुरबा मेव मिठाइ विविधि विधि व्यञ्जन अरु तरकारी
पूरी पापर पुआ कचौरी फुलका भाँति संवारी
खीर महीर दूध दधि सुन्दर नूतन घृत हितकारी २
बरा विरञ्ज बरी बरियां बहु मुंगुछ मसरंगी पारी
अंब वाअँ विलिया पन वा भंटचा पहिती परम पियारी

खरिका खंडर खाजा रेनुआ छिमियाँ कौ छलकारी
परवर पनस तरोइ करैला छन्नक सेमि सँवारी ३
मेथी मरस चना चौराई सोवा सर्ष प भारी॥
पालक पोय वयर कुआ कुलफा बथुआ आदि सभारी
फल औ फूल मूल पत्रन के सालन विविध प्रकारी।
अमित अँचार भाँति भाँतिन के चटनी की चटकारी ४
सिरका शक्कर कन्द रई पुनि मिसिरी चूरण चारी
खाजा खुरमा पेठ पिराकैं माठ मठुलियाँ न्यारी
गुनी घेवरा ल्यडुआ बरफी बुँदियाँ बहुत करारी
पाक प्रकार कंवनि विधि बरणौं जहँ सिधासि अन्नहारी ५
जेंवत आप ज्यवादत आदन कहि २ स्वादु प्रचारी
तनिक अवर जेंवहु मोरे लालन कहि परसत महतारी
यहि विधि जेंइ यतन ते अँचइ पुनि प्रगु पलँगा पर धारी
लवंग कपूर जाइफल जावी एला फाल सुपारी ६
पान पाय परिपूर मसालन उचित २ अनुसारी
पाँय पलोटत भरत भरत सुख लक्ष्मण पवन सँचारी
पीकदान रिपु मदन लिये कर सीता पान प्रदारी।
दासी दास अनेक त्यहूँ पर सेवत हैं ये चारी ७

यामिनिगत युग याम जानि प्रभु नयन उनींद निहारी
प्रभु अनु प्रण मन पाय बन्धु सब निज २ शयन सिधारी
अज अद्वैत भक्त हित ननु धरि दशरथ सदन विहारी
क्षेम करण सिय राम स्वामि को बार २ बलिहारी ८

सीताराम दास॥

रामनवमी की प्रशंसा॥

सोरठा॥

शेष न पावहिं पार राम जन्म उत्सव महा॥
आई करन जुहार मुद मङ्गल तिहुंलोककी १
हरण पाप दुख जाल मुक्ति दानि सरयू नदी
कियो भक्त को माल सेवक सीता राम तहं २

चरण दास कवि॥

स्वरोदय ज्ञान वर्णन॥

दोहा॥

चारि वेद को भेद है गीता को है जीव॥
चरण दास लखु आप में तो में तेरा पीव १

सब योगन को योग है सर्व ज्ञान को ज्ञान॥
सर्व सिद्धि की सिद्धि है तत्व स्वरन को ध्यान २
ब्रह्म ज्ञान की जाप है अजपा सोहं साध॥
परम हंस के जानि है जाको मतो अगाध ३
भेद स्वरोदय सो लहै समुझै श्वास अश्वास
बुरी भली तामें लखै जो न सुरति परकाश ४
शुकाचार्य्य गुरु कृपा करि दियो स्वरोदय ज्ञान
सबसों यह जानी परी लाभ होय की हान ५
इंगला पिंगला सुषुमना नाड़ी तीनि विचार
दाहिने बायें स्वर लखै लखै धारणा धार ६
पिंगला दाहिने अङ्ग है इंगल सु बायें होइ
सुषुमन बीचो बीच है जब चालै स्वर दोइ ७

भिषारी दास कवि ॥

छन्द सङ्ख्या का वर्णन॥

दोहा॥

द्वै कलके द्वै भेद हैं जानो श्री मधु छन्द
मही सारु अरु कमल ये तीनि त्रिकलके बन्द १

चारि मत्त प्रस्तार में पाँच वृत्ति निरधारि।
कामा रमणी नरेन्द्र अरु मन्दरहारिहि विचारि २

सोरठा ॥

पञ्च मत्त प्रस्तार आठ भेद युत हरि प्रिया ॥
तरुण चारु पञ्चार बीर बुद्धि निशि यमकशशि ३

दोहा ॥

ताली रमा नगानि का जानि कला कर ताहि।
मुद्रा धारी वाक्य अरु कृष्णा नायको चाहि ४
हर अरु विष्णु मदन गनो अधिको होत निमित्त
षटकल तेरह भेद के प्रकट तेर हो वृत्त ५
सात मात्र प्रस्तार को शुभ गति जानो छन्द।
वृत्त यकीस प्रकार हैं चारि भाँति गति वन्द ६
आठमत्त प्रस्तार में तिन्हा दिक उन मानि ॥
सहित हंस मधु भार गति चौंतिस वृत्त बखानि ७
नवमात्रा को अमित गति पचपन वृत्त विचारि
करो यगन् हारी गनो नस वसुमती निहारि ८
दश मात्रा के छन्द में वृत्ति नृवासी होय ॥
तम्बो हादिक गतिन सँग बरणत हैं सब कोय ९

ग्यारह कल में एक से चौवालिस गनि वृत्ति
तहं अहीर लीला अपर छन्न माल गनि मिति १०
बारह मात्रा छन्द गनि तमायो अमित कर्णीश
होत किये प्रस्तार के वृत्त तुसै तेतीस ११
नराचिकादिक तेरहैं कल की गनि गनि लेहु
वृत्ति वृद्धि के तीनि से सत छत्तीस कहि देहु १२
चौदह मात्रा छन्द गनि शिष्यादिक अब देखि
भेद छसे दश होत हैं प्रस्तारो करि देखि १३
पन्द्रह मात्रा छन्द गनि आदि चौपई जानि
नव से सत्तासी कहत वृत्त भेद उनमानि १४
सोरह मात्रा छन्द गनि रूप चौपई लेखि॥
पन्द्रह से सत्तानवे जानो भेद विशेषि १५
सत्रह मात्रा छन्द में धारी त्रिजयो नीक॥
बाला तिरग पचीस से चौरासी हैं ठीक १६
प्रकट अठारह मत्त को रूपा माली होइ॥
वृत्त सु इकतालीस से इक्यासी जियजोइ १७
उत्तम उन इस मत्त में रति लरवादि बिचारि।
सत सठि से पैं सठि कहत वृत्ति भेद निरधारि १८

होत हंस गति आदि दे छन्द निमित्तो बीस॥
दश हज़ार नवसै उपर गनो भेद छ्यालीस १९
पवङ्गादि इकईस में कीजे छन्द बिचार॥
सत्रह सहस रु सात से इग्यारह प्रस्तार २०
मालती मालादि दे छन्द बाइसे मत्त ॥
भेद अठाइस सहस पर छसे सतावन तत्त २१
हीरक हद पद आदि दे तेइस मत्त अनन्त।
छ्यालिस सहस रु तीनिसे अठसठ भेद कहन्त २२
लीलादिक अति पति कहो छन्द मत्त चौबीस
दश पच हजार सहस पर जानो बिनि पचीस २३
गगनाङ्गादि पचीस कल भेद होत हैं लाख
इकइस सहस रु तीनि से तिरानवे पुनि भाष २४
छब्बिस कल में चंचरी आठ लाख गनि लेहु
सहस छानवे चारि सै अट्ठारह कहि देहु २५
हरिपद आदि सताइसे जाने छन्द अनेक।
तीनि लाख सत्रह सहस आठ से दश टेक २६
अट्ठाइस में गीतिका आदिक कह्यो फणीश
पांच लाख चौदह सहस दुइसै पर उनतीस २७

उनतिस मात्रा भेद में मरठ ह्वा दिक देखि॥
आठ लाख बत्तिस सहस चालिस भेद विशेषि २८
तीस मत्त में सारंगी चतुर पदा चौबोल॥
तेरह लख छ्यालिस सहस दुसै बहत्तरि डोल २९
एकतिस मात्रा भेद में छन्द सवैया जोहि॥
एक लाख अठहत्तरे सहस तीन सै नो हि ३०
रूप सवैया बत्तिसै कला लाख पैंतीस॥
चौबिस सहस रु पांच से अठहत्तरि विधि दीस ३१
इमि है ते बत्तीस लगि हृत्ति बनावे लाख
सत्ताइस हज्जार पर चौसे बासठि भाष ३२

अथ वर्ण वृत्तानि॥

सवैया॥

एक वर्ण को उक्ता प्रकरण तासु भेद द्वै कीजे पाठ
द्वै अत्युक्ता भेद चारि हैं मध्या तीनि भेद हैं आठ
चारि प्रतिष्ठा सोरह विधि पांचै सुप्रतिष्ठा भेद बत्तीस
षट गायत्री चौंसठि सातै उष्णिक सौ पे अट्ठाईस ३३
आठै वर्ण अनुष्टुप द्वै सै छप्पन भेद कहत फणिराज
नव अक्षर को वृहती प्रकरण भेद पांच सै बारह साज

दशौ वर्ण को पंक्ति प्रकरण भेद सहस ऊपर चौबीस
ग्यारह को त्रिष्टुप प्रकरण गनि द्वै हजार अरु अठतालीस ३४
बारह को जगती प्रकरण त्यहि भेद हजार चारि छानवे
तेरह अक्षर को अति जगती इक्यासी शत पंचानवे
चौदह को शक्करी सोरह सहस तीनिसै चौरासीय ।
पन्द्रह अति शक्करी सहस बत्तीस सातसै अठसठ कीय ३५
सोरह अष्टि सहस पैंसठि शत पांच छत्तीसाधिक लयौ
सत्रह को अत्यष्टि लाख पर एक तिस सहस बहत्तरि कौ
अठारह धृति छव्विस अरु इकीससे ऊपर चौवालीस
बावन अयुत बयालिस सै अट्ठासी विधि अति धृति उनइस ३६
बीस वर्ण को कृति प्रकरण है तासु भेद गनि लेदश लाख
अठतालीस सहस्र पांचसै और छहत्तरि ऊपर राख
इक इस वर्ण प्रकृति प्रकरण है बीस लाख पहिले सुमित्र
सत्तानवे सहस्र एकसै बावन ऊपर दीजै चित्र ३७
छंद होइ बाईस वर्ण को आकृति प्रकरण जानि अभेद
एकतालीस लाख चौरानवे सहस तीनिसै चारि भेद
छंद कहा वै विकृति प्रकरणांत चुमवर्ण होहिं जिहि माह
लाख तिरासी सहस्र अठासी छासै आठ गनै अहिनाह ३८

संस्कृति नाम वर्ण चौबिस को तासु भेद हैं एक करोरि
सतसठि लाख हजार सत्तरि हैं सै ऊपर सोरह जोरि।
अति कृति प्रकरण वर्ण पचीसे तीन करोरि लाख पैतीस
चौवन सहस चारि सै बत्तिस भेद विचारि कहत फणि ईश ३९
उत्कृति होत वर्ण छब्बिस को भेद छ कोटि दुग्व त्तारि लक्ष
चार हजार आठ सै चौ सठि क्रमते द्विगुण बढ़े प्रत्यक्ष
तेरह कोटि बयालिस लक्षौ सत्रह सहस सातसै होइ॥
छब्बिस अधिक जो सब भेद नढ़ि कहियो चाहे जो कोइ ४०

रामनाथ प्रधान कवि॥

घोड़े की प्रशंसा॥

दोवै छन्द॥

जग बन्दन जिहि नाम जाहि रो रघुनन्दन को बाजी
ताको गुण छवि के हूं लगु वर्णौ जोहि होत मन राजी।
भूषित भूषण अङ्ग अदूषण पूषण हय लखि लाजे
चौदिन लालि घांघू थी सुसनियां पगु पैजनियां बाजै २
जदित जवाहिर जीन जरी की जरबीली अति सोहै॥
फूली पटा की छटा कहै को का मलटा मन मोहै॥

जेरबन्द मन फन्द बसन को तङ्ग सुरङ्ग सुहावै
जरकसि पेटी लसी लपेटी झुकि झालरै छवि छावै २
ललित लगाम दाम बहु केरी अङ्गिन नाम विराजै।
सुछवि उमङ्गी झुकी त्रिभङ्गी मोरा न कलङ्की छाजै
जित रुख पावै तित पहुँचावै छिन आवै छिन जावै
जमि२ थामि२ थरकि पुहुमि पर गति नाना दरसावै ३
चलत चमाकै इत उत ताकै विविध कलाके भावै
जनु नभ नाके करनु उड़ाके राम रजाय न पावै।
खीनी कटि पीनी खुरथालैं बधी नवीनी नालै
लेत उतालै सिंह उछालैं करत समुद्रक फालैं ४
जब उड़ि दापैं धरत धरापैं रवि बाजिन उर कांपैं।
जलपै थलपै अनिल अनलपै जात न कबहुँ दापैं
धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व्व गवावै
रघुनायक को बाजि लडैतो अनुपम कला दिखावै ५
नाम समुद्र सूर देत जनन को जापर भरत विराजै
श्री रघुनन्दन की दहिनी दिशि चलत चपल गतिसाजै
रोकत बागें आति रिस रागें गर्व्वित सुर कन लागें।
झमकि झमाकी लै गति बाँकी दै झाँकी सुख पागें ६

कहुँ नभ जावै सुरन छकावै कहुँ महि खोद मचावै
अवनी ते ऐसो आशमान लौं जनु सोपान लगावै
फाँदत चञ्चल चारु चौकड़ी चपलाहू चष झाँपै
भरत कुँअर को तुरग रँगीलो वर्णि जाय कहु का पै ७
चम्पा नाम चाल चट कील्यो जिहि पर रिपुहन भाये
सब समाज के आगे निरतै मोर कुरङ्ग लजाये॥
जो कहुँ ने कहुँ हाथ उठावत कर्दू हाथ गड़ि जातो
बार बार चुचुकार दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ८
जब गहि ताले झम कान हाले गानि अधरन सु फाले
ताकि त्यहि चाले मुसुनि जाले चितवत चकित बिहाले
गजन मध्य घुसि परत डरत नाहिं जरत बरत पग धारै
रिपुसूदन को बाजि बाँकुरो कोटिन कला पसारै ९
लखी घोड़ा लखन लाल को बाँको निपट चलाको
उड़ि जाय आखु मण्डल को परत न महि पग ताको
क्षण क्षिति पर क्षण आशमान पर क्षण छवि को छवि छै
क्षण महँ सु मर आचि नर्दगति सिगरे जनन छकावै
तरफराय उड़ि जाय परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं
उचित बिचारे हँसे रघुवंशी राम हूँ मृदु मुसुकाहीं

मेघ घटा पै मारि सुटा पै विचरे विबुध अटा पै
केश जटा पै वाजिन ठाँपै जनु रति मराइल नाँपै ११
नाँप नुपक छूटै जहँ जूटे नहैं जाय सो टूटै ।।
रण रस छूटै वैरिन कूटै चोरन में यश लूटै
कून करत पुरुहूत डरत जिय महा बूल बल जाके
जाकिस रहे जंकपुरवासी जो हि जोर जब ताके १२
चिक्कन चोटी सुभग सकोटी मोटी काटि छवि पावै
रेशम तारन जाल समारन वारन ऊपर धावै
फुल भरिया सी भरत धरन डग करत अनेक तमासा
हुरकनि सुरकनि थरकनि नरकनि वरणि जाय कहु कासा १३
नाकि तुरग की चञ्चलताई लषन कि देखि बड़ाई
निमि वंशी रघु वंशी सिगरे ठगि से रहे चिकाई
राम आदि जे कुँअर लाडिले ते लखि अरु छाहैं
सोभि रनहैं लषन लाल को वारहि बार सराहैं १४
दूमि मग होत विलास विविध विधि विपुल बाजने बाजैं
सुन तन कोउ पुकार नगर तिय कोठे बैठी घर छाजैं।
कोउ तिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमा सो पागी
भरी सनेह देह सुधि भूली राम रूप अनुरागी १५

क्षेमकरण कवि॥

हाथी की प्रशंसा॥

घनाक्षरी॥

मद्र भद्र मृग गिरिजाति जाति भांति भांति॥
उनमत्त सदा मद मद के पनारे हैं
झोंकदार नोकदार दारक दरद्दहू के
समै पाय समै पाय सङ्गर विदारे हैं
क्षेमकर महाराज कोशलेश के करीश
गुण के अगारे शोभा सकल सँभारे हैं
दन्त उजियारे आरे अरिन के फन्द फारे
देश देश के नरेश देखि हिय हारे हैं १
आई है बरात कोशलेश की विदेहपुर
बसती के बालक तुरन्त उठि धाये हैं
देखि आये साजकी समाज की विभूति भूति
सेना चतुरङ्ग रङ्ग रङ्ग से सोहाये हैं
पूछैं पितु मातु आयो भूप कुँअर काहे पै

क्षेमकर सोई बात बन्दि कै बताये हैं
माते मतङ्गज महि दारिद दबाय जात
वापै दशरथ के दुलारे चढ़ि आये हैं २
हरित मणि हीरा औ पद्मराग हाटक के
हौदन में कोरि कोरि कुसुम बनाये हैं
तैसे ही विचित्र जीव विरचे सजीव मानो
ताके बीच बीचन सुभाव छवि छाये हैं
झूलझांपै झल झलात झालरि औ झब्बा तैं
मुक्ता मकतूल समतूल से सजाये हैं
क्षेमकर घराटन के रव सुने राव होत
राव दशरथ के दुलारे छिप आये हैं ३
दन्त द्युति देखत ही दारिद दबाय जात
दानी होत दान देखि दीनता दुराये हैं
फाल फैलावत फ़क़ीरिनि फिकिरि होत
तुण्ड की समेत सोच शत्रुन पठाये हैं
क्षेमकर क्षोह से भरे छबीले छोटे छके
क्षोणी पति महाराज कोशलेश लाये हैं
कुञ्जर करारी भारी घटा से अमारीदार

मानौं पाद चारी धरा धारी धरि आये हैं ४
झूमत झपाक झाल झटकै जंजीर जाल
मत्त मद बहत बनै सबै सबील से
चिक्कौं मगरद उड़ाय शुण्ड मुण्ड पर
फटकत श्रवण उड़ाय भृङ्ग हील से
क्षेमकर अमरईश दन्ती दुराय देत
धसकत धरणि धरत पाव ढील से
ऐसे अवधेश के असील पील खानेपील
पेखत अपर पील लागत पिपील से ५

महाराजमानसिंहकवि॥

वसन्तऋतुवर्णन॥

सवैया॥

सोधे समीरन को शिरदार
मलिन्दन को मनसाफलदायक
किंशुक जालन को कलपद्रुम
मानिनी बालन हूं को मनायक

कन्न अनन्त अनन्त कलीन को
दीनन के मन को सुख दायक
साँचो मनोभव राज्ज को साज
सो आवत आजु इतै ऋतुनायक १
बायु बहारि बहारि रहे छिति
वीथी सुगन्धन जातो सिंचाई
त्यों मधु माते मलिन्द सबै जाय
के करखान रहे कछु गाई
मङ्गल पाठ पढ़ैं द्विज देव
सबै विधि सों सुखमा उपजाई
साजि रहे सब साज घने
बन में ऋतु राज की जानि अवाई २

घनाक्षरी ॥

चहकि चकोर उठे शोर करि भौंर उठे
बोले ठौर ठौर उठे कोकिल सुहावने
खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार हिलि
हिलि उठे मारुत सुगन्ध सरसावने ॥

पलक न लागी अनुरागी इन नैननपै
लपटि गये धौं कबै तरु मन भावने
उमँगि अनन्द आँसु वानलौं चहूँवा लागे
फूलि फूलि सुमन मलिन्द बरसावने ३
होन लगे शोर चहूँ ओर मति कुंजन में
त्योंहीं पुञ्ज पुञ्जन पराग नभ छायगो
फूल फल साजन को आयसु विपिनमाहिं
शीतल सुगन्ध मन्द पौन पहुँचायगो
द्विज देव भूल भूले फिरत मलिन्दनकी
सुखमा विलोकि हिये सुख सरसायगो
आये इते आगे ते हरौलन के लोग इत
आवत हमारे उत ऋतु पति आयगो ४

क्षेम करण कवि॥

फूले कचनार सहकार औ अपार बन
शीतल सुगन्द मन्द मारुत कँपायोरी
चन्दन के गार और सुमन सुगन्धसार
हार मुकुतान के वितान तन तायोरी

क्षेम करण चञ्चरीक गूंजें और कूंजे पिक
आछे प्रोज्ज अधून बसन मो न भायोरी
आयो मधुमास मोहिं करै उपहास मधु
मधु पुर में माधव बसन्त हू न आयोरी १
पल्लव पील पालकी नगारे कूक कोयलकी
सुमन सिपाही सैन्य साजिके सिधायोहै
मधुबन नकीब बोले बोले वायु चोपदार
तोपदार तरु वर तयारी करि तायो है
क्षेम करण चाँदनी चमू की चाव देतो है
लेतो है अँकोर नाहिं हर बल प्राशि आयो है
वैरी या बसन्त वरजोरी ब्रज राज बिन
मदन महीप मत मारे उठि धायो है ॥ २ ॥

अयोध्या प्रसाद कवि ॥

सेवती निवार सेत हीरन के हार जूही
यूथ श्री अनार मोती विद्रुम लसन्त मो
पन्ना पुरव राज पत्र चम्पक समाज फाव
माणिक गुलाब नील इन्दीवर गन्त मो

माधवी न सूनो गऊ मेद कल सूनो टूनो
औध बाटिका बजार पूनो बिल सन्न भो
यतन जलूस जोर रतन रसाल रङ्ग-
अतन अनन्द हेत जौंहरी बसन्त भो १
खाती हरषाती रस जाती मद माती हिय
काती सी लगाती टेर विरही दिघाती की
जाती ल्है किराती मन आती न दयाती नचु
पाती ताल गाती न पिराती उत पाती की
पाती केहू भांती नो दिसाती जो पोसाती औध
राती सिय राती जो व्यथाती ताती छाती की
न्हाती क्षत जाती में नो चाती शेमपाती काढे
बाती लै ज जाती जी भवें लिया कुजाती की २

शिव प्रसन्न कवि॥

ग्रीष्म ऋतु वर्णन

धोर हर धौल धूप धामहू धंसै न जामैं
चहुंधा हुआर के सुगन्ध सार शालिसैं

मणि दीप माला मणि भूषण बलित बाला
खासे परियङ्क चासे सुमन नि मालासे।
व्यंजन उशीर नीर मलयज समोये हूं
पशीत समीर है सरस शीत कालासे
जिन हेतु विरचे विरञ्चि हैं मसालाऐसे
व्यथित न होत ते निदाघ जात ज्वालासे १

अयोध्या प्रसाद कवि ॥

वर्षा ऋतु वर्णन ॥

वाटिका बिहङ्गन पै वारि गात रङ्गन पै
वायु वेग गङ्गन पै बसुधा बगार है
बाँकी बेनु तानन पै बँगले वितानन पै
वेस औध पानन पै वीथिन बजार है
वृन्दावन बेलिन पै बनिता नवेलिन पै
ब्रजचन्द केलिन पै वंशी बट मार है
वारि के कनाकन पै बद्दल बाँकन पै
बिज्जुली बलाकन पै बरषा बहार है १
हरषै हरौल है अमर सै अनङ्ग हेत
करषै कलापी चोपि चातक चमूपिली

उमड़े घटा हैं मानि करने छटा हैं छटा
फेरत पटा हैं ठटा सूर की हटा किलो
घेरि कै अड़े हैं बिन बूंदन लड़े हैं औध
आनन्द खड़े हैं देखि दादुर बड़े दिलो
कादर वियोगी हारि चादरि बलाक फेरि
बादर बहादुर को नादिर फते मिलो २

महेशदत्त ॥

सरी ऋतु पावस में मोर घोर शोर कारैं
ठौरठौर मण्डुक कठोर शोर वै रह्यो
देखिकै बकालीरी कपालीओरजाली हाली
आली बन माली बिनकाली मोहि कै रह्यो
दामिनी दमङ्कैबीचयामिनी बिलोकि निज
कामिनी इकांत बातसुख पैन धै रह्यो
झिल्ली झनकारैं मेघ वारिधारझारैं पैक
कोकिल पुकारैं यों महेशदत्त है रह्यो १

श्रीपति कवि ॥

जल भरे झूमैं मानों भूमैं परशत आय
दशहूं दिशान घूमैं दामिनी लये लये

धूर धार धूसरित धूम से धुधारे कारे
धारे धुरवान धावैं छविसों छये छये
श्रीपति सुकवि कहै घरी घरी घहरात
तावत अतन तनताप सों तये तये
लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी अब
कादर करत मोहिं बादर नये नये १

पद्माकर कवि ॥

मल्लिकान मञ्जुल मलिन्द मतवारे मिलैं॥
मन्द मन्द मारुत मुहीम मनसा की है
कहै पदमाकर सुलादत नदीन नित
नागरि नवेलिनि की नजरि निशा की है
दौरत दरेरे देत दादुर सु दुन्दै दीह
दामिनी दमङ्कनि दिशानि में दिशा की है
बद्दलनि बुन्दनि बिलोको बगुलानि बाग
बंगलन बेलिनि बहार बरसा की है १

श्रीपति कवि॥

शरद ऋतु वर्णन॥

फूले आस पास काश विमल अकाश भयो
रही न निशानी कहूँ महि में गरद को॥
गुञ्जत कमल दल ऊपर मधुप मैन
छापसी दिखाई आनि बिरह फरद को
श्रीपति रसिक लाल आली बनमाली बिन
कछू न उपाय मेरे दिल के दरद को
हरद समान तन जरद भयो है अब
गरद करत मोहिं चाँदनी शरद को १

पद्माकर॥

हिम ऋतु वर्णन॥

अगर की धूप मृगमद को सुगन्ध वर
बसन विशाल जाल अङ्ग ढाके यतु हैं
कहैं पद्माकर सुपौन को न गौन जहाँ॥
ऐसे भौन उमगि उमङ्गि छाकियतु हैं
भोग औ संयोग हित सुरत हिमन्त ही में
येते सब सुखद सुहाये चाकियतु हैं

तान की तरङ्ग तरुणापन तरणि तेज़
तेल तूल तरुणि तमूल ताकियतु हैं ९
पद्माकर कवि ॥
शिशिर ऋतु वर्णन ॥
गुल गुली गिल मैं गलीचा हैं गुनी जन हैं
चिकें हैं चिराकै हैं चिरागन की माला हैं
कहै पद्माकर है गजक गिजाहू सजी
शय्या हैं सुरा हैं हूं सुराही हैं सुप्याला हैं
शिशिर के पाला को न व्यापै कसाला तिन्है
जिन के अधीन यते उदित मसाला हैं
तान तुक ताला हैं विनोद के रसाला हैं
सुबाला हैं दुशाला हैं विशाला चित्रशाली हैं१
केशव दास जी ॥
॥ श्री राम चन्द्र और परशुराम का मिलन
दोहा ॥
विश्वामित्र विदा भये जनक फिरे पहुंचाय
मिले अगिली फौज को परशुराम अकुलाय १

चञ्चरी॥

मत्त दन्ति अमत्त ह्वै गये देखि देखि न गज्जहीं
ठौर ठौर सुदेश केशव दुन्दुभी नहिं बज्जहीं
डारि डारि हथ्यार शूर जे जीव लै लै भज्जहीं
काटि कै तनु त्राण एक तिन नारि वेषन सज्जहीं २

दोहा॥

वामदेव ऋषि सों कह्यो परशुराम रणधीर
महादेव को धनुष को कहु तोरो बलवीर ३

परशुराम॥

संयुता॥

यह कौन को दल देखिये

वामदेव॥

यह राम सो प्रभु लेखिये

परशु॥

कहु कौन राम विचारिये

वामदेव॥

शर ताड़का ज्यहि तारिये ४

परशुराम॥
त्रिभङ्गी॥

ताड़का संघारी त्रियन विचारी कौन
बड़ाई ताहि हने

वामदेव॥

मारीचहू तो संग प्रबल सकल खंग अरु सुबाहू
काहू ले गने । कौरि क्रतु रखवारी गुरु सुरकारी
गौतम की तिय शुद्ध करी । जिन रघुकुल मंड्यो
हरधनु खंड्यो सीय स्वयम्बर मांझ वरी ॥

परशुराम॥
सवैया॥

तौरौं सबै रघुवंश कुठार की
धार में वारणन वाहर सत्यहि
बाण की वायु उड़ाय के लक्षन
लक्ष करौं अरिहा समरत्थहि
रामहिं वाम समेत पठै बन
कोप के भार में भूजौं भरत्थहि

जौ धनु हाथ धरैं रघुनाथ तौ
आजु अनाथ करौं दशरत्थहि

तोमर ॥

सह भरत लक्ष्मण राम
बहु किये आनि प्रणाम
भृगुनन्द आशिष दीन
रण होहु अजय प्रवीन ७

मदिरा ॥

तोरि शरासन शङ्कर को शुभ
सीय स्वयम्बर माझ बरी।
ताते बढ्यो अभिमान महामन
मेरियो नेक न शङ्क धरी

रघुनाथ ॥

सो अपराध अगाध पर्यो अब
क्यों सुधरै तुमहूं धौ कहौ

परशुराम ॥

बाहु दै दोऊ कुठारहि केशव
आपने धाम को पन्थ गहौ ८

रघुनाथ॥

कुण्डलिका॥

टूटै टूटन हार तरु वायुहि दीजै दोष
त्यों अब हर के धनुष को हम सों कीजत रोष
हम सों कीजत रोस काल गति जानि न जाई
होनहार ह्वै रहै मिटै मेटै न मिटाई
होनहार ह्वै रहै मोह मद सब का छूटै
होय तिनू का बज्र बज्र तिनका ह्वै टूटै ९

परसुराम॥

विजया॥

केशव हैहयराज को मासु
हलाहल कौरन खाय लियो रे
तालगि मेद महीपन के घृत
घोरि दियो न सिरानो हियो रे
मेरो कह्यो करु कोप कराल जो
चाहत है चिरकाल जियो रे
तो लौं नहीं सुरदजो लहु तैं
रघुवंश का शोनु सुधान पियो रे १०

भरत॥

तन्वी॥

बोलत कैसे भृगुपति सुनिजे सो कहिजे न वनि आवै
आदि बड़े हो बड़पन राखो जाते सब जग सुख पावै
चन्दनहू मैं अति तन घरखे आगि उठै यह गुण सुनि लीजै
हैं हय मारे नृपति संघारे सो यश लै कि न युग जीजै ११

परशुराम॥

नराच॥

भली कही भरत्थ तैं उठाय आगि अङ्गते
चढ़ाव चौपि चाप आप वाण लै निषङ्ग ते
प्रभाव आपनो देखाव बाल भाव छांड़ि के
रिझाव राज पुत्र मोहिं राम लौ छिड़ाइ कै १२

सोरठा॥

लिये चाप जब हाथ तीनिहुं भैयन रोष कै
बरज्यो श्री रघुनाथ तुम बालक जानो कहा १३

दोहा॥

भगवन्तनसों जीति पै कबहुं न कीजे शक्ति।
जीतो एकै बात ते कीने केवल भक्ति १४

तोमर॥

सुनु राम शील समुद्र। तव बन्धु जो अति छुद्र।
मम बाड़वानल कोप। अब कियो चाहत लोप २५

परशुराम

दोधक॥

हो भृगुनन्द बली जग माहीं
राम बिदा करिजे घर जाहीं।
हौं तुम सों पुनि युद्ध हि माड़ौं
क्षत्रिय वंश को वैर लै छाड़ौं २६

तोटक॥

यह बात सुनी भृगुनाथ जबै
कह रामहिं लै घर जाहु अबै
इन पै जग जीवत जो बचिहौ।
रण हौं तुम सों फिरकै सचिहौ २७

सवैया॥

भूतल के सब भूपन को फिरि
भोजन लै बहु भाँति कियोई

मोद सों तारक नन्दन मेद
पछावरि पान सिरायो हियोई
खीर षडानन को मद केशव
सो पल में यहि पान लियोई
राम तिहारे ही कराठ को शोणित
पानी को चाहि कुठार पियोई २८

रघुनाथ ॥

छप्पै छन्द ॥

भग्न भयो हर धनुष साल अब तुम को साल्यो
वृथा होय विधि सृष्टि ईश आसन ते चाल्यो
सकल लोक संहरहु शेष शिर ते धर डारो
सप्त सिन्धु मिलि जाहु होय सब ही तुम भारो
अति अमल ज्योति नारायणी कहि केशव बुझि जाहु व
भृगुनाथ से आरु कुठार मैं करयों शत्रु सनमुख शर २

स्वागता ॥

रामराम जब कोप कस्यो जू। लोक लोक भरव भूरि भय
वामदेव तब आपुहि आये। राम देव दोऊ समुझाये॥

तोमर॥

सुनु राम शील समुद्र। तव बन्धु जो अति क्षुद्र
मम बाड़वानल कोप। अब कियो चाहत लोप २५

शत्रुघ्न

दोधक॥

हो भृगुनन्द बली जग माहीं
राम बिदा करिजे घर जाहीं।
हौं तुम सों पुनि युद्ध हि माडौं
क्षत्रिय वंश को वैर लै छाड़ौं २६

तोटक॥

यह बात सुनी भृगुनाथ जबै
कह रामहिं लै घर जाहु अबै
इन पै जग जीवत जो बचिहौं।
रण हौं तुम सों फिरकै सचिहौं २७

सवैया॥

भूतल के सब भूपन को भिरि
भोजन लौ बहु भाँति कियोई

मोद सों तारक नन्दन मेद
पछावरि पान सिरायो हियोई
घोर षडानन को मद केशव
सो पल में यहि पान लियोई
राम तिहारे ही कराठ को शोणित
पानी को चाहे कुठार पियोई २८

रघुनाथ ॥

छप्पै छन्द ॥

मग्न भयो हर धनुष साल अब तुम को साल्लो
वृथा होय विधि सृष्टि ईश आसन ते चाल्लो
सकल लोक संहरहु शेष शिर ते धर डारो
सप्त सिन्धु मिलि जाहु होय सब ही तुम भारो
अति अमल ज्योति नारायणी कहि केशव बुझि जाहु वरु
भृगुनाथ संभारु कुठार मैं कस्यो राम सनपुन्न शरु २९

स्वागता ॥

रामराम जब कोप कस्यो जू। लोकलोक भरव भूरि भस्योजू
वामदेव तब आपुहि आयो। राम देव दोऊ समुझायो ३०

दोहा॥

महादेव को देखि कै इन्दु राम सविशेष॥
कीनी परम प्रणाम उन आशिष दिये अशेष २२

महादेव॥

चतुष्पदी॥

भृगुनन्दन सुनिजै मन महँ गुनिजै रघुनन्दन निर्दोषी।
निजये अविकारी सब सुखकारी सबही विधि सन्तोषी।
एकै तुम दोऊ और न कोऊ एकै नाम कहायो।
आयुर्बल खूट्यो चाप जु टूट्यो मैं तन मन सुख पायो २३

अरिल्ल॥

तुम हो समान नहिं वैर नेहु
सब भक्तन कारण धरत देहु
अब अपने यों पहिचानि विप्र
सब करहु आपिलो कार्य्य छिप्र २४
तब नारायण को धनुष जानि
भृगुनाथ दियो रघुनाथ पानि
तब नारायण को बाण लियो
ऐंच्यो हँसि देवन मोद दियो २५

रघुनाथ कह्यो अब काहिहनो
त्रैलोक्य कँप्यो भय मानि घनो
दिग्देव देह वहु बात बहे
भूकम्प भये गिरिराज ढहे ३५

परशु राम ॥

शशिवदना ॥

जगगुरु जान्यो । त्रिभुवन मान्यो
मम गति मारो । अमय विचारो ३६

दोहा ॥

विषयी को ज्यौं पुष्प शर गति को हरत अनङ्ग
राम देव त्योंही कियो भृगुपति की गति भङ्ग ३७

मरहट्टा ॥

सुरपुर गति भानी शासन मानी भृगुपति को सुख भारो
आशिष रस भीने सब बल दीने अब दशकंठहि मारो
अति अमल भये गिरिगण गल वर्षे छवि देवन मङ्गल गाये
सुरकुल सब हरष्यो पुष्पन बरष्यो दुन्दुभि दीह बजाये ३८

विजया॥
तारका तारि सुबाहु सँघारि कै
गौतम नारि के पातक टारे
चाप हत्यो हँसि कै हर को सब
देव अदेव हते सब हारे
सीतहि ब्याहि अभीत चले गिरि
गर्ब्ब चढ़े भृगुनन्द उतारे
श्री गरुड़ध्वज को धनु लै
रघुनन्दन औधपुरी पगु धारे २८

हिमाचल राम॥

नागलीला॥

सवैया॥
एक समै प्रभु खेलहिं गेंद
गिरो यमुना जल मध्यहि माहीं
कूदि पर्‍यो हरि ताही के हेतु
गयौ धँसि पैठि पतालहि जाहीं

बालसखा बहु रोदन के हिय
शोक बढ़ा गे मांहरि पाहीं
कृष्ण तिहारो बुड़े यमुनाविच
ढूंढि थके हम पावत नाहीं १
हाहाकार भयो ब्रजमण्डल
नन्द की रानी न देह संभारी
शोच के वश्य कहें अस बैन
बसो मेरो भौन धौं कौन उजारी
लोटहिं केश परे धरणी हिले
बालसखा वहि घाट सिधारी
ब्रज नारिन शोच को कौन कहै
मनु कृपण द्रव्य जुआ बहु हारी २
कृष्ण सलातल कीन प्रवेश
निवास भुजङ्गम तेज अपारा
जाय समीप जगावत भे तब
नागिनि कृष्ण सों बैन उचारा
बालक तू किहि हेतु शरीरहि
खोय चले यहं वां पगु धारा

नाहक नाग जगावत हौ फुफु
कार तिहूं पुर होय उजारा ३
बोले कृष्ण सुनो अहि नारि
बसै व्रज में एक कंस भुआरा
मांगत फूल अही पुर के मोहिं
डाटि नरेश ने कीन बिहारना
लादि कै फूल चलो तिहि द्वार
वृथा नहिं बैन सुनो अहि वाला
काली को तेज सुना वत हौ मैं
कोटिन कालन केर कराला ४
यह नाहि अहार सो बाहन है
परिवार समेत सो नाहि खवावों
पति हीन करौं त्वहिं को सुनु नारि
औ नाथि कै कालिहि देश पठावों
हाहाकार पताल परे लै
गोकुल मण्डल माहं नचावों
देह जगाय न बार करौ मोहिं
होय विलम्ब कहा डर वावो ५

दोहा॥

सात स्वर्ग पाताल सोइ काहु न सर्ब्बरि कीन
सो बालक बरि आइयो अनुचित कहवेलीन ६

सवैया॥

कालिवठा रिसिआय तबै अस
कौन तिहूं पुर दूसरो मेरो।
हाटि के सम्मुख जौन परै तिहि
भस्म करौं जिहि के तन हेरो
जो कुछ तेज करौं हिय में आ
एक भलौं में तिहूं पुर पेरो
आयु तुलानि के ही सुनु नागिनि
कौन यहाँ पुर कीन बसेरो ७
दृष्टि परी नंद लाल की ओर
तबै विषराशि छोड़ो फुफुकारा
पौन अगाध चलो अति दुस्सह
कौन कहै तिहि तेज अपारा
श्याम शरीर भयो अति सांवर
कृष्ण विषङ्ग तबै शिर धारा

कर जोरि अनेकन थाकि गयो
नहिं पावहिमाचल को परिटारा ८
चढ़ि मस्तक ह्वपा पयानाकियो
अहिलोकहि शून्य कियोक्षण माहीं
पौन के तेज चला सहसानन
आय नुलानि कदम्ब की छाहीं
मुरलीधर वेगु बजावत मे
सुनि ग्वाल बधू गई बाहरि पाहीं
बंशी की तान परी मेरे कान कोहूं
हिय मोर मनो हरि आही ६
औ लागी शोच करै हिय मे हरि
को लाहि नन्द हुआ रहि आये
शोर भयो सब गोकुल मे नर
नारि कुमारहि हेरन धाये
बाहरि गोद उठाय लियो मोरे
लाल तू कानिहि कैसे बंधाये
साजि कै आरति शीस उतारि
निहारि कै आनन्द मेघ बढ़ाये

रङ्गचार॥

ध्रुव और नारद की भेंट आन वर्णन॥

दोहा॥

वही कवर बनको गये रोका रुका न आप॥
लगा नेह भगवान का रोय मरे मा बाप १

चौबोला॥

रोते मा बाप रहे बन को वो चला
नारद मुनि आगे उसे पन्थ में मिला
राम राम कीनी ध्रुव नारद मुनि से
नारद मुनि पूछी बात योंही उन से २

कुण्डलिका॥

राम राम तेरी सही राम राम महराज
अय लड़के इस बन विषे तू आया किस काज
तू आया किस काज विकट जङ्गल में डोले
तरह तरह के जीव अरे इस बन में बोले
तेरा है का नाम लाल तू कह दे मोसे
कौन तेरा है पिता योंहि मैं पूछूं तोसे ३

उत्तान पात मेरा पिता बसे अयोध्या माहिं
धुरू हमारा नाम है हरि से मिलने जाहिं
हरिसे मिलने जाहिं लगा है ध्यान हमारा
तुम क्यों रोको मुझे कहो क्या काम तुम्हारा
आप कौन महाराज इसी बन हीं मे डोलो
तुम्हारा क्या है नाम भेद हम ही से खोलो ४
सभी दिना बन में रहों नारद मुनि है नाम
जा लड़के हां से तुही नहीं मिलेंगे राम
नहीं मिलेंगे राम देव ह्यां रहते दाने
प्रेत भूत ह्यां रहें खोउ मत अपनी जाने
मर जायगी तेरि माय रोवेगा बाप तुम्हारा
मत करु उन को दुखी जाय तू ह्यां से प्यारा ५
सभी दिना बन में रहो तुम ज्ञानी हो आप
किस कारण घर घार है कहु किस के मा बाप
कहु किस के मा बाप सभी झूठे हैं नाते
सङ्ग किसी के कोइ नहीं हम देखे जाते
जहं देखे ह्यां राम बिना और नहि कोई।
राम बिना महाराज उमर क्यों तुम ने खोई ६

यह मथुरा की राह है सुनि ले हो तू धूरू
मुझ को तू बतलाय दे तेरा को है गूरू
तेरा कोहै गुरु दिया जिस ने उपदेशा
हरि मिलने का कौन पड़ा तुझ को अन्देशा
तू फिरने का नाहिं यही अब हमने जाना
हमने लीना जान तेने यहि राह रवाना ७
तुम्हीं हमारे हो गुरू तुम दीजो उपदेश
तुम्ही हमारे ईश हो आनि मिले यहि भेस
आनि मिले यहि भेस तुम्हीं हो गुरू हमारे
दया कीजिये आज मिले जो दर्श अपारे
हे नारद मुनि गुरू धारणा अपनी में राखो
ऐसो देहु अशीस वचन हरिपद को भाखो८
धुरू तुही आनन्द रह मेरी यही असीस
तीनि लोक के नाथ ही मिलियो बिस्वाबीस
मिलियो बिस्वा बीस तेरी आशा हो पूरी
तेरा मन लगि रहा नहीं तुझसे हरि दूरी ९
शारदूल औ सिंह मिलें तुझ को बन हाती
नहिं तुझ को डर होय चले तू दिन औ राती

धनुर्व्बाण लिये हाथ राम तुम को मिलिजैं
तू रहियो चिरजीवि कार्य्य होंगे बिन मांगे रे
नारद मुनि को करि गुरू धुरू हुये आनन्द
ले आशीश आगे चले दूर हुये सब फन्द
दूर हुये सब फन्द हुये मन में खुशियाले
जाहि बन में चले सुरति हरि जी में डाले
जब जाना श्री राम धुरू जी हम पै आया
होय चतुर्भुज रूप राम ने दर्शन दिखाया
पल में हारे मिलि गये धुरू नयनों सुख पाया
हैरे चरण में गिरा जभी शीतल भई काया १०

प्रियादास कवि॥

भक्ति की प्रशंसा॥

घनाक्षरी॥

मेरे नो जनम भूमि भूमि हित नैन लगो
अगगिरिधारी लाल पिता ही के धाम में
रानी की सगाई भई करी व्याह सासा नई
गई मनि बूड़ वा रँगी ले घन श्याम में

झाँखैं परत मन साँवरे स्वरूप माँझ,
लाभै सो आवैं चलिवे को पतिग्राम में
छूटे पितु मातु पट आभरण लीजियेजू
लोचन झरत नीर कहा काम दाम में १
देवो गिरिधारीलाल मो निहाल कियो चाहो
और धन माल सब राखिये उठाय के
लैदी अति प्यारी प्रीति रङ्ग चढ्यो भारी रोय
मिल्यो महतारी कही लीजिये लड़ाय के
डोला पधराई हग २ में लगाई चली
सुख न समाई चाई प्राणपति पाय कै
पहुँची भवन सासु देवी पै गमन कियो
लियो और दर गाँठ जोर्यो कर्यो भाय के २
देवी के पुजाइवे को कियो लै उपाय सासु
वरै पै पुजाय पुनि बधू पूजि भाषिये
बोली जू बिकायो माथ लाल गिरिधारी हाथ
और कौन है एक वही अभिलाषिये
कहत सुहाग याके पूजे तातें पूजा करो
मन हठ करो शीश पायन में राखिये

कह्यो बार बार तुम यह्यो निरधार जानो
वह्यो सुकुमार जापै चारि फेरि नारियेै३
तब तौ रिसानी भई आनि जर बर गई
गई पति पास यह बधू नहीं काम की
अबह्यो जवाब दियो कियो अपमान मेरो
आगे क्यों प्रमान करें भरैं श्याम-दाम की
राना सुनि कोप करयो धर्‌यो हिये मारि बोई
दई ठौर न्यारी देखि रीझी मति बाम की
लालन लड़ावै गुण गाय कै मल्हावैसाधु
सङ्ग ह्यो सुहावै जिन्हें लागी चाह श्याम की४
आइ कै ननन्द कहै गहै किन चेत भाभी
साधुन के सङ्ग मैं कलङ्क लगै भारिये
राना देश पती लाजै बाप कुल रती जात
मान लीजे बात वेगि सङ्ग निरवारिये
लागे प्राण साथ सन्त पावत अनन्त सुख
जाको दुख होइ ताको नीके करि टारिये
सुनिके कटोरा भरि गरल पठाय दियो
लियो करि पान रङ्ग चढ्यो यों निहारिये५

गरल पठायो सोतो शीश पै चढ़ायो संग
त्याग विष भारी ताकी भारन संभारी है
राना ने लगायो चर बैठे साधु ढिग ढारि
तब ही खबरि करि मारौं यह धारी है
राजें गिरिधारी लाल तिन ही सों रङ्ग जाल
बोलत हंसत ख्याल कान परी प्यारी है
जाइ के सुनाई भई अति चपलाई आयो
लिये तरवार दै किवार खोलि न्यारी है ई
जाके संङ्ग रङ्ग भीजि करती प्रसङ्ग नाना
कहाँ वह नर गयो बेगि दे बताइ ये
आगे ही विराजें कछु तो सों नहीं लाजें अहूं
देखु सुख साजें आंखि खोलि दरशाइये
भयोई खिसानो राना लिख्यो चित्र भीत मनो
उलटि पयानो कियो नेकु मन आइये
देख्यौहू प्रभाव ऐपै भाव मेंन भिदो जाय
बिन हरि कृपा कहो कैसे करि पाइये
विषयी कुटिल एक बेष धरि साधु लियो
कह्यो धों प्रसङ्ग मोसों अङ्ग सङ्ग कीजिये

आज्ञा मोको दई आप लाल गिरिधारीआहे
शीस धरिलेई कछू भोजनकों कीजिये
सज्जन समाज मैं विछौय शय्याबोलिलियो
शङ्क अब कौन की निशङ्क रस पीजिये
संत सुख भयो वैसे आय सब गयो नयो
शयन मैं जाय मोको अज्ञा चल दीजिये ८
रूप कौ निकाई भूप अकबर भाईहिये
लिये सङ्ग तान सेन देखिबे को आयो है
निरखि निहाल भयो छवि गिरिधारीलाल
पद सुख जाल एक तब लौं चलायो है
वृन्दावन आईजी गुसाईजीसौं मिलिभेंली
लिया मुख देखिवे को पनले छुड़ायो है
देखी कुञ्ज कुञ्ज लाल प्यारी सुखपुंज भरे
धरी उर मांझ आप देश वन गायो है २
राना की मलिन मति देखि बसी द्वारावति
रति गिरिधारी लाल नित्य ही लड़ाइये
लायो चट पटी भूप भक्ति कौ स्वरूप जानि
अति दुख मानि विप्र श्रेणी लै पठाइये

बेगि लै कै आवो मो कौं प्राण दै जियावो
आहो गये द्वार धरनौ दै बिनती सुनाइये
सुनि खिदा होन गई राय रण छोरजीपै
छाड़ो राखो हील लीन भई नाहिं पाइये १०

मीरा की कवित्त॥

ईश्वाराधन के विषय में॥

सवैया॥

पल काटौं इन नैनन कै गिरिधारी बिना पल अन्त निहारैं
जीभ कटै न भजै नंद नन्दन बुद्धि कटै हरिनाम बिसारैं
मीरा कहै जरि जाहु हियो पद पङ्कज बिन पल अन्त धारैं
श्रोत्र नवै ब्रजराज बिना वहि श्रोत्र हि कादि कुआ किन डारैं १

दोहा॥

रसन कटैं आनकूं रटैं फुटैं आन लखि नैन
श्रवण फुटैं ते सुनै बिन श्री राधा यश बैन २

देवदत्त कवि॥

मीरा की प्रशंसा॥

घनाक्षरी

कोऊ कहै कुलटा कुलीन अकुलीन कहै
कोऊ कहै अङ्क न कलङ्किनी कुनारी हौं
कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब
कीन मैं अलोक लोक लोकन तें न्यारी हौं
तन जाहु मन जाहु देव गुरु जन जाहु
जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं
वृन्दावन वारी गिरिधारी के मुकुट पर
पीत पट वारे की मैं मूरति पै वारी हौं १

नाभा दास जी॥

भक्तों की गणना॥

छप्पै॥

शङ्कर शुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना
विष्वक सेन प्रहाद बलिरु भीषम जग जाना
अर्जुन ध्रुव अंबरीष बिभीषण महिमा भारी
अनुराग अक्रूर सदा उद्दव अधिकारी

भगवन्त भक्त अब शिव की कीरति कहत सुजान
हरि प्रसाद रस स्वादु के भक्त इते परमान २

श्री मद्भागवत की प्रशंसा ॥

ब्रह्म विष्णु शिव लिङ्ग पद्म स्कन्द विस्तारा
वामन मीन वराह अग्नि अरु कूर्म्म उदारा
गरुड़ नारदी भविष्य ब्रह्मवैवर्त्त श्रवण शुचि
मार्कण्डेय ब्रह्माण्ड कथा नाना उपजै रुचि
परम धर्म्म श्री मुख कथित चतुर श्लोकी निगम शत
साधन साधि सत्रा पुराण फलरूपी श्री भागवत ३

क्षेम करण कवि॥

घनाक्षरी॥

सप्त दश पूरण पुराण मुनि व्यास कह्यो
विरच्यो विचित्र इतिहास कथा भारी है
ताहू ते चित्त की सुचितता न जानि परी
ताही समै नारद मुनि आश्रम सिधारी है
क्षेम करण देव ऋषि दीन्ह्यो बताय सोई
जोई मन गोई श्री भागवत करारी है

पुनि मुनि विस्तारै निस्तारै अनेकै जीव
सुनै जासु अक्षर सो अक्षर करि डारै है १

चौपाई॥

आरति श्री भागवत कथा की
ज्ञान विराग भक्ति सुपथा की
श्री भगवान कहा स्वमुखहि ते
नाम भागवत भयहु तबहि ते २
श्री नारायण ब्रह्महि दीना
ब्रह्मा ते नारद मुनि लीना
नारद दीन व्यास मुनि पावा
सो अतिप्रिय सुत शुकहि पढ़ावा ३
नृप परीक्षित शरणहिं आये
ता कहँ श्री शुकदेव सुनाये
श्री गोकर्ण बन्धु हित बाँचा
प्रेत योनि नशि भा सुर साँचा ४
जो जो कहा सुना अनुमाना
सो सुरपुर चढ़ि चल्यउ विमाना

ऐसे कारण भागवत भागवत
कहत सुनत सो भवदुख पावत ॥
दास कीवे ॥
तुलसी दासजी की प्रशंसा
तोटक ॥
यहि भाँति कछू दिन बीति गये
अपने अपने रस रङ्ग रये
सुखिया इक दृष्य मांझ रहै
हरि दासन को अपमान गहै १
भइ क्षीण अयुः तिहि देह तज्यो
पति नी शुभ जानि पतीहि भज्यो
तब नी अरु सप्त शृंगार कस्यो
सब त्यागि पती पद ध्यान धस्यो २
निज लोक बिलोकि विशोक कियो
कुल लोप पतिहि शुद्ध हियो
इमि द्वारहि मन्दिर से निकसी
लखि आतम गौतम्हि पायन्त सी ३

करुणामय के मुख योंनिकसो
अहिवान रहै निज गेहबसो
सुनि कान अधीस संकोच किये
प्रभु मोहिं कसा शिर बाद दियो ४

भज्भटिका॥

निज स्वामि सङ्ग हो जरन जात
सह गमन होय दृढ कहो बात
आचरण विभूषित लखि कृपाल
लखि दुखित द्रवे परदुख दयाल ५
भक्तन निन्दा की गति बिलोकि
द्विजरहित अहित विधिगति हिलोकि
बहु कुटुम्ब बुलाये वचनकीन्ह
हरि दासन हू को सपथ दीन्ह ६

चतुष्पदी

तब मृतक मंगायो निकट धरायो
कहो विप्र निज राम कहो
सो सुनि अंगिरायो शीस उठायो
जनु सोवत निज धाम रहो

निज दशा जो देखो अति भय लेखो
उठी चेत है पाप परो
प्रभु के गुण औ गुण हूँ अपने जो
कियो फिरि जन्म सबै सुमिरो ७
वंशीधर॥

राम नाम का माहात्म्य ॥

सवैया॥

जो फल ना कुरुखेत्र में विप्रन
काञ्चन को भुव दान दिये ते
जो फल योग औ यज्ञ किये नहिं
जो फल धूम हूँ पान किये ते
जो फल दामहि दान दिये सब
तीरथ हू परिकर्म्म किये ते
जो फल वंशी सो कोटि उपाय से
सो फल राम को नाम लिये ते २

घनाक्षरी॥

जिन्हें तू मगन तेरे तिन्हें ताकि देखो नर
नग्न कै निकारि के चढ़ायवे कोजीता है

सपने को सम्पदा सुलभ साथ सब ही के
सोई हित लाग्यो हरि नाम आदि होता है
कहै मिश्र वंशी कबहूं न आई साँस वैसी
जैसी चहूं छहूं ठहराय गावे गीता है
चैन नाहीं परैगो पै तरी नाके चलो अब
सीताराम जपि ले जनम जात बीता है २

जानकी दास कवि॥

इसी विषय में

दोहा॥

कै वन्दन श्री राम पद रचे सिन्धु बधद्वित्र
दास जानकी दीन को दीजे प्रेम पवित्र १

त्रिभङ्गी॥

पीत पटा तन श्यामा कोटि छटा छवि धामा
मोर किरीट बिराजै सूर प्रभा लखि लाजै २

माणवक छन्द॥

ध्याव सदा राम इमा देव नहीं वाहि समा।
सेवत जा वद चहू पावत ना अन्त कहू ३

मल्लिका॥
त्यागि कै विकार कार कै विचार वेद सार
सीय कन्त बार बार ध्याव जानकी पवार ४
बरवा॥
जपु पवांर निशिवासर रघुवर नाम
सेवत चरण सरोरुह लहु सुख धाम ५
सोरठा॥
जो जपि नाम उदार भव सागर सेतै रचै॥
कै बैकुंठ बिहार आपु तरै तारै कुलै ६
मति राम कवि॥
श्री कृष्णचरित्र वर्णन
सवैया॥
गुञ्जन को अवतंस लसै
शिखि पक्षन अच्छ किरीट बनायो
पल्लव लाल समेत छरी कर
पल्लव सो मतिराम सुहायो
गुञ्जन को कर मञ्जुल माल
सो कुञ्जन ते कढ़ि बाहर आयो

आज को रूप लखै ब्रजराज को
आँखिन को फल आजु हि पायो १

राम सिंह कवि ॥

घनाक्षरी ॥

सोहत मुकुट शीस कुण्डल श्रवण सोहै
मुरली अधर ध्वनि मोहै त्रिभुवन को
लोचन रसाल बंक भृकुटी विशाल सोहै
सोहै वनमाल गरे हरै लोल मन को
रूप मन मोहन न चित्त से विसारो मन
सुन्दर बदन घर कोटि मदनन को
जगत निवास कीजे सुमति प्रकाश मेरे
उर में हुलास है विलास वरणन को १

सूरदासजी ॥

विष्णुपद

यशोदा तेरो भलो हिरदे है माई ॥
कमल नयन माखन के कारण बांधे उखूखल लाई
जो मूरति जल थल में व्यापक निगम न खोजे पाई

सो मूरति तेरे आंगन में चुटुकी देय नचाई
जो सम्पदा देव मुनि दुर्लभ सपन्यो देत दिखाई
याही ते तू गर्व्व भुलानी घर बैठे निधि पाई
बारम्बार सलिल भरि लोचन चितवत कुंवर कन्हाई
कहा करों बलि जाउं छुडाऊं मोहूं सोंह दिवाई
जो काहू के लरिका रोवत दौरि लेत उर लाई
अब अपने घर के लरिका इत्ती कहा निठुराई
सुरपालक असुरन उर शालक त्रिभुवनताहिडराई
सूरदास स्वामी सब लायक विधि सों कहा बसाई १

जानि पायो हौं हरि नीके॥

चोरि चोरि दधि माखन मेरो नित मति गीधि रहे इहि छीकें। अब कैसे जेयत अपने बल भाजन दही दूध मेरो पीके॥ सूरदास प्रभु भले परे फंद देहों न जान भावते जीके॥ २॥

महरि हो मानो मेरी बात॥

ढूंढि ढांढि सब घर को गोरस लिये तुम्हारे तात अससंभाव बोलन हो आई ढीठि गुवालिनि प्रात
माखन नहीं दूध धौरी को क्यों करि लेरो खात

अरु हौं कहन लग्यो छींके ते ग्वाल कन्ध धै लात
यह मेरो नाहिं इतो अच गरो कहा बनावत बात
अरु हों और कहन सकुचत हौं कहा रिखाऊं गात
हैं गुण बड़े सूर प्रभु अब ह्यां ये लरिका ह्वै जात ३

गिरिजा दत्त ॥

विराग का वर्णन॥

विष्णुपद

विन हरि भजन सु जन्म गवांयो ॥
संसारी माया में फंसि के माधव से नहिं चित
लगायो। पुत्र कलत्र कुटुम्ब निमित नित झूंठी
झरि बहु बात बनायो॥ नारिन महं परि हरि बिस-
रायो विषय भोग महं अति रुचि लायो। वेश्या नृत्य
राग सुनि हित से भलि विधि निज परलोक नशायो॥
हंस तजे सर कोउ न नेराने कोउ न एक पग जाहू
पठायो। जब यम राज से काज परे जू तब वहि ठाउं
न कछु कहि आयो॥ डारे गये घोर रौरव में कोउ
न तबहूं जाय बचायो। गिरिजा दत्त भजहु श्री
पति नित सब यामें कछु नाहिं खोटायो॥ १॥

राग धनाश्री॥
यह जग हाट लखत अति सुन्दर
क्रय विक्रय कहुं सब जन आये
देन लेन जासे भल बनिगे
ते सब निज २ गाम सिधाये
विविधि प्रकार वस्तु जिन लखिके
चोरी करन को कर लपकाये
तिन्हैं दमन करि शमन चूतधरि
बन्दी गृह महं जाय बंधाये।
यहि संसार माहिं यह लेखा
गिरिजा दत्त बनिहिं हरि गाये २

राग गुर्ज्जरी ॥

नरतनु पाय के भजहु रमा वर
जो नहिं चरण शरण माधव के
तिन ते भले हैं खर श्वा शूकर
वै मग जनु नरु बर की शाखा
चले न जो हरि दरश के मगपर

जो शिर नयो न हरि मन्दिर मैं
दुन्यहु सो मानहु वर्त्तुल पत्थर
श्री पति भजन वदन ज्यहि नाही
तिन ते सगरी बिलि उत्तम तर
जिन श्रवणन हरि कथा न सुनिये
तिन ते भले हैं पक्षिन के घर
जो कर प्रभु हित वस्तु न लाये
तिन ते भले हैं दण्ड काष्ट कर
जिन नयनन नहिं दरश राम के
तिनसों अन्धी रूप हैं सुन्दर
गिरिजा दत्त मीत मापति सम
कोउ काहू को कहुं नहिं दूसर ३

सुन्दर कवि॥

शब्द शब्दवरणन॥

घनाक्षरी॥

क्षिति जल पावक पवन नभ मिलि करि
शब्द स्पर्श रस रूप और गन्ध जू

श्रोत्र त्वक चक्षु घ्राण रसना रसको ज्ञान
कहै वाक पाणि पाद पायु सो उपस्थ जू
मन बुद्धि चित अहङ्कार ये चौबीस तत्त्व
पञ्चविंश जीव तत्त्व जानत है धन्य जू
षट्वीस को है ब्रह्म सुन्दर सुभिन्न कर्म
व्यापक अखण्ड एक रस निरसन्धजू १
श्रोत्रा दिक त्वक वायु लोचन प्रकाशै रवि
नासिका अश्विनी जिह्वा वरुण बखानिये
वाक अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेन्द्र बल
मेढ्र प्रजापति गुद मित्र हू को ठानिये॥
मन चन्द्र बुद्धि विधि चित्त वासुदेव आहि।
अहङ्कार रुद्र को प्रभाव करि मानिये
जाकी सत्ता पाय सब देवता प्रकाशत हैं
सुन्दर सो आत्मा ही न्यारो करि जानये २

सवैया॥

श्रोत्र सुने दृग देखत है
रसना रस घ्राण सुगंध पियारो

कोमल तत्व को जानत है
पुनि बोलत है मुख शब्द उचारो
पाणि गहै पद कौन करै
मल मूत्र तजे सो उभै अघ द्वारो
जाके प्रकाश प्रकाशत है सब
सुन्दर सोई रहै घट न्यारो ३
बुद्धि भ्रमै मन चित्त भ्रमै
अहङ्कार भ्रमै कहा जानत नाहीं
श्रोत्र भ्रमै त्वक घ्राण भ्रमै
रसना दृग देखि दशो दिशि जाहीं
वाक भ्रमै कर पाद भ्रमै
गुद द्वार उपस्थ भ्रमै कछु काहीं
तेरे भ्रमाये भ्रमै सब ही
गुण सुन्दर तू क्यों भ्रमै इन माहीं ४
बुद्धि को बुद्धि अरु चित्त को चित्त
अहङ्को अहम्मन को मन सोई
नैन को नैन है वैन को वैन है
कान को कान त्वचा त्वक होई

प्राण को प्राण है जीभ को जीव है
हाथ को हाथ पगो पग दोई
शीस को शीस है भाण को भाण है
जीव को जीव है सुन्दर सोई ५

घनाक्षरी॥

कैसे कै रच्यो है यह जगत जगत गुरु
मोसों कहो प्रथम ही कौन तत्व कीन्हो है
प्रकृति पुरुष कीधों अवर तत्व अहङ्कार
कीधों उपजाये रज सत तम तीनो है
कीधों व्योम वायु तेज आप की अवनि कीन
कीधों पञ्च विषय पसारि कारि लीनो है
कीधों दश इन्द्री कीधों अन्तह करण कीन
सुन्दर कहत कीधों सकल बिहीनो है ६
ब्रह्म ते पुरुष और प्रकृति प्रकट भई
प्रकृति ते महा तत्व पुनि अहङ्कार है
अहङ्कार हू ते तीनि गुण सत्व रज तम
तमहू ते महाभूत विषय पसार है

रजहू ते इन्द्री दश पृथक पृथक भई
सतहू ते मन आदि देवता अपार है
ऐसे अनुक्रम करि शिष्य से कहत गुरु
सुन्हु सकल यह मिथ्या भ्रमजाल है ७
मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आप है
कि मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है
कि मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप इन्द्री है
कि अन्तह करण है कि मेरो रूप मौन है
मेरो रूप त्रिगुण कि अहङ्कार महा तत्व
प्रकृति पुरुष कीधौं बोले है कि मौन है
मेरो रूप शब्द है कि मेरो रूप व्योम है
कि मेरो रूप देव है कि मेरो रूप योन है ८
तू तो कछु भूमि नाहिं आपतेज वायु नाहिं
व्योम पञ्च विषे नाहिं सो तो भ्रम कूप है
तू तो कछु इन्द्री नाहिं अन्तह करण नाहिं
तीनो गुण हू तू नाहिं सो तो छांह धूप है
तू तो अहङ्कार नाहिं पुनि महातत्व नाहिं
प्रकृति पुरुष नाहिं तू तो सो अनूप है

सुन्दर विचारि ऐसे शिष्य सों कहत गुरु
नाहीं नाहीं करत रहे सो तेरो रूप है ९
तेरो तो स्वरूप है अनूप चिदानन्द घन
देह तो मलीन जड़ यों विवेक कीजिये
तू तो निस्सङ्ग निराकार अविनाशी अज
देह तो चिता प्रायस्र ताहि नाहिं धीजिये
तू तो षड ऊरमी रहित सदा एक रस
देह को विकार सब देह शिर दीजिये
सुन्दर कहत यों विचारि आपु भिन्न जानि
पर की उपाधि कहा आपु विषे लीजिये १०
देहई नरक रूप दुख को न वार पार
देहई स्वरग रूप झूठो सुख मान्यो है
देहई को बन्ध मोक्ष देहई असोक मोक्ष
देहई को क्रियाकर्म सब शुभ ठान्यो है
देहई में और देह सुखि हू विलास करे
ताही को समुझि बिन आत्मा जीव ठान्यो है
सेऊ देह ते अलिप्त देह को प्रकाश कहे
सुन्दर चैतन्य रूप न्यारो करि जान्यो है ११

देह हलै देह चलै देह ही सौ देह मिलै
देह खाय देह पीवे देहई भरतु है
देहई हिवारे गलै देहई अनल जरै
देह रण माहिं जूझै देहई परतु है
देहई अनेक कर्म्म करत विविधि भांति
चुम्बक की सत्ता पाय लोह ज्यों फिरतु है
आतम चैतन्य रूप व्यापक साक्षी अनूप
सुन्दर कहै सो तो जन मैं न मरतु है १२

प्रश्नोत्तर ॥

देह यह किन को है देह भूतन को
पञ्च भूत किनते हैं तामसाहङ्कार ते
अहङ्कार कौन ते है जासों महातत्व कहै
महातत्व कौन ते है प्रकृति मभार ते
प्रकृति है कौन ते है पुरुष है जाको नाम
पुरुष सो कौन ते है ब्रह्म निराधार ते
ब्रह्म अब जान्यो है मैं जान्यो है निश्चै करि
निश्चै हम कियो है तो चुप मुख द्वार ते १३

नरहरिकवि॥

शिक्षा॥

कुण्डलिका॥

नरहरि धरहरि को करै जननि सुतहि विष देय
वारि जो खेतहि हठि चरै साधु पराधन लेय
साधु पराधन लेय नाव करिया गहि बोरै॥
सोइ पहरू सोइ चोर प्रीति प्रियतम हठि तोरै
नृपति प्रजाहि दुख देय कौन समरथ करै धरहरि
क्षितिपति अकबर शाह सुनौ धरहरि करै नरहरि १

हरिनाथ कवि॥

रीवां केराजा की प्रशंसा॥

दोहा॥

पुण्य बीज बलिने बई करण कीन्ह है पात
सींचो बान्धव गढ़ नृपति जब देख्यो कुम्हिलात २

रसखानि कवि॥

विराग॥

सवैया॥

या लकुटी अरु कामरिया पर
राज्य तिहूं पुर को तजि डारों
आठहु सिद्धि नवो निधि को सुख
नन्द की गाय चराय बिसारों
कोटि करौ कलि धौत के धाम
करीर के कुञ्जन ऊपर वारों
रसखानि कहै इन नैनन सों
ब्रज के वन बाग़ तडाग निहारों १

गदाधर राम॥

सवैया॥

वश है मुरली स्वर लीन्ह किधों
किधौ कूल कलिन्दी के टोहन गो
किधौं पीत पटा लखिया लकुटी
किधौं मोर पंखा छवि जोहन गो

किधौं लाल की माल के मध्य फंस्यो
किधौं काम कमानसी मोहन गो
हम कासों गदाधर योग करैं
मनतो मन मोहन गोहन गो २

महेशदत्त॥

अष्टादश पुराणों कीसङ्ख्या॥

घनाक्षरी॥

ब्रह्म है अयुत १०००० पद्म पच्चन ५५००० त्रिविंश २३००० विष्णु चतुर्विंशा २४००० शिव पञ्च विंश २५००० नारदीय है। अष्टदश १८००० भागवत स्त ही वैवर्त ब्रह्म लिङ्ग एकादश रु ११००० अयुत १०००० वामनीय है॥ कूर्म सप्त दश १७००० मत्स्य चोदह सहस्र १४००० नव ९००० सहस मार्कण्डेय ऊनविंश १९००० गारुडीय है। द्वादश १२००० ब्रह्माण्ड चतुर्विंश २४००० वाराह स्कन्द एकसे एकासी ८११०० सहस्र जाननीय है १॥ पञ्च शत चोदह १४५०० सहस है भविष्य अग्नि पञ्चदश सहस औ चारि शत १५४०० मानिये

इन के एकत्र किये पद्य स्वच्छ लक्ष चारि
४०००००होते हैं विचारि निरधारि जिय जानिये
सुनत सुनावत औ गावत बतावत जे
हरि लोक पावत कहावत न जानिये
जनन मनाय समुझाय के महेश इत्त
कहत सुनाय मनभाय तौ बखानिये २
विष्णु के २५ अवतारों के नाम और चरित्र॥
वामन बराह यज्ञ कपिल कुमार पृथु
दत्त बल ऋषभ नृसिंह हंस ठानिये
मत्स्य कूर्म हरि हय सुरख व्यास कृष्ण बुद्ध
मोहनी परशुराम रामचन्द्र मानिये
कल्की नारायण धन्वन्तरि और ध्रुव एत
पञ्चविंश २५ गाये पै असङ्ख्या हाति जानिये
गाय जिन गुण पार जात न गणेश शेष
अजनेश और महेश कों महेश मानिये ३
बलि जाली वामन नृसिंह प्रहलाद पाली
हरि गज लाली रामघाली लङ्कनाङ्कको
मत्स्य वेद उद्धारी और कूर्म पृष्ठ गिरिधारी

कृष्ण कंसहारी मोहनारी मारी राहु को॥
बुद्ध दयाकारी बराह महिधारी कपिल
योग सञ्चारी राम मारी सहस्र बाहु को
कल्की म्लेच्छ हारी व्यास वेद विस्तार ऋषभ
ज्ञानहिं पसारी पृथु भूमि गारी साहु को ४
हयास्य वेदोद्धारी हंस भक्ति योग चारी
प्रलम्ब मारी बल ध्रुव उच्च लोक धारी हैं
नारायण तपकारी कुमार आत्म तत्वपारी
यज्ञ लोक भारी दत्त योग विस्तारी हैं
लोक रोग हारी वैद्य राज उपकारी सब
कहौं सो पुकारी बलि हारी बलि हारी हैं
दुष्ट अपकारी हितकारी निज दास के
सहेश अघहारी सो अनेक कार्य कारी हैं ५

बारहमासा॥

हरिगीतिका॥

गज वदन मदन विदारि पद शिर धारि मंगल मनावऊं
रघुनाथ पद धरि माथ श्री यदुनाथ गीत बनावऊं

नभ शुक्ल गिरि कर नन्द चन्द्र संभारि सम्वत लीजिये
रवि वार हर तिथि छन्द शुभ हरि गीतिका कहि दीजिये ६
आषाढ़ खाढ़ बिसारि नारि बरारि घायल भायगो
ब्रज ग्वाल बाल बिहाल करि नंद लाल हाय रिसायगो
गढ़ हाट वाट कपाट डाटे जग ठाट ठाटे छायके
जगनाथ बिन नर नाथ सोवहिं माथ हाथ लगायके ७
घन घोर शोर कठोर मोर दरोर सजनी को सहै
तड़िता तड़ा तड़ तड़पि मन डुर पाय दहु सखि कालहै
मोहिं भूलि गावल मास श्रावन नाहिं सुहावन लागई
घन श्याम विन घन श्यामल रिव सखि काम वाम सुजागई ८
भादों भयानी भामिनी खरिव यामिनी विच दामिनी
अब भेक भेकी करहिं नेकौ जानि सकी कामिनी
आगार द्वार बजार वारि बिसारि मन हुं बहाइहैं
ब्रजनाथ कुंवरि साथ त्यहि गाहे हाथ गाथ बचाइहैं ९
सखि क्वार मार गवांर विन गिरि धारि शारि मचावही
जल पिण्ड आश अकाश तजि यहि मास पीतर आवहीं
नवरात्र पात्र भराय गात्र नवाय देवि मनावहीं
अब नीर नाहिं गंभीर सखि नर धीर सौर लुनावहीं १०

नंद लाल हित नर बाल सुन्दरी बाल बाल सुलोपहीं
गुनि दीप बारि सँवारि आश्विन मास कार्त्तिक दीप हीं ॥
मन पूत बारि जन सूत खेलि जगाय माधव गावहीं
अलि कूबरी फंद फन्दै ब्रज चन्द काह्न क्षमावहीं १०
वर नारि कराड सुधारि सुरङ्ग नगवन गावहिं लागि कै
नद धारि पाय मलाय नव पिद हिय लगावहिं जागि कै
विन मीन शीत पुनीत अगहन दहन सम मोहिं लागई
सखि श्याम धाम निहाय हाय कुबाम संग अनुरागई १२
यह कंस बैरि मुरारि घेरि स सोख पौष दिखावई
तनु मेल नेल फुलेल करि निज अङ्ग अङ्ग लखावई
भरि तूल मध्य दुकूल हरि अनुकूल करि हिय लावई
करि दीन चाव दुराव सखि हु काह कूबरि पावई १३
चहुं ओर भोर तुषार धार पहार कानन राजहीं
अब माघ साज समाज नीरथ राज लखि बिरगाजहीं
करि ध्यान गान न हान गुड़ तिल अन्न दै द्विज भूजहीं
जहं नन्द नन्द अनन्द लहं यहं नाहिं मोहिं कछु सूझहीं १४
नर बाल बाला ह्वै निहाला फागु फागुन गावहीं
सक सङ्ग रङ्ग बिरङ्ग करि लखि अङ्ग अङ्ग लुटावहीं

भरि झोरि रोरि गुलाल गाल लगाय उपर उड़ावहीं
बल वीर माहिं अबीर कापर डारि हम फगुवा वहीं १५
ऋतु नाथ आय अनाथ नारि सनाथ करियश लीजिये
यदुनाथ नाथ मनाय कै गहि हाथ त्यहि माहिं दीजिये
तव बीच नीच अमैत्र चैत्र विशेषि नारिन्ह मारई
जहँ फूल फल दल कमल जल जलकाम भल बल भारई १६
वैशाख वसै तरु डार डार पहार मार बली अली
पुनि मत्त मोर चकोर शुक पिक रटत शब्द गली गली
बन वापि बाग तड़ाग उपबन बास मोहिं न भावई
यदु वीर हीन समीर तीन नवीन पीर उठावई १७
धन धाम ग्राम उशीर नीर समीर नद नदि तीर री
सब लगत ताते नहिं सुहाते सदन बिन बल वीर री
अब ज्येष्ठ धूरि उड़ात गात सुखात बात न भावई
सखि शीत चन्दन नन्द नन्दन अङ्ग कूबरि लावई १८
हे नाथ कर हम नाथ नारि अनाथ निज दिन जानिकै
गहि हाथ माथ जुड़ाय हृदय लगाय दासी मानिकै
नर नारि करि विश्वास बारह मास सुनि जो गाइहैं
हरि राधिका पद प्रीति रीति महेश दत्त सो पाइहैं १९

तुलसी दास जी के सर्व्व ग्रन्थों की कुछ कुछ कविता॥

कवित्त रामायण॥

घनाक्षरी॥

जाहिर जहान में जमानो एक भाँति भयो
बेंचिये विबुध धेनु रासभी बेसाहिये
ऐसेउ कराल कलि काल में कृपाल तेरे
नाम के प्रताप न त्रिताप तन दाहिये
तुलसी तिहारो मन बचन करम जन
येहू नातो नेह निज ओर ते निबाहिये
रङ्क के नेवाज रघुराज राजा राजन के
उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये १

राम श्लाका॥

दोहा॥

राम राज राजत सकल धर्म्म निरत नर नारि॥
राग न रोष न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि १

गीतावली॥
कौशल्याजी का वाक्य ॥
राग केदार॥

पौढ़िये लाल पालने हौं झुलावौं॥
कर पद मुख चख कमल लषत लखि लोचन भ्रमर बुलावौं
बाल विनोद मोद मञ्जुल मणि किलकनि खानि खुलावौं
तेहू अनुराग ताग गुहिबे कहँ मति मग नयनि बुलावौं
तुलसी भणित भली भामिनि उरसो पहिराय फुलावौं
चारु चरित रघु बर तेरोहि मिलि गाय चरण चित लावौं ३

बरवा रामायण॥
जानकी जी की प्रशंसा॥

सिय मुख शरद कमल जिमि किमि कहि जाय
निशि मलीन वह निशि दिन यह विकशाय ४

शिक्षा॥

कलि नहिं ज्ञान विराग न योग समाधि।
तुलसी सुमिरहु रामहिं नित निरुपाधि ५

दोहावली॥

तुलसी वहां न जाइये जहां कपट को हेत ॥
हम तन हारैं हैं कुली सींचहिं आपन खेत ६
तर्क विशेष निषेध पति उर मानस सुपुनीत
बसतमराललरहित करि त्यहिभजपलटि विनीत ७

विनयपत्रिका॥

तामें से पीटि मनकुं तनु पायो॥

नीच मीचनहिं मनसि शीसपर ईशनिपट बिसरायो
(सशि धरासि धनधामसु हृदपशु कीनहिं इनअपनायो
काके रहे गये संग काके सब सनेह छल छायो
जिन भूपन जगजीति बाँधियमअपनी बाँहबसायो
तिनको काल कलेवा कैगो तू गिनती कब आयो
मानत नहीं सारको सांचो निगम नीति ज्यहि गायो
अजहुं न भजसि दास तुलसी त्यहिज्यहिमहेशमनलायो ८

हनुमदाष्टक॥

घनाक्षरी॥

दिग्गज दबकि जात शेस शीस अलसात
हहलात वारिधि घटत द्युति भानु की१

मेरु धसकत कसकत उर रावण को
चलत अवनि छवि छुपत कृशानु को
सुभट सकात दैत्य देखि के परात मन
राम मुसुकात अति पाय निज जानुकी
गर्व्व गिरिजात शोक सुर बिनसात घन
नाक अरगात सुनि हांक हनुमान की ६
चन्द्रकोर ॥
सेना देख कर परमालिक का भागना ॥
दोहा ॥
देखि फ़ौज परिमाल नृप कांपि चले तजि मान
दश हज़ार भट सङ्ग ले चले महो बे थान १
ब्रह्मा नट फिरि आइगो धरि क्षत्रिय धर्म्म धारि
पृथीराज सो पहरे बन्ज्ञावन तरवारि २
भुजङ्गप्रयात ॥
इहूं सैन्य मिल्ली इहूं बाग लिन्नी
इहूं धारि धर्म्मे बरं दृष्ट किन्नी
इहूं सैन्य कड्ढी इहूं कोर बाढ़ी
इहूं बार बाना सबहुन्न काढ़ी ३

बजे भेरि निशान जङ्गीनबन्नम्
गजे नाद तुरही मबन्न सुनन्नम्
कहूं नाद कीनो स्वरं शङ्ख भारी
कहूं नाम हर्षे सु हाहा उचारी ४
कहूं चन्द सो हो सुनो चाहु वानम्
चलायो शदू न्याधि बाढ़ें भुजानम्
सुख न्यान जम्पै सु इंशे भवानी
मिलायो बल न्याहि धाये जवानी ५
आगे कोल सैना सु चौंडेल हाथी
रहे पीछि असवार बन्धाय साथी
चलाये मुख ढ्ढान्ह पहीउठाइ
किधौं रावने राम भौंहें रुठाई ६
आगे आप हत्थीन पै हत्थबाहे
बर न्यक्क नागे उठाने उमाहे
उभा रक्त लख्खे बली बाहु जोरे
गहे मुच्छ मुण्डा वगारे अमोरे ७
कहूं ते भुसुण्डे नपै ते न पावे
कहूं कोपि मत्यस धन्नी मिलावे

कहूं भाव साधैं कहूं कोपि रोरैं
कहूं घाव बाहैं कहूं कोपि बोरैं ८
नहूं बान बल्लो किथो पील कानी
मुख मन्त्र बोलें नु ईपो भवानी
कहूं हंक बङ्क. दुहूं सैन्य सोई
बनाव न्वरं छाइ निर्म्मोह होई ६
करैं खगड खगड़ें घट न्याव धारैं
विकट्ट न्वली बाकु ठट्ट न्लिहारैं
चला चक्र तीर छुहीरं गुमानी
धरक्के धरन्ती खनक्के सुबानी १०
उरे सेल्ह लागें उरप्पार होई
गिरैं नट्टवा से कला चूकि सोई
वहैं कन्ध किर्पान बन्धङ्कु लावे
परे मुराड धन्नी मुराड न्न पावे ११
गुरज्जं बहैं शीस रोसे खानी
फिरं होत चूना विरवूल ज्जवानी
बहैं मुग्गर म्मार धारन्न कत्ती।
परे फ़ील मत्ता सु धरनी वरत्ती १२

करै वार हङ्क डङ्कारी करूरम्
करी मान मत्ता परै चाकचूरम्
इसी भाँति कान्हें कियो युद्ध भारी
भिल्यो ध्यानअम्बा इल्लोंईश धारी १३

दोहा॥

कान्ह कटक कीन्हों कहर हलक परी दल माहिं।
भटकि वीर भागे बली कोऊ पलटत नाहिं १४

शिव प्रसाद कवि॥

शङ्करजी की प्रशंसा॥

दोहा॥

शङ्कर सेवा करत जो सो पावत बहु वित्त॥
विद्या में स्मति प्रबल है रटत शम्भु है चित्त १
शङ्कर जी सुरस्वार्थ लगि कीन्ह गरल को पान
जाके कण्ठ विशाल में विष को बनो निशान २
वाणासुर के सङ्ग है युद्ध कीन्ह हरि पाहिं॥
ऐसे शम्भु कृपाल को भजन करहु मन माहिं ३

महादेव के भजन बिन नहिं पावत हरि लोक।
विषय भोग करि बहुत दिन पुनि मरि भोगत शोक ४
ऐसे दया निधान को भजा करौ दिन राति।
प्रति दिन होहिं अनन्द बहु नाश होहिं आराति ५

महेशदत्त ॥

जिन २ कवियों की कविता इस ग्रन्थ में हैं उनके नाम॥

घनाक्षरी ॥

तुलसी नारायण मदन कृष्णदास राम
सहज राम भगवती दास रत्न दास हैं
ब्रजवासी दास सिंह सबल नरोत्तम
नवल लल्लूलाल गिरिधर राय नाम हैं
बिहारी रघुनाथ शिव प्रसाद नन्ददास
गिरिजा प्रसन्न मोतीलाल कृपा राम हैं
सेवक सीता राम चरण भिखारी दास
रामनाथ मानसिंह अवध लाल नाम हैं १

श्रीपति सिव प्रसन्न पद्माकर केशवजी
हिमाचल रङ्गाचार प्रिया दास ठानिये १
मीरा देव नाभा दास दास वंशीधर रु
जानकी दास मतिराम राम सिंह मानिये
सूरदास सुन्दर मलूकदास नरहरि
हरिनाथ रसखानि गदाधर भानिये
चन्द्र थे महेश रत्न सहित इक्यावन कवि
काव्य काव्य सङ्ग्रह में लिखी भूपजानिये २

इस ग्रन्थ में जो छन्द हैं उनके नाम॥

दोहा॥

दोहा चौपाई घनाक्षरी सोरठा जानु॥
चामर सवैया गीतिका दुमरि सवैया ठानु ३
दोवै भुजगप्रयात सय्युता त्रिभङ्गी मानु॥
तोमर मदिरा विज्जुया नन्दि नराच बखानु ४
दोधक तोटक स्वागता छप्पय चतुष्पदि नीक।
पज्झटि मारा बङ्कीड शशि वदन मरहठा ठीक ५

चौबोला चञ्चरि त्रिपदि बरव विलुपद बन्न
छन्द नरिन्द्र मात्रिका तैंतिस करत सुछन्न ६
केदारा गुर्ज्जर धनाश्री आदिक हैं राग ॥
पढ़िहैं सुजन सुधारि सब करिकै अति अनुराग ७

जिस प्रकार से यह ग्रन्थ बना है उसका वर्णन ॥

लिहि श्री शुभ गुण सदन श्री कालिन्शो निङ्ग
साहब डैरेक्टर सुभग जामें गुण बिन बिङ्ग ८
संस्कृत अरबी फ़ारसी अंगरेज़ी जिहि सङ्ग
छायासी घूमत फिरत मानौ जाके रङ्ग ९
जाकी कृपा कटाक्ष से थे सबही के अङ्ग
विद्या व्यापी जाहि सों सब के उठी उमङ्ग १०
सुमति बढ़ी जिहि भाँति सों हूओ कुमति को भङ्ग
सोई कीन्ह्यों रात्रि दिन खोजि सकल शुभ ढङ्ग ११
ग्राम २ गृह २ बढ़्यो जन २ पढ़िइन होय।
याहू परजा नहिं भयो रह्यो नासुमति सोय १२

ताकी आज्ञा पाय कै ग्रन्थ रच्यो मैं येह ॥
भूल होय जहं सुजन त्यहि पढ़ियो शुद्ध सनेह ३

ग्रन्थ समाप्ति के मासादि का वर्णन ॥

हरिगीतिका ॥

नभ राम नन्द रु चन्द संव्वत कार पूरण मासिका
विधु पूष वलक्षु व ग्रन्थ पूर्णि सुराम नगर निवासिका
शुभ काव्य सङ्ग्रह नाम केरि महेश स्व हित करी
अरु दहन नग वसु चन्द ईसा वर्ष पलस कटूवरी ४

इस ग्रन्थ के पद्यों की सङ्ख्या ॥

दोहा ॥

यामें एक सहस्त्र अरु एक सठि हैं सब पद्य
यह मैं जानत नाहिं क्यतिक होहिं गने यहि गद्य ५

इति

जिन २ कवियों की कविता इस ग्रन्थ में है उन के गुप्त नाम पठन पाठन जन्म मरण इत्यादि की अवस्था॥

तुलसीदास जी॥

ये सरयू पारीण अर्थात् सर वरिया ब्राह्मण चित्र कूट के इलाक़े में राजा पुर के रहने वाले थे इन के गुरू का नाम नृसिंह दास था कहते हैं कि ये यद्यपि षट शास्त्री पण्डित थे पर ईश्वराराधन में चित्त नहीं लगाता था एक दिन इन की स्त्री ने ऐसा उपदेश किया कि ये सब गृहस्थाश्रम छोड़ कर रात्रि दिन श्री राम जी का स्मरण करने लगे बहुत दिन काशी चित्रकूट अयोध्या आदि तीर्थों में रहकर वृन्दा बन को गये वहां नाभा जी से भेटहुई और कृष्णचन्द्र जी जोकि सर्वदा मुरली धारण

किये रहते हैं उन्हें उन्हों ने देखकर कहा कि मैं तो
प्रणाम तभी करूंगा जब धनुर्बाण धारणकरोगे
यह सुनकर कृष्ण चन्द्र जी ने वैसा ही किया तब
उन्हों ने साष्टाङ्ग प्रणाम किया और बहुत दिनों
तक वहां रहे इन को हनुमान् जी का इष्ट था फिर
वहां से पलट काशी जी में बसकर इन्हों ने बड़ी
बड़ी सिद्धता दिखाई ये संस्कृत और भाषा दोनों
के बड़े कवि थे इन्हों ने विनय पत्रिका गीतावली
राम चरित मानस दोहावली राम शलाका बरवा
रामायण कवितावली छन्दावली मङ्गलावली और
हनुमद्बाहुक आदि ग्रन्थ बनाये मैं जानता हूं कि
इस भारत खण्ड में भाषा के कवियों के शिरोमणि
थे अर्थात् इन के समान दूसरा नहीं हुआ इन्हों ने
सर्वजनों के उपकार के लिये कविता की और श्री राम
यश वर्णन को छोड़ और किसी का वर्णन नहीं
किया कि जैसा बहुधा कवि लोग ठुमुक २ झुमुक २
झन्झन २ आदि पद बहुत ललित बनाकर लोगों
को अधिक विषय वासना में लगाते चले आते हैं

इन की प्रशंसा कहां तक करूं सम्बत् १९०७ में श्री काशी जी के मध्य शरीर त्याग कर बैकुण्ठ वासी हुये

मदनगोपाल॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फतूहाबाद के निवासी थे इन्हों ने सम्बत् १८७६ में बलरामपुर के महाराजा दिग्विजय सिंह जी के पिता अर्जुन सिंह के नाम से अर्जुनविलास नामक ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कवि थे उस ग्रन्थ में इन्हों ने सब पदार्थों का वर्णन संक्षेप से किया है और ग्रन्थ बनाने के पश्चात् थोड़े ही दिनों में इस असार संसार को छोड़ दिया॥

हुलासराम॥

ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बाराबङ्की तहसील फतेपुर ग्राम रामनगर के रहने वाले थे इन के पिता का नाम प्यारादत्त था इन्हों ने बुद्धिप्रकाश बैताल पञ्चविंशति का लड़ाकाराङ इत्यादि ग्रन्थ निर्म्मित किये १८५४ सम्बत् में उत्पन्न हुये और १९१२ में मृत्यु वश हुये॥

सहजराम॥

ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहने वाले थे और यहां सुलतानपुर के ज़िले में जो बंधुवा ग्राम है वहां के रहने हारे एक नानक शाही ब्राह्मण के शिष्य हुये येभी बड़े महात्मा हुये हैं और सहजराम रामायण प्रह्लाद चरित ये दो गून्थ इन्हों ने रचित किये और सम्वत् १८०५ में इस संसार से निराश हो स्वर्ग बास किया॥

भगवती दास॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फैज़ाबाद के ज़िले में किठावां ग्राम के रहने वाले थे उसी समय में हुये थे जबकि तुलसी दास जी थे इन्होंने सम्वत् १६८८ में नासकेतोपाख्यान निर्म्माण किया और ये सम्वत् १७२४ में स्वर्गी हुये॥

रत्न कवि॥

ये ब्राह्मण काशी जी के रहने वाले थे इन्हों ने प्रेमरत्न नाम ग्रन्थ सम्वत् १८०४ में बनाया॥

ब्रजवासी दास ॥

ये ब्राह्मण कहीं पूर्व के रहने वाले थे इन्हों ने वृन्दावन में आकर सम्वत् १८२७ में ब्रज विलास ग्रन्थ रचा ये बड़े ही श्री कृष्ण दास के थे और जन्म भर वहीं रहे और शरीर त्याग किया ॥

सबल सिंह चौहान ॥

ये फ़र्रुखाबाद के ज़िले में राम गङ्गा के तटपर सबल पुर के रहने वाले बड़े परिश्रमी पण्डित थे कि इन्होंने सम्पूर्ण महा भारत को भाषा किया अब इन के लड़के वाले हर दोई ज़िले के सांई ग्राम में रहते हैं ॥

नरोत्तम दास ॥

ये सीता पुर के ज़िले में बाड़ी के वासी थे इन्हों ने सम्वत् १५८२ में सुदामा चरित्र नाम ग्रन्थ बनाया था ॥

नवल दास ॥

ये क्षत्रिय जनवार ज़िले बारह बङ्की तहसील

राम सनेही ग्राम गूढ़ के रहने वाले थे इन्हें ईश्वरा राधन किया और ज्ञान सरोवर आदि कई ग्रन्थ बनाये और सम्वत १९१३ में यहीं मृत्युवश हुये॥

लल्लूजी लाल॥

ये गुजराती ब्राह्मण सहस्र अवदीच आगरे के निवासी इन्हों ने प्रेम सागर सभा विलास आदि ग्रन्थ बनाये और इन का जन्म सम्वत १८३० में हुआ था॥

विहारी लाल॥

ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण श्री वृन्दावन के रहने वाले थे इन्हों ने सत सई नाम ग्रन्थ जयपुर के राजा जय सिंह राय सवाई के कथन से उन्हीं के निमित्त निर्म्माण किया॥

अनन्य दास॥

ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण जिले गोंडा ग्राम चकैयूदवा के रहने वाले राजा पृथ्वीराज के समय में थे इन्हों ने अनन्य योग नाम के ग्रन्थ बनाया उस के

देखने से विदित होता है कि अच्छे कवि थे सम्वत
१२७५ में बैकुण्ठ यात्रा की ॥

रघुनाथ दास महन्थ ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण पचवार के पांडे सीतापुर
के ज़िले में पैंतेपुर के रहने वाले हैं प्रथम ये
रापट की पल्टन में गोलन्दाज़ों में नौकर थे
और अयोध्या जी में मौनी दास के शिष्य हुये
और वहां नोकरी और भगवद्भजन दोनों करते
थे यहां तक कि बांगर के इलाके में किसी राजा से
लड़ाई होती थी और ये भोजन बनाते थे कि बैरी
की सेना ने धावा किया सब गोलन्दाज भगे तब
रघुनाथ दास का वेष बन कर ईश्वर ने आप आकर
गोलन्दाज़ी करके शत्रु की सेना को हटाया उसी
समय में रापट साहब ने देखा कि अकेला रघुनाथ
दास तोप चला रहा है इससे प्रसन्न होकर कहा कि
तुझे इद्दार बनाऊंगा कुछ घड़ी के पीछे जब इन्हों
ने जाना कि मेरे लिये ईश्वर को नौकरी करनी
पड़ी तो आप नौकरी छोड़कर श्री अयोध्याजी में

वासुदेव घाट पर रहने लगे और अब राम घाट पर रामाराधन करते और अपने तपो बल से प्रति दिन चार पांच सौ मनुष्यों को भोजन देते हैं इन्हों ने हरिनाम सुमिरनी एक बड़ा अद्भुत ग्रन्थ बनाया है

मलूक दास कवि ॥

ये ब्राह्मण कड़ा मानिक पुर जो कि गङ्गा जी के तट पर है वहां के रहने वाले बड़े सिद्ध थे इन के मित्र एक मुरारिदास वैष्णव जो कि कड़ा नगर से बीस कोश पूर्व्व दिशा में कहीं गङ्गा जी के निकट रहते थे माघ मास में उन्हों ने एक बड़ा भारी भण्डारा किया पर मनुष्य बहुत थे इससे सामग्री न पहुंच सकी तब ईश्वरानुग्रह से यह वृत्त मलूक दास को विदित हुआ तो एक लोटा पर अपनी ओर से लिखा कि मुरारि दास के पास पहुंचे उसे ले गङ्गा जी से कहा कि हे गङ्गे इस को अभी वहां पहुंचा दीजिये क्योंकि मनुष्य इस को ले जाकर समय पर नहीं पहुंच सक्ता यह कह गङ्गा जी में छोड़ दिया उसी समय मुरारि दास अपने घाट पर स्नान करने गये

थे कि तोड़ा रुपयों से भरा हुआ पाय में लगा उसे देख जाना कि मलूक दास का भेजा हुआ है सब को भोजन कराया ये मलूक दास तुलसी दासजी के समय में थे क्योंकि जब तुलसी दासजी अयोध्या जीसे चित्रकूट जाते थे तो इनसे भेंट हुई थी ये संवत १६९५ में वहीं मृत्यु वश हुये ॥

मोती लाल कवि ॥

ये सरवरिया ब्राह्मण झांसी के राज्य में अघैला ग्राम के बासी बहुत दिन पठन पाठन कर संवत १५९८ में वहीं मृतक हुये इन्हों ने गणेशपुराण को भाषा किया ॥

कृपाराम कवि ॥

ये सरवरिया ब्राह्मण गोंडा के ज़िले में नरैनापुर के रहने वाले थे इन्होंने श्री मद्भागवत का दश स्कन्ध भाषा बनाया ॥

क्षेमकरण मिश्र कवि ॥

ये सरयू पारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण नगरहा मिश्र ज़िले बारहबङ्की तहसील रामसनेही

कोमनी नदी के कूल पे ग्राम धनौली के बासी थे इन के पिता का नाम आधारमिश्र पिता मह का लक्ष्मणराम और प्रपिता मह का लालमणि मिश्र था संवत् १८७४ में इन का जन्म हुआ और ७ वर्ष की अवस्था में संस्कृत विद्या पढ़ने का प्रारम्भ किया प्रथम ज़िले सुल्तानपुर ग्राम महुआबाक के निवासी पण्डित श्रेष्ठ माधवराम जी से पढ़ते थे तदनन्तर ज़िले राय बरेली तहसील दिग्विजय गञ्ज ग्राम हलोर के वासी विद्वद्वर्य्य नयनराम जी से कि जिन का चन्द्रिका पाठन अब तक प्रसिद्ध है उन से तत्पश्चात् ज़िले बारह बङ्की तहसील हैदरगढ़ ग्राम पुरवरा के रहने वाले श्री मुन्नालाल शास्त्री जी से तदनु श्री मथुरा जी में छन्दप्रशास्त्राध्ययन करके बहुत दिनों तक पठनपाठन करते हुये अम्बाला बरोधा और बम्बई आदि नगरों में बहुत सा द्रव्योपार्ज्जन कर के गयाश्राद्धादि ब्रह्मभोज और ८ कन्याओं के विवाह में बहुत मुद्रा व्यय करके अन्तावस्था में श्री अयोध्या जी के मध्य १४ वर्ष वास कर भगवद्भजन

करके संव्वत् १९१८ में वहीं शरीर त्याग कर ईश्वर में लीन हुये थे संस्कृत और भाषा दोनों की कविता में बड़े विज्ञ थे कि जिन्हों ने श्री राम रत्नाकर वृत्त रामास्पद गुरुकथा और आन्हिक ये संस्कृत के और राम गीत माला कृष्ण चरितामृत पद-विलास वृत्त भास्कर रघुराज घनाक्षरी गोकुल चन्द्र कथा तक ये भाषा के ग्रन्थ बनाये और बड़े रामोपासक थे और कविता हरियशो वर्णन हीं की करते थे॥

सीता राम दास कवि॥

ये कवि वैश्य वर्ण ज़िले बारहबङ्की ग्राम वीरापुर के रहने वाले हैं और अपना वणिज और भगवद्भजन करते हैं॥

चरणदास॥

ये कवि फ़ैज़ाबाद के ज़िले में पण्डित पुर के रहने वाले थे इन्होंने स्वरोदय ग्रन्थ बनाया था और ये सव्वत् १५३७ में मरे थे॥

भिषारी दास कवि॥

ये कायस्थ वर्ण अरवल देश के टेंउगा नगर के

रहने वाले थे इन के पिता का नाम कृपालु दास पितामह का बीरभानु प्रपितामह का राम दास और भ्राता का चैन लाल था इनकी कविता के देखने और इन के लिखने से जाना जाता है कि ये केवल भाषा ही नहीं जानते थे वरन संस्कृत काव्य कोष में भी बड़े अधिकारी थे इन्हों ने छन्दोर्णव नाम छन्दो ग्रन्थ और काव्य निर्णय बड़े २ भारी और सब के उपयोगी ग्रन्थ निर्म्माण किये काव्यनिर्णय संस्कृत काव्य प्रकाश जोकि मम्मटा चार्य कृत है उसीका भाषान्तर विदित होता है ये सम्वत् १८२५ में मृतक हुये और १७८५ में उत्पन्न हुये थे ॥

रामनाथ प्रधान कवि॥

ये श्री अयोध्या जी के रहने वाले ब्राह्मण बड़े भजनानन्द थे कविता भी इन की बड़ी चटापटी की है इन्हों ने रामकलेवा राम होरी रहस्य और फुलवाई ये ग्रन्थ बनाये ये सम्बत् १८५६ में उत्पन्न हुये थे और सम्वत् १९२५ में वहीं मृतक हुये॥

महाराजमानसिंह कवि ॥

जिस से कि उन्हें छोटे बड़े सब मनुष्य अच्छे प्रकार जानते ही हैं इस से मैं इस छोटे ग्रन्थ में इन का वृत्तान्त नहीं लिखता ॥

अयोध्याप्रसाद वाजपेयी ॥

ये कवि ज़िले राय बरेली तहसील दिग्विजयगञ्ज ग्राम सातनपुरवा में रहते हैं संस्कृत और भाषा दोनों जानते हैं पर कविता भाषा ही की करते हैं भाषा की रचना में इन के ऐसे अनुप्रास और पद लालित्य बहुत कम कवियों के ग्रन्थों में देखे इन्हों ने साहित्य सुधासागर और राम कवित्तावली आदि कई ग्रन्थ बनाये हैं ॥

शिव प्रसन्न कवि ॥

ये ज़िले बारहबङ्की तहसील फतेपुर ग्राम रामनगर के निवासी आदि दीक्षित ब्राह्मण हैं इन के पिता का नाम रामज्यावन वैद्य और पितामह का श्याम दत्त और प्रपितामह का केशव राम पण्डित था ये संस्कृत और भाषा दोनों के कवि हैं इन्हों ने सती

चरित्र नाम एक ग्रन्थ बहुत ही उत्तम बनाया है इन की अवस्था ४४ वर्ष की है॥

श्रीपति कवि॥

ये ब्राह्मण ज़िले बहिरायच में प्रयाग पुर के रहने वाले थे इन्हों ने कई ग्रन्थ बनाये पर वे सब शृङ्गार ही रस के हैं ये बड़े प्राचीन कवि हैं अर्थात् सम्वत् १७०५ में थे॥

केशव दास जी॥

ये कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे इन के पिता का नाम काशिनाथ पितामह का गणेश दत्त और प्रपितामह का ब्रह्मदत्त था इन के वंश में पाण्डित्य का अधिकार बहुत दिन से चला आता है अब भी भजनेश नाम एक बड़े कवि उसी वंश के हैं और वे आप तो बड़े ही विद्वान् और कवि थे जब उन्हों ने कविप्रिया और रसिकप्रिया आदि शृङ्गार रस के ग्रन्थ निर्म्मित किये तब एक रात्रि में वाल्मीकि जी ने आ इन्हें स्वप्न में दर्शन दे कहा कि तुम श्री रामचन्द्र जी का यश वर्णन करो तुम्हारी बुद्धि

बढ़ेगी इन्होंने तब संवत् १९५८ में रामचन्द्रिका नाम ग्रन्थ बनाया और जब तक रहे इसी काव्य शास्त्र के विनोद में लगे रहे॥

हिमाचलराम कवि॥

ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बहिराइच भिटौली के राज्य में बड़े ग्राम के रहने वाले थे इन्होंने नाग-लीला दधिलीला आदि ग्रन्थ बनाये और संवत् १९१५ में वहीं मृतक हुये॥

रङ्गाचार कवि॥

ये पश्चिमोत्तर देश में भुड़ँगावं के रहने वाले बनियाँ थे कविता में निपुण तो न थे हां कुछ थोड़ बहुत जोड़ जाड़ लेते थे इन्होंने एक ध्रुव चरित्र ग्रन्थ बनाया जिस का नाम धुरूचरित्र रक्खा है ये संवत् १९१९ में वहीं मृतक हुये॥

प्रियादासजी॥

ये वृन्दावन के निवासी ब्राह्मण थे जिन्होंने

नाभादास जी की बनाई हुई भक्तमाल की टीका बनाई ये भी बड़े भारी कवि और वैष्णव थे॥

मीराबाई॥

ये राजपूताने के मेड़ता नगर में उत्पन्न हुईं और चित्तौर के राना को विवाही गईं ये अकबर बादशाह के समय में थीं इन का वृत्तान्त ग्रन्थ में लिख चुके हैं इससे अब नहीं लिखा जाता॥

नाभा दास कवि॥

ये दक्षिणी अन्धास ब्राह्मण थे और जब इन की ५ वर्ष की अवस्था थी तभी इन के देश में अकाल पड़ा इस हेतु इन की माता इन्हें लेकर जयपुर के बन में भाग आई ये बड़े भजनानन्द थे इस हेतु अग्रदास जी ने जोकि बड़े सिद्ध थे आकर इन के नेत्रों में जल का छिप्पा मारा आंखें खुल गईं और इनको अपना शिष्य किया इन्हों ने अपने गुरू अग्रदास की आज्ञा से भक्तमाल नाम ग्रन्थ बनाया ये भी उसी समय में थे जब कि तुलसी दास जी थे॥

दास वा दामोदर दास वा
बेगी माधव दास॥

ये कवि ज़िले गोंडा में घर्घर के निकट पसिका के रहने वाले थे और तुलसी दासजी के शिष्य थे ये बड़े रामोपासक और गुरु भक्त थे गुसाईंजी के सङ्ग ये भी फिरते थे जो२ सिद्धतायें तुलसी दास जी की इन्हों ने देखी हैं वे सब अपने गून्थ गोसाईं चरित में लिखी हैं ये संवत् १६६९ में हरि पुरवासी हुये॥

वंशीधर मिश्र कवि॥

ये कान्यकुब्ज मिश्र ब्राह्मण ज़िले हरदोई ग्राम संडीले के रहने वाले और बड़े भक्त थे जब कि ये मृतक हुये और ईश्वर प्रेरित दूत इन्हें लेजाने के निमित्त विमान ले आये और इन्हें सदा ले चले तो जो कि खैराबाद में माधा हलवाई सिद्ध था उस ने अपने यहां उसी समय कहा कि वंशीधर मिश्र विमान पर चढ़े हुये जाते हैं यह बात संवत् १६७२ की है

जानकी रास कवि॥

ये पवांर ठाकुर गोंडा के ज़िले में गुड़सड़ा ग्राम के रहने वाले थे सामान्यतः अच्छे कवि थे पर इनका बनाया बड़ा ग्रन्थ नहीं देखा गया यह वार्त्ता विदित हुई है कि संवत् १८५८ में मृतक हुये॥

मति राम कवि॥

ये कवि फतेपुर के ज़िले में अमनी ग्राम के निवासी महाकवि सार औरङ्गज़ेब बादशाह के समय में थे इन के भाई का भूषण नाम था मति राम जी ने रसराजादि ग्रन्थ बनाये और बादशाही दरबार में जन्म पर्य्यन्त रहे॥

राम सिंह देव कवि॥

ये क्षत्रिय फ़ैज़ाबाद के ज़िले में रखडाभा के रहने वाले थे स्फुट कवित्व इन के सुने गये हैं॥

गिरिजा दत्त कवि॥

ये सरयू पारीण ब्राह्मण सुकुल बैसवाड़ा के ज़िले बारहबड़ी तहसील रामसनेही ग्राम धमोली के रहने वाले हैं संवत् १९१३ में इनका जन्म हुआ इनके

दास वा दासानि दास वा
वैरागी माधव दास ॥

ये कवि ज़िले गोंडा में घर्घर के निकट पसिका के रहने वाले थे और तुलसी दासजी के शिष्य थे ये बड़े रामोपासक और गुरु भक्त थे गुसाईंजी के सङ्ग ये भी फिरते थे जो २ सिद्धतायें तुलसी दास जी को इन्हों ने देखी हैं वे सब अपने ग्रन्थ घटमाई चरित में लिखी है ये सम्वत् १६८६ में हरि पुरवासी हुये ॥

वंशीधर मिश्र कवि ॥

ये कान्यकुब्ज मिश्र ब्राह्मण ज़िले हरदोई ग्राम संडीले के रहने वाले और बड़े भक्त थे जबकि ये मृतक हुये और ईश्वर प्रेरित दूत इन्हें लेजाने के निमित्त विमान ले आये और इन्हें चढ़ा ले चले तो जोकि खैराबाद में माधा हलवाई सिद्ध था उस ने अपने यहां उसी समय कहा कि वंशीधर मिश्र विमान पर चढ़े हुये जाते हैं यह बात सम्वत् १६९७ की है

जानकी दास कवि॥

ये पवांर ठाकुर गोंडा के ज़िले में गुड़सड़ा ग्राम के रहने वाले थे साधारणतः अच्छे कवि थे पर इन का बनाया बड़ा ग्रन्थ नहीं देखा गया यह वार्त्ता विदित हुई है कि संवत् १४५६ में मृतक हुये॥

मति राम कवि॥

ये कवि फतेपुर के ज़िले में अमनी ग्राम के निवासी महा पात्र आर औरङ्गज़ेब बादशाह के समय में थे इन के भाई का भूषण नाम था मति राम जी ने रसराजादि ग्रन्थ बनाये और बादशाही दरबार में जन्म पर्य्यन्त रहे॥

राम सिंह देव कवि॥

ये क्षत्रिय फ़ैज़ाबाद के ज़िले में खड़ासा के रहने वाले थे स्फुट कवित्त इन के सुने गये हैं॥

गिरिजा दत्त कवि॥

ये सरयू पारीण ब्राह्मण सुकुल मैंभगावां के ज़िले बारह बंकी तहसील रामसनेही ग्राम धनौली के रहने वाले हैं संवत् १९१३ में इन का जन्म हुआ इन ने

पिता का नाम महेश दत्त है ये अभी विद्याध्ययन करते हैं और ईश्वर गुण वर्णन में कविता भी करते हैं ये श्री बदुमापति त्रिपाठी जी के शिष्य हैं ॥

सुन्दर कवि ॥

ये मेवाड़ देश नरैना ग्राम के निवासी दादू बेहना के शिष्य थे ये वही दादू हैं कि जिनके नाम से दादू पन्थियों का मत हुआ है ये सुन्दर जी बड़े सिद्ध हुये थे इन्हों ने सुन्दर साङ्ख्य नाम ग्रन्थ बनाया॥

नरहरि कवि ॥

ये भाटों की जाति में एक महा पात्र जाति होती है उसी जाति में उत्पन्न हुये जो कि फतेपुर के ज़िले में असनी ग्राम है वहीं के निवासी थे और अकबर बादशाह के कवि थे ये बहुत ही शीघ्र कविता करते थे सम्वत् १६६६ में ये स्वर्गी हुये॥

हरिनाथ कवि ॥

ये नरहरि कवि के पुत्र थे इन्हों ने रीवां के राजा को यही दोहा सुनाया था जोकि इस ग्रन्थ में लिखा

है इस के सुनाने पर प्रसन्न होकर राजा ने उन्हें बहुत राज मुद्रा दीं और इन्हों ने सब ब्राह्मणों को दे दीं थे अपने बाप के मरने के समय २२ वर्ष के थे और १७०३ सम्वत् में मरे॥

चन्द कवि॥

ये भाट थे और दिल्ली ही में रहते थे राजा पृथ्वी-राज के पुरोहित थे इन्हों ने पृथ्वी राज रासा नाम ग्रन्थ बनाया॥

शिव प्रसाद कवि

ये ज़िल्ले बारह बड़्की तहसील फतेपुर ग्राम राम-नगर के रहने वाले हैं इन के पिता का नाम शीतल प्रसाद अग्नि होत्री पितामह का भवानी दीन प्रपिता-मह का सेवक राम और गुरू का नाम महेश दत्त था जो कि ज़िले गोंड़ा ग्राम विश्वम्भर पुर के निवासी बड़े महात्मा मंझगवां के सुकुल थे इन्हों ने थोड़े ही दिनों से कविता करने का प्रारम्भ किया है इन की अवस्था अभी २५ वर्ष की है॥

महेशदत्त॥

मैं सरवरिया ब्राह्मण मझगवां का सुकुल ज़िले बारह बङ्की तहसील रामसने ही गोमती नदी के उत्तर कूल पै धनावली अर्थात् धनौली ग्राम का रहने वाला हूं मेरे पिता का नाम अवधराम पितामह का रजा वन्दराम प्रपितामह का विश्रामराम और गुरू का नाम श्री मदुमापति जी थाकि जो सकल शास्त्र वेत्ता पिराड़ी पुरी के निवासी कोई ४० वर्ष से श्री अयोध्या जी में निवास किये थे और इसी वर्ष अर्थात् सव्वत् १९३० भाद्रपद शुक्ल द्वितीया रवि वार को वैकुण्ठ वासी हुये हैं मैं प्रथम तो अपने मातुल पण्डित मयाराम दत्त जी जो कि धनावली ही में रहते हैं उन से तदनन्तर अपने मातामह विद्वद्वर्य क्षेम करण जी से पठन करता था तत्पश्चात् ज़िले रायबरेली तहसील दिग्विजय गञ्ज ग्राम भिखारी पुर के निकट पण्डित के पुरवा में जोकि उन्हीं श्री मद्विद्वद्वृन्द शिरोमणि पण्डित रामसेवक जी के नाम से बसा है वहां उन्हीं महाशय से जोकि व्याकरण

न्याय काव्य कोष धर्म्म शास्त्रादि के वेत्ता हैं व्याकरण काव्यालङ्कार कोश पुराणादि पढ़ता रहा और अब की जीविका प्रसिद्ध ही है कि ज़िले बारह बङ्की ग्राम राम नगर की पाठशाला का संस्कृत अध्यापक हूं मेरा जन्म सम्वत् १८८७ की आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ था॥

इति

कठिन शब्दों का कोष ॥
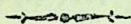
जिस्से कि हिन्दी में नपुंसक लिङ्ग नहीं होता इस
निमित्त जो शब्द संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग और
पुंल्लिङ्ग हैं उन्हें पुंल्लिङ्ग ही लिखूंगा परपुंल्लिङ्ग
के स्थान में पु० और स्त्रीलिङ्ग के स्थान
स० और संस्कृत के स्थान में सं० फारसी
के स्थान फा० और अपभ्रंश के
स्थान में अ० लिखूंगा ॥

अल्पसर० सं० पु० छोटा ताल।
अवत० सं० अवति क्रिया का अ० रक्षा करता है।
अनुमान० सं० पु० अटकर।
अनहित० सं० पु० अहित का अ० जो हित न हो।
अहि० सं० पु० सर्प्प।

आरत॰ सं॰ पु॰ आर्त्त का अ॰ दुखी।
अनल॰ सं॰ पु॰ अग्नि।
अकुण्ठ॰ स॰ सं॰ जो गोठिल न हो।
अगाधि॰ पु॰ सं॰ अगाध का अ॰ जिसकी थाह नहीं।
अशनि॰ पु॰ सं॰ वज्र।
अराति॰ पु॰ सं॰ शत्रु।
अनित्य॰ पु॰ सं॰ जो सर्व्वदा न रहे।
अजर॰ पु॰ सं॰ जिस को बुढ़ापा न हो।
अमर॰ पु॰ सं॰ जो न मरे।
अर्ज्जुन॰ पु॰ सं॰ बटोर।
अनुकूला॰ पु॰ सं॰ अनुकूल का अ॰ सहकारी।
अध्ययन॰ पु॰ सं॰ पढ़ना।
अन्तर॰ पु॰ सं॰ भीतर-बीच।
अकथ॰ पु॰ सं॰ अकथ्य का अ॰ जो कहने के योग्य नहीं
अलौकिक॰ पु॰ सं॰ लोक से बाहर।
अञ्जलि॰ पु॰ सं॰ हाथ का सम्पुट-अञ्जुरि।
अरि॰ पु॰ सं॰ शत्रु-वैरी।
अवगाह॰ पु॰ सं॰ स्नान-डुबुकी-बुड़ी मारना।

अवनीश॰पु॰सं॰ भूपाल-राजा जो पृथ्वी का मालिक हो।
अनिल॰पु॰सं॰ पवन-वायु-बयारि।
अनुशासन॰पु॰सं॰आज्ञा।
अङ्क॰पु॰सं॰अङ्क शब्द का अ॰ चिन्ह-गोद-आंक।
अवसान॰पु॰सं॰अन्त-पीछे।
अन्त॰पु॰सं॰आंत।
असिपत्र॰पु॰सं॰ तलवार से पत्ता हों जिस के।
अमरावती॰स॰सं॰ इन्द्र पुरी।
अनङ्ग॰पु॰सं॰ काम-जिस के अङ्ग न हो।
अजामिल॰पु॰सं॰एक कान्य कुब्ज देशीय ब्राह्मण का नाम
अचानक॰हि॰अकस्मात्-एकाएकी।
असगुन॰पु॰सं॰ जिसे असगुन बोलते हैं-अशुभ।
अयुत॰पु॰सं॰ दश सहस्र का नाम।
अहित॰पु॰सं॰ शत्रु-जो प्यारा न हो।
अर्क॰पु॰सं॰ सूर्य्य-मदार।
अजपा॰पु॰हि॰अजप्य-सं॰का अ॰जो जपा न जाय।
अमितन॰पु॰हि॰अमित सं॰का अ॰जिस की गिनती न हो सके।

अधोगति ० स० सं० नरक - नीचे जाना।
अलक्षित ० पु० सं० जो देख न पड़े।
अशन ० पु० सं० भोजन।
अचल ० पु० सं० पर्व्वत - पहाड़ - जो न चले।
अविद्या ० स० सं० अज्ञानता - मूर्खता।
अदूषण ० पु० सं० जिस का दूषण न हो।
अनुपम ० पु० सं० जिस की उपमा न हो सके।
अवनी ० स० सं० पृथ्वी - भूमि।
अतन ० पु० सं० अतनु - का अ० काम - बिना देह।
अवध ० पु० हि० अयोध्या - मनुष्य का नाम भी होता है।
अगर ० पु० सं० अगरु का अ० सुगन्ध काष्ठ।
अरिहा ० पु० सं० शत्रुघ्न - बैरी को मारने वाला।
अशेष ० पु० सं० सम्पूर्ण - सब।
अविकारी ० पु० सं० बिना विकार।
अक्रूर ० पु० सं० दयालु - जो कृष्ण को मथुरा ले गये उन का नाम।

अवशिष्ट ० पु० सं० शेष - बाकी।
अक्षर ० पु० सं० वर्ण - और जो च्युत न हो।

अम्भव॰ पु॰ सं॰ कुम्भज।
असपर्श॰ पु॰ सं॰ स्पर्श का अ॰ छूना।
आप॰ स॰ सं॰ पानीय-जल।
आलबाल॰ पु॰ सं॰ थाल्हा।
अमैत्र॰ पु॰ सं॰ निर्दयी।

[इ]

इन्द्र जीत॰ पु॰ सं॰ इन्द्रजित् का अ॰ रावण पुत्र का नाम।
इष्ट॰ पु॰ सं॰ वाञ्छित -पूजित।
ईहा॰ स॰ सं॰ चेष्टा-यत्न-उपाय-इच्छा।
ईश॰ पु॰ स॰ महादेव-स्वामी।

[उ]

उपल॰ पु॰ सं॰ प्रस्तर-पत्थर।
उदधि॰ पु॰ सं॰ समुद्र।
उमापति॰ पु॰ सं॰ महा देव।
उदार॰ पु॰ सं॰ दाता -दानी।
उरगारि॰ पु॰ सं॰ गरुड़ सर्पों का वैरी।
उद्यमी॰ पु॰ सं॰ उद्योगी उपायी।

उरग। पु० सं० सर्प्प - सांप।
उदासीन। पु० सं० सन्यासी - वीतरागी - उदास।
उपानह्। स० सं० पनहीं - जूता - पादत्राण।
उलूक। पु० सं० उल्लू - घुघुआ - खूसट - पक्षी।
उदर। पु० सं० जठर - पेट।
उलूखल। पु० सं० उदूखल - ओखरी।
उपस्थ। पु० सं० स्त्री वा पुरुष का चिन्ह।
उशीर। पु० सं० सुगन्धि तृण - खस खस।

[ऋ]

ऋषभ। पु० सं० श्रेष्ठ - एक योगी का नाम - वृषभ।
ऋतु। पु० सं० बसन्तादि ६ ऋतु पुष्प।
ऋद्धि। स० सं० धन - सम्पत्ति।
ऋतुराज। पु० सं० बसन्त काल
ऋतुनायक। पु० सं० बसन्त।

[ए]

एला। स० सं० इलायची।
एकाकी। पु० सं० अनन्य - अकेला - असहाय।

[क]

कृपण० पु० सं० अदत्ती-अदाता-सूम।
कर्ष० पु० सं० उत्कर्षता-उन्नमता-बल बढ़ाव।
कीश० पु० सं० वानर।
कुञ्जर० पु० सं० हस्ती-हाथी।
कृत० पु० सं० रचित-बना-किया।
कल्पतरु० पु० सं० कल्पवृक्ष-देवताओं का तरु
कन्दुक० पु० सं० गेंद-गोंद।
कपाल० पु० सं० मस्तक-मुण्ड-मूंड़-कपार।
कौतुक० पु० सं० कुतूहल-परिहास-खेल।
कटु० पु० सं० कडू-तिक्त-तीत।
कुलिश० पु० सं० वज्र।
केतु० पु० सं० नववां ग्रह-पताका।
किरीट० पु० सं० मुकुट-श्रेष्ठलोगों की टोपी।
कञ्ज० पु० सं० कमल।
कीट० पु० सं० कृमि-कीड़ा।
कल्प० पु० सं० ब्रह्मा का दिन-प्रलय।
काञ्चन० पु० सं० सुवर्ण-सोना-सोन।

कलह॰ पु॰ सं॰ कलकल-रवड़्।
कुम्भज॰ पु॰ सं॰ अगस्त्यमुनि-जो घट से उत्पन्न हो।
कल्लोल॰ पु॰ सं॰ कोलाहल-गर्जन-शब्द होना।
कुधातु॰ पु॰ सं॰ लोह।
कृशानु॰ पु॰ सं॰ अग्नि।
कृषी॰ स॰ सं॰ खेती।
कर्मनाशा॰ स॰ सं॰ एक नदी का नाम जो काशी
से पूर्व है।
कालनेमि॰ पु॰ सं॰ एक निशाचर का नाम।
कीच॰ पु॰ कर्दम-थोरा-हीला-चहला-पङ्क।
कृतज्ञ॰ पु॰ सं॰ गुणवादी-उपकार मानने वाला।
केलि॰ स॰ सं॰ खेल-क्रीड़ा-विहार।
कामातुर॰ पु॰ सं॰ कामवश-कामार्त्त-काम कर॰
के-व्याकुल।
कनककशिपु॰ पु॰ सं॰ हिरण्यकशिपु दैत्य का नाम।
किंशुक॰ पु॰ सं॰ पलाश-फूल।
कौस्तुभ॰ पु॰ सं॰ मणि।
कण्ठ॰ पु॰ सं॰ ग्रीवा-गला-गर-गरदन।

केश० पु० सं० बाल-कच-शिरोरुह।
कदम्ब० पु० सं० समूह-ढेर-वृक्षनाम
कमोरी० स० हि० मटुकी-दुग्ध-दधि-भाण्ड।
कार्म्मुक० पु० सं० धन्वा-धनुष-धनुही-कमान।
कुरुपाल० पु० सं० दुर्य्योधन-सुयोधन।
कुण्डल० पु० सं० कर्ण-भूषण-झूमका।
कदली० स० सं० रम्भा-केला।
कमठ० पु० सं० कच्छप-कछुआ।
काँजी० स० हि० एक प्रकार का मण्ड-मांड़-गञ्जी
कीर० पु० सं० शुक-तोता-सुआ।
कदर्य्य० पु० सं० कातर-कायर।
कलत्र० पु० सं० स्त्री-नारी।
कुष्ठ० पु० सं० राजरोग-कोढ़।
कन्था० स० सं० कथरी-सूजनी-सहस्रडोभ।
कुटुम्ब० पु० सं० बन्धु-परिवार
कटि० स० सं० कमर-करिहांव।
कुरङ्ग० पु० सं० मृग-हरिण-हरना।
करीश० पु० सं० हस्तियों के स्वामी।

कोशलेश॰ पु॰ सं॰ अयोध्याधिपरघुवंशी दशरथ
कलिका॰ स॰ सं॰ कली।
किराती॰ स॰ सं॰ वनेचरी-भीलिन।
कलापी॰ पु॰ सं॰ मयूर-मोर।
क्रतु॰ पु॰ सं॰ यज्ञ।
कुठार॰ पु॰ सं॰ परशु-कुल्हाड़ी-फरसा।
कालि॰ पु॰ सं॰ कालिय-एक सर्प्प जो यमुना में
रहता था।
कलङ्किनी॰ स॰ सं॰ पापिनी।
कलिधौत॰ पु॰ सं॰ सुवर्ण-सोना।

ख

खर॰ पु॰ सं॰ तीक्ष्ण-तीखा पैन-गर्दभ-गधा।
खग॰ पु॰ सं॰ सूर्य्य-पक्षी गृह नक्षत्र।

ग

गजमुख॰ पु॰ सं॰ गणेश।
गिरि॰ पु॰ सं॰ पर्व्वत।
गगन॰ पु॰ सं॰ आकाश।
गिरीश॰ पु॰ सं॰ महादेव-हिमवान्।

गिरा० स० सं० वाणी -बोली।
गजारि० पु० सं० सिंह।
गुणमय० पु० सं० सूतमय
गोईं० स० हि० छिपी।
गति० स० सं० चाल।
गरल० पु० सं० विष-माहुर
गंधाश्म० पु० सं० कसाई।
ग्रह० पु० सं० सूर्यादि ९
गर्द्दभ० पु० सं० खर-गधा। वैशाख नन्दन।
ग्राम सिंह० पु० सं० कुक्कुर-कुकुर-कूकुर-कुत्ता।
गोशाल० स० सं० गाइयों का घर-सरिया-सार।
गुरुद्वेषी० पु० सं० गुरुद्रोही-गुरुसे वैर करन हार
गृद्ध० पु० सं० गीध-पक्षी।
ग्राह० पु० सं० घड़ियाल।
गङ्गासुत० पु० सं० भीष्म पितामह।
गुप्त० पु० सं० छिपा हुआ-रक्षा किया हुआ।
गहर० पु० हि० विलम्ब-देर-अतिकाल।
गुण० पु० सं० स्वभाव-रज-सत-तम-सूत्र-डोरा।

गोमल॰ पु॰ सं॰ गोमय-गोबर।
गिरिजा॰ स॰ सं॰ पार्व्वती।
गाथा॰ स॰ सं॰ कथा-कहानी
गेही॰ पु॰ सं॰ गृही-जिस के घर हो-स्त्री हो।
गर्व्वित॰ पु॰ सं॰ अहङ्कारी-मानी।
गज़क॰ स॰ फा॰ चरबोती।
ग़िज़ा॰ स॰ फा॰ खाने की वस्तु।
गौतम॰ पु॰ सं॰ एक ऋषि का नाम जिसकी स्त्री अहिल्याथी।
गोकर्ण॰ पु॰ सं॰ एक ब्राह्मण का नाम जिस का भ्राता धुन्धुकारी था।
गुद॰ पु॰ सं॰ पायु-मलत्याग का मार्ग।
गात्र॰ पु॰ सं॰ अङ्ग।

घ

घटयोनि॰ पु॰ सं॰ अगस्त्य जिन्होंने समुद्र पीलियाथा।
घनो॰ पु॰ सं॰ घनकाश्र॰ बहुत-मेघ।
घ्राण॰ पु॰ सं॰ नासा-नाक।
घनश्याम॰ पु॰ सं॰ श्रीकृष्ण-कालाबादल।

च

चूड़ामणि ० पु ० सं ० शिखा का मणि-एक भूषण का नाम।
चटशाला ० स ० हि ० पाठशाला-मदर्सा।
चतुर्भुज ० पु ० सं ० विष्णु-जिस के चार बाहु हों।
चित्रगुप्त ० पु ० सं ० यमराज का मंत्री।
चतुरानन ० पु ० सं ० ब्रह्मा-जिस के ४ मुख हों।
चिन्ता ० स ० सं ० शोक-अंदेशा-डर।
चीर ० पु ० सं ० वस्त्र-कपड़ा।
चपला ० स ० सं ० विद्युत-बिजुरी।
चष ० पु ० हि ० चक्षु का अ ० नेत्र-नयन-आँखि।
चहूंघा ० पु ० हि ० चारों ओर।
चञ्चरीक ० पु ० सं ० भ्रमर-भवँरा।
चमू ० स ० सं ० सेना-सैन्य-फौज।
चाब ० पु ० हि ० पैशून्य-चुगली।
चित्रशाला ० स ० सं ० चित्र विचित्र गृह।
चिर ० पु ० सं ० बहुकाल।
चर ० पु ० सं ० दूत-चलने वाला-खानेवाला।
चक्षु ० पु ० सं ० नेत्र-नयन-अम्बक-आँखि-आँख।

छिद्र० पु० सं० छेद-रन्ध्र।

ज

जलधि० पु० सं० समुद्र।
जनक० पु० सं० पिता-राजाजनक।
जगदम्बा० स्त्री० सं० संसार की माता।
जरठ० पु० सं० वृद्ध-बुड्ढा।
जीहा० स्त्री० हि० जिह्वा-जीभ।
जनन० पु० सं० जन्म-उत्पत्ति।
जलज० पु० सं० कमल-जो पानी से उत्पन्न हो।
जननी० स्त्री० सं० माता-मा-महतारी।
जरापन० पु० हि० बुढाई।
जल्पि० सं० क्रिया० बकना।
जङ्गम० पु० सं० जो चल न सके।
जलद० पु० सं० मेघ-बद्दल।
जम्बुक० पु० सं० शृगाल-सियार-गीदड़।
जलधर० पु० सं० मेघ-बारिद-बद्दल।
जठर० पु० सं० उदर-पेट।

ज्ञाति॰ स॰ सं॰ जाति।

जालै॰ पु॰ सं॰ समूह-धोखा देना।

जव॰ पु॰ सं॰ वेग-शीघ्रता।

जगनाथ॰ पु॰ सं॰ जगन्नाथ का अ॰ संसार का स्वामी

झ

झष॰ पु॰ सं॰ मत्स्य-मछली।

झज्झरी॰ स॰ हि॰ कूर्ची कौड़ी।

त

तरुणाई॰ स॰ हि॰ जवानी।

तरु॰ पु॰ सं॰ वृक्ष।

त्राहि॰ सं॰ क्रि॰ रक्षा करो।

तरणी॰ स॰ सं॰ नौका-नाव

त्रास॰ पु॰ सं॰ भय-डर।

तृषित॰ पु॰ सं॰ प्यासा।

तात॰ पु॰ सं॰ पिता-प्यारा।

तरुण॰ पु॰ सं॰ युवा-ज्वान।

तरुणी॰ स॰ सं॰ युवती-ज्वानी-स्त्री।

तृषा॰ स॰ सं॰ पिपासा-लोभ॰ निकालु प्यास

तरण ० पु ० सं ० जो उत्तर सकै।
तारण ० पुं ० सं ० तारने वाला।
त्रिपुरारि ० पु ० सं ० महादेव।
तव ० सं ० तुम्हारा वा तुम्हारी।
तस्कर ० पु ० सं ० चोर।
तम ० पु ० सं ० अन्धकार-राहु-तमोगुण।
त्रिकल ० पु ० सं ० जिस में तीन मात्रा हों।
तावत ० पु ० हि ० तप्त करता है।
तरणि ० पु ० सं ० सूर्य्य।
तम्बूल ० पु ० सं ० ताम्बूल का अ ० पान।
तनुत्राण ० पु ० सं ० देह रक्षक।
ताड़का ० स ० सं ० राक्षसी-जिसे श्री राम ने मारा।
तारकनन्दन ० पु ० सं ० तारक पुत्र।
तलातल ० पु ० सं ० नीचे का लोक।
तामरे ० स ० हि ० तावर।
त्वक् ० स ० सं ० चर्म्म-खाल।
तूल ० पु ० सं ० रुई।
तुषार ० पु ० सं ० पाला।

त्रिताप ० पु० सं० दैहिक-दैविक-भौतिक ३ ताप।
तर्क ० पु० सं० न्याय।

द

दशानन ० पु० सं० रावण।
दशन ० पु० सं० दन्त-दाँत।
दिकपाल ० पु० सं० इन्द्रादि १० देव।
दारुण ० पु० सं० घोर-भयानक।
द्युति ० स० सं० दीप्ति-प्रकाश।
दीप ० पु० सं० दिया-दीपक।
दमनक ० पु० सं० एक शृगाल का नाम।
दुखप्रद पु० सं० दुःखप्रदका रू० दुःखदायी।
दुहिता ० स० सं० कन्या-पुत्री-लड़की।
द्यूत ० पु० सं० जुआ-एक प्रकार का खेल।
दूत ० पु० सं० पठवनियां-हरिकारा।
दण्डपाणि ० पु० सं० जो हाथ में दण्ड लिये हो।
दारा ० पु० सं० स्त्री-और एक प्रकार का वाद्य।
दामरी ० स० हि० रस्सी।
द्रोण ० पु० सं० द्रोणाचार्य-श्याम काक।

दुश्शासन ०पु० सं० दुश्शासन का०अ० एक मनुष्य का नाम।
दुखमोचन ०पु० सं० दुखमोचन का०अ० दुख छोड़ानेवाला।
दव ०पु० सं० बन का अग्नि-दवरहा।
दमामा ०पु० फा० नक्कारा-भेरी-दुन्दुभि।
दशोरी ० दशा २।
दीन ० पु० सं० दुखी।
देवऋषि ० पु० सं० नारद।
द्विज ० पु० सं० ब्राह्मण-पक्षी।
दम्भ ० पु० सं० दर्प्प-अहङ्कार-घमराड।
दैहिक ० पु० सं० जो देह से हो।
दारक ० पु० सं० विदारण करने वाले।
द्विप ० पु० सं० हस्ती।
दान ० पु० सं० देना-वितरण-हस्ती का मद।
दीनता ० स० सं० दुखई-अधीनता।
देवईश ० पु० सं० इन्द्र-देवराज।
दन्ती ० पु० सं० करी-हाथी।

द्विजदेव० पु० सं० महाराज मानसिंह का दूसरा नाम
दामिनी० स० सं० विद्युत-बिजुली।
दुन्दुभि० पु० सं० वाद्य-बाजा।
दुस्सह० पु० सं० असह्य-जो दुःख से सहा जाय।
दाने० पु० हि० दानव सं० का रू०
देव० पु० सं० देवता-देवदत्त कवि का दूसरा-नाम।

दहन० पु० सं० पावक-अग्नि।
दुकूल० पु० सं० वस्त्र-कपड़ा।
दराज़० पु० फ़ा० लम्बा।

ध

धनद० पु० सं० कुबेर
धाम० पु० सं० गृह-गेह-घर।
धन्वी० पु० सं० धनुर्द्धर-धनुष बाँधने वाला।
धरणी० स० सं० भूमि-पृथ्वी।
धृति० स० सं० धारण शक्ति ८ योग।
धनेश० पु० सं० कुबेर।
धूम० पु० सं० धुआं।

ध्रुव० पु० सं० निश्चय-एक राजा का नाम-पृथ्वी के दोनों सिरा।
धराधरी० पु० सं० पर्व्वत-पहाड़।
धर० पु० सं० धारण करने वाला।
धुरू० पु० सं० ध्रुवकाश०

न

नभ० पु० सं० आकाश।
निकर० पु० सं० समूह-झुण्ड
नीर० पु० सं० जल-उदक-सलिल।
निन्दक० पु० सं० निन्दा करनेवाला।
निधि० पु० सं० कुबेर का एक रत्न-सम्पत्ति-नद।
नमस्कार० पु० सं० सिर से प्रणाम करना।
नाक० पु० सं० स्वर्ग-जलजीव।
निरस० पु० सं० नीरस का क्ष० बिना रस-शुष्क।
निरामिष० पु० सं० बिना मांस।
निशा० स० सं० रात्रि।
नरचीता० पु० हिं० नर० व्याघ्र-शेर।
नासा० स० सं० नासिका-नाक-नकुना।

नरेश ० पु० सं० राजा।
निकेत ० पु० सं० गृह-सद्म-घर।
नरहरि ० पु० सं० नृसिंह-एक कविका नाम।
नन्दिघोष ० पु० सं० अर्जुनका रथ।
निषङ्ग ० पु० सं० तरकस।
निस पाप ० पु० सं० निष्पापका अ० विनापाप।
नर शिर माला ० स० सं० मनुष्यों के मुण्ड की माला
नागरिपु० पु० सं० गरुड़-पन्नगाशन।
नीड़ ० पु० सं० छतकुल-घोंसला-झोंझ।
निमित्त ० पु० सं० हेतु-प्रयोजन।
नियम ० पु० सं० इन्द्रियनिग्रह-इन्द्रियोंकोवशरखना।
नूतन ० पु० सं० नव्य-नवीन-नया-नव।
निरते ० क्रि० नाचे।
निमिवंशी ० पु० सं० जनकवंशी।
निदाघ ० पु० सं० ग्रीष्मकाल-गरमी।
नाना ० अनेक प्रकार।
नग्न ० पु० सं० नङ्गा।
निगम ० पु० सं० वेद।

नदनाथ॰पु॰सं॰समुद्र।
निषेध॰पु॰सं॰रोक-अ-मा-नो-न।

प

पावक॰पु॰सं॰अग्नि।
पवन॰पु॰सं॰वायु।
पवि॰पु॰सं॰प्रस्तर-पत्थर।
पषान॰पु॰सं॰पाषाण का अ॰प॰पत्थर।
पतङ्ग॰पु॰सं॰सूर्य्य-पाँखी।
पातक॰पु॰सं॰पाप।
पुञ्ज॰पु॰सं॰समूह-ढेर।
पुलस्त्य॰पु॰सं॰मुनि-ब्रह्मपुत्र।
पोच॰पु॰हि॰नीच-छोटा।
परशु॰पु॰सं॰फरसा-कुठार।
पीयूष॰पु॰सं॰अमृत-जिस के पीने से न मरे।
पयोधि॰पु॰सं॰समुद्र।
पोषक॰पु॰सं॰पुष्ट करने वाला।
प्रेरे॰क्रि॰पठाये।
पुत्रवती॰स्त्री॰सं॰जिसके पुत्र हो।

प०

पाथ।०पु०सं०जल।
परस्यो।०पु०हि०बसना।
प्रलय०पु०सं०ब्रह्मा का दिन-नाश।
पीन्हा०पु०हि०मोद-पीन सं०का रू०।
पिक०पु०सं०पपीहा-चातक-पक्षी।
पाणि०पु०सं०हस्त-हाथ।
पय०पु०सं०दुग्ध-जल।
पट०पु०सं०वस्त्र।
पथिक०पु०सं०राही-मुसाफिर।
पर्य्यङ्क०पु०सं०पलंग-शय्या।
परिजन०पु०सं०बन्धु।
पुरीष०पु०सं०विष्ठा-अपवित्र वस्तु।
पल०पु०सं०मांस-घड़ीका षष्ठांश।
पयोधर०पु०सं० मेघ-स्तन-चुच्चु।
पाश०पु०सं०फांसी।
पर्ण०पु०सं०पत्र-पत्ता।
पतिव्रता०स्त्री०सं०जो अपने पतिहीको देव समझे।
पत्रीहार०पु०सं०सन्देश पहुंचानेवाला-दूत।

पारिजात॰ पु॰ सं॰ कल्पवृक्ष।
प्रबोधि॰ कृ॰ क्रि॰ समझाकर।
पावस॰ पु॰ सं॰ वर्षाऋतु।
पृथु॰ पु॰ सं॰ अयोध्या के एक राजा का नाम।
प्रतिमा॰ स॰ सं॰ मूर्त्ति-पुतली।
पुरातन॰ पु॰ सं॰ पुराना-पुरनियां।
परिहार॰ पु॰ सं॰ अवज्ञा-अपमान-त्याग।
पृष्ठ॰ पु॰ सं॰ पीठ।
पिपील॰ पु॰ सं॰ च्यूँटी।
प्रिय॰ पु॰ सं॰ हित-प्यार।
पञ्चयज्ञ॰ पु॰ सं॰ वेदपाठ-हवन-अतिथि का सत्कार-तर्पण-बलिवैश्वदेव।
प्रत्यूह॰ पु॰ सं॰ उप्र-अनसहा।
पनस॰ पु॰ सं॰ कटहल।
पूषा॰ पु॰ सं॰ सूर्य्य।
पीनी॰ स॰ हि॰ मोटी।
पुरुहूत॰ पु॰ सं॰ इन्द्र।
पद्मराग॰ पु॰ सं॰ एक मणि का नाम।

पराग॰ पु॰ सं॰ धूलि।
पतिनी॰ स॰ सं॰ पत्नी का अ॰ स्त्री।
परिकर्म्म॰ स॰ परिक्रमा सं॰ का अ॰ घूमना।
पायु॰ पु॰ सं॰ गुद।
प्रकृति॰ स॰ सं॰ जिस्से सृष्टि होती है।
पुरुष॰ पु॰ सं॰ इन से और प्रकृति दोनों से सृष्टि होती है।

फ

फणी॰ पु॰ सं॰ सर्प्प।
फणीश॰ पु॰ सं॰ सर्प्पों का राजा।

ब

बीस॰ पु॰ सं॰ विंशका अ॰ इसी प्रकार त्रिंशादिके अ॰ जानिये।
बीहा॰ पु॰ हिं॰ विंश - बीस।
ब्रह्म विचार॰ पु॰ सं॰ ब्रह्म ज्ञान - ईश्वर का जानना।
बट॰ पु॰ सं॰ बरगद।
बाला॰ स॰ सं॰ स्त्री।
बनमाला॰ स॰ सं॰ तुलसी-कुन्द-मन्दार-पारि-
जात- कमल की माला।
ब्रह्मघात॰ पु॰ सं॰ ब्राह्मण को मारना।

वन॰ पु॰ सं॰ अरण्य-जल-कपास।
व्रण॰ पु॰ सं॰ घाव।
बड़वानल॰ पु॰ सं॰ अग्नि।
वेणु॰ पु॰ सं॰ वंश-बाँस।

भ

भट॰ पु॰ सं॰ योद्धा-वीर।
भीरु॰ पु॰ सं॰ कातर-डरपोंक।
भोरे॰ हि॰ भूल-भूला हुआ।
भृकुटी॰ स्त्री॰ सं॰ भ्रुकुटी-भृकुटी-भौंह।
भामिनि॰ स्त्री॰ सं॰ स्त्री-सम्बोधन।
भेषज॰ पु॰ सं॰ औषधि-इलाज।
भानी॰ हि॰ भञ्जी।
भुआरा॰ हि॰ पु॰ भूपाल-राजा।
भृत्य॰ पु॰ सं॰ दास।
भूरि॰ पु॰ सं॰ बहुत।
भृङ्ग॰ पु॰ सं॰ भ्रमर-भँवरा।
भृगुनन्द॰ पु॰ सं॰ परशुराम।
भूकम्प॰ पु॰ सं॰ भुँइडोल।

भुजङ्गम० पु० सं० सर्प्प।

म

मेरु० पु० सं० पर्व्वत।
मराल० पु० सं० हंस-पक्षी।
मृगपति० पु० सं० सिंह।
मूलक० पु० सं० मूली।
मारुत० पु० सं० पवन-वायु।
मुकुट० पु० सं० बड़े राजाओं की टोपी।
मर्कट० पु० सं० बानर।
मनुजाद० पु० सं० राक्षस-मनुष्योंके भक्षोवाला
मद्य० पु० सं० मदिरा।
मरकतमणि० पु० सं० एक प्रकारका बहु मूल्य पत्थर।
मुद० स० सं० हर्ष।
मज्जन० पु० सं० स्नान।
मरु० पु० सं० निर्ज्जल देश।
मालव० पु० सं० अन्नाधिक्य स्थानदेश।
महिदेव० पु० सं० ब्राह्मण।
मसि० स० सं० मसी-स्याही।

मोदक॰ पु॰ सं॰ लड्डू।
मृगजल॰ पु॰ सं॰ मृगतृष्णा-जो घर्म्ममें सर्व्वत्र
झल झलाती दीखती है।
मिस॰ पु॰ सं॰ मिषका अ॰ ओढ़र-बहाना।
मम॰ सं॰ हमारा वा हमारी-मेरा-मेरी।
मौनी॰ पु॰ सं॰ जो न बोले।
मनुजपति॰ पु॰ सं॰ मनुष्यों के स्वामी।
मलिन्द॰ पु॰ सं॰ भ्रमर।
मनोभव॰ पु॰ सं॰ काम।
मधुमास॰ पु॰ सं॰ चैत्र मास।
मधुपुर॰ पु॰ सं॰ मथुरा पुरी।
मल्लिका॰ स॰ सं॰ मालती-पुष्प वृक्ष।
मुहीम॰ स॰ फ़ा॰ चढ़ाई।
मैन॰ पु॰ हि॰ काम।
मृग मद॰ पु॰ सं॰ कस्तूरी।
मापति॰ पु॰ सं॰ विष्णु।
मेढ़॰ सं॰ लिङ्ग इन्द्रिय।
मदन विदारि॰ पु॰ सं॰ महादेव।

य

युवराज० पु० सं० अङ्गद-वली अहद।
युगल० पु० सं० युग्म-दो।
युवती० स० सं० स्त्री-ज्वानी।
यज्ञ० पु० सं० क्रतु-मङ्गल कार्य्य।
युग० पु० सं० दो वा चार की सङ्ख्या।
यौवन० पु० सं० ज्वान पन-जवानी।
यक्ष० पु० सं० नीच देव जाति।
योजन० पु० सं० ४ क्रोश की सङ्ख्या।
यशस्वी० पु० सं० जिस में यश हो।
योनि० स० सं० पश्वादि जाति-भग।
यूथ० पु० सं० झुराड।

र

रङ्क० पु० सं० दरिद्र।
रुद्र० पु० सं० महादेव।
रसना० स० सं० जिह्वा-जीभ।
रज० पु० सं० रजोगुण-स्त्री पुष्प-धूलि-
रण० पु० सं० सङ्ग्राम-लड़ाई।

रोष॰ पु॰ सं॰ रिसाना।
रवि नन्दिनि॰ स॰ सं॰ यमुना।
राकेश॰ पु॰ सं॰ चन्द्र-चन्द्रमा।
राजिव॰ पु॰ सं॰ राजीव का रूप॰ कमल।
राज रमणी॰ स॰ सं॰ राजाओं की स्त्रियां।
रव॰ पु॰ सं॰ शब्द।
रिपुहन्॰ पु॰ सं॰ शत्रुघ्न।
रौरव॰ पु॰ सं॰ नरक जिस में रुरु नाम कृमि रहते हैं।

ल

लघुसर॰ पु॰ सं॰ छोटा ताल।
लकि॰ स॰ सं॰ कलङ्क-पगडण्डी।
ललाट॰ पु॰ सं॰ मस्तक-माथा।
लख॰ पु॰ सं॰ लाख।
लङ्केश॰ पु॰ सं॰ लङ्का का स्वामी।
लछमन॰ पु॰ हि॰ लक्ष्मण का रूप॰।
लुनावहीं॰ हि॰ क्रि॰ कटावहीं।

व

विस्तार॰ पु॰ सं॰ फैलाव।

विधि० पु० सं० ब्रह्मा-आज्ञा।
वृष्टि० स० सं० वर्षा।
विन्दु० पु० सं० बूंद।
वलक्ष० पु० सं० शुक्ल-उज्ज्वल।
विरञ्चि० पु० सं० ब्रह्मा।
बधिर० पु० सं० बहिरा।
वैनतेय० पु० सं० गरुड़।
विपुल० पु० सं० बहुल।
विग्रह० पु० सं० कलह-लड़ाई।
विशद० पु० सं० उज्ज्वल।
वन्दनीय० पु० सं० स्तुत्य प्रणाम करने के योग्य।
वायस० पु० सं० काक।
विभूति० स० सं० ऐश्वर्य-राख-भस्म।
विश्व० पु० सं० संसार।
वञ्चक० पु० सं० छली।
वेश्या० स० सं० बारवधू।
वाम० पु० सं० शोभन-दुष्ट-टेढ़ा।
वैश्य० पु० सं० वणिक-बनिया।

वक्ष॰ पु॰ सं॰ छाती।
विशिख॰ पु॰ सं॰ बाण-तीर।
वृश्चिक॰ पु॰ सं॰ राशि-बिच्छू।
विष्ठा॰ स॰ पुरीष-मैला।
व्याज॰ पु॰ सं॰ ओढर।
वृषकेतु॰ पु॰ सं॰ महादेव।
वृन्ताक॰ पु॰ सं॰ बैंगन-भांटा।
वीथी॰ स॰ सं॰ मार्ग्ग।
वितान॰ पु॰ सं॰ मण्डप-चँदवा।
विहङ्ग॰ पु॰ सं॰ पक्षी।
वसुधा॰ स॰ सं॰ पृथ्वी।
वल्माक॰ पु॰ सं॰ वाल्मीक-एक ऋषि का भी नाम है बकपङ्क्ति।
वामदेव॰ पु॰ सं॰ महादेव-वशिष्ठ का भ्राता।
वाक॰ स॰ सं॰ वाणी-भाषा।
व्योम॰ पु॰ सं॰ आकाश।
वर्तुल॰ पु॰ सं॰ गोल।
वापि॰ स॰ सं॰ बावली।

श

शुचि० पु० सं० पवित्र-आषाढ़मास।
श्रुति० स० सं० सुनना-कर्ण-वेद।
शूल० पु० सं० त्रिशूल-उदरव्यथा।
शिल्प० पु० सं० राजा का कर्म्म।
शशी० पु० सं० चन्द्रमा।
शिशु० पु० सं० बालक-लड़का।
शायक० पु० सं० बाण-सायक।
शाखामृग० पु० सं० वानर।
शठ० पु० सं० मूर्ख।
शृगाल० पु० सं० गीदड़-सियार।
शव० पु० सं० मृतक-मरा हुआ।
शोक० पु० सं० शोच-खुटका-अन्देशाह।
शक्ति० पु० सं० बल-भगवती।
शावक० पु० सं० कुमार-बच्चा।
शमन० पु० सं० यमराज।
शाक० साग-तरकारी-खट्टा-मीठा-कड़ुआ।
शक्र० पु० सं० इन्द्र।

शुक॰ पु॰ सं॰ शुकाचार्य्य - व्यास पुत्र - तोता।
शृङ्गार॰ पु॰ सं॰ भूषणादि धारण करना १६ हैं।
श्वशुर॰ पु॰ सं॰ स्त्री वा पति का पिता।
शमनगण॰ पु॰ सं॰ यमदूत।
श्वान॰ पु॰ सं॰ कुक्कुर-कुत्ता।
शार्ङ्ग॰ स॰ सं॰ धनुष।
शर॰ पु॰ सं॰ वाण।
शीस॰ पु॰ शीर्ष सं॰ का अ॰ मुण्ड।
शैलकुमारी॰ स॰ सं॰ पार्व्वती।
शुण्ड॰ पु॰ सं॰ सूंड़।
शोन॰ पु॰ हि॰ शोणित सं॰ का अ॰ रक्त-रुधिर लोहू।
शोणित॰ पु॰ सं॰ रुधिर।
शरासन॰ पु॰ सं॰ धनुष।
शार्दूल॰ पु॰ सं॰ व्याघ्र और पक्षी।
श्रेणी॰ स॰ सं॰ पङ्क्ति-पांति।
शपथ॰ पु॰ सं॰ सौगन्द।
शिखि पक्ष॰ पु॰ सं॰ मयूर पक्ष-मोर के पर।
श्वास॰ पु॰ सं॰ सांस।

श्रोत्र० पु० सं० कर्ण-कान।

ष

षट्० सं० ६ की सङ्ख्या।
षोड़श० सं० १६ सङ्ख्या।
षड़ानन० पु० सं० षड़्मुख-६ मुख जिस के हों।

स

सचिव० पु० सं० मन्त्री-सलाही।
स्वयम्० सं० अपने आप।
सभासद० पु० सं० सभा के बैठने वाले।
सुराज्य० पु० सं० अच्छा राज्य।
सहस्रभुज० पु० सं० सहस्रबाहु-अर्जुन।
सुमन० पु० सं० पुष्प-फूल।
सरोज० पु० सं० कमल।
समर० पु० सं० सङ्ग्राम-लड़ाई।
सन्तत० सं० सर्वदा-सबदिन।
सन्निपात० पु० सं० एक प्रकार का ज्वर जो मरण समय होता है।

सेता॰ पु॰ हि॰ सेतु सं॰ का अ॰ पुल।
सुरसरि॰ स॰ सं॰ गङ्गा।
सरस्वति॰ स॰ सं॰ सरस्वती नदी।
सद्य॰ सं॰ उसी समय।
सरल॰ पु॰ सं॰ सहा-सीधा।
सुरानीक॰ पु॰ सं॰ देवताओं का समूह।
सुधा॰ स॰ सं॰ अमृत।
सुरा॰ स॰ सं॰ मदिरा-दारू।
सङ्ग्रह॰ पु॰ सं॰ बटोर।
सारी॰ स॰ हि॰ शुक स्त्री।
सुता॰ स॰ सं॰ कन्या-बेटी।
सहेट॰ हि॰ एकान्त रहने का स्थान।
स्वैरिणी॰ स॰ सं॰ जो स्त्री निजपति छोड़ अन्य में रमै।
सञ्चित॰ सं॰ पु॰ बटोरा हुआ-एकत्र किया हुआ।
स्यन्दन॰ पु॰ सं॰ रथ।
सुखपाल॰ पु॰ सं॰ पीनस।
सीम॰ पु॰ सं॰ सीमा का अ॰ डाँड़-हद।

सारथ॰ पु॰ सं॰ सारथी का॰ अ॰ रथ हांकने वाला।
स्वयम्बर॰ पु॰ सं॰ जहां कन्या अपने ही प्रसन्न
करके पति को ग्रहण करती पिताज्ञा से।
सलिल॰ पु॰ सं॰ जल।
सत्य भामा॰ स॰ सं॰ श्री कृष्णचन्द्र की पटरानी।
सुगन्धराज॰ पु॰ सं॰ कल्प वृक्ष।
समूह॰ पु॰ सं॰ निकर-झुण्ड
सूर॰ सं॰ पु॰ सूर्य्य।
सरत॰ हि॰ कि॰ चलता।
समान॰ पु॰ सं॰ अच्छा चित्र।
सपर्द्धा॰ स॰ सं॰ स्पर्द्धा का अ॰ ईर्ष्या।
सुहृद॰ पु॰ सं॰ मित्र-व्यवहारी।
सदृश॰ पु॰ सं॰ समान-बराबर।
सखा॰ पु॰ सं॰ मित्र।
सर्षप॰ पु॰ सं॰ सरसों।
सकोटी॰ हि॰ बटोर धरना।
सुखमा॰ पु॰ सं॰ सौख्य।
सङ्गर॰ पु॰ सं॰ सङ्ग्राम-लड़ाई।

समीर॰ पु॰ सं॰ वायु।

सहकार॰ पु॰ सं॰ आम्र।

ह

हरि॰ पु॰ सं॰ विष्णु-सूर्य्य-सिंह-भेक-इंद्र-सर्प्य।

हयशाला॰ स॰ सं॰ वाजिशाला-घोड़शाल।

हर॰ पु॰ सं॰ शिव।

हय॰ पु॰ सं॰ अश्व-घोड़ा।

हनु॰ पु॰ सं॰ महावीर-चौहरी।

हेठ॰ हि॰ नीचे।

हालाहल॰ पु॰ सं॰ विष।

हेलन॰ हि॰ निन्दा-हेला का-अ॰

हिंसा॰ स॰ सं॰ जीव मार डारना।

हूत॰ पु॰ सं॰ शब्द।

हाटक॰ पु॰ सं॰ सुवर्ण-सोना।

हिमन्त॰ पु॰ सं॰ ऋतु अर्थात् मार्गशीर्ष और पौष।

क्ष

क्षिति॰ स॰ सं॰ भूमि।

॰मा॰ स॰ सं॰ सहना।

क्षुभित॰ पु॰ सं॰ क्षोभयुक्त।
क्षोणी॰ स॰ सं॰ पृथ्वी।
क्षत्रजाती॰ स॰ सं॰ रक्तयुक्त।
क्षिप्र॰ पु॰ सं॰ शीघ्र।